सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 29, नई दिल्ली । बुधवार, 09 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सच्चाई और अच्छाई की तलाश में पूरी दुनिया घूम लें, अगर वह खुद के अंदर नहीं तो कहीं नहीं

03 जागो फाउंडेशन द्वारा निशुल्क सैनिटरी नैपकिन का वितरण

06 भारतीय साहित्य में समकालीन महिलाओं की आवाज़ें

08 झारखंड में राजकीय चैत्र परव शुभारंभ ,तीन शैलियों का छऊ प्रतियोगिता

जनता के उठाए वाहनों से बने अरबपति और बनवाने वाले विभाग द्वारा मांगने पर भी नहीं जमा करवा रहे निम्न दर, कौन जिम्मेदार ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली के पूर्व विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम एवम्तत्काल में कार्यरत आयुक्त के आदेश/ दिशा निर्देश पत्र के बल पर दिल्ली में परिवहन आयुक्त के प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलर बन गए जनता के उठाए वाहनों से अरबपति। जाने कैसे ? दिल्ली परिवहन आयुक्त एवम्पूर्व में कार्यरत विशेष परिवहन आयुक्त ने अपने पद के बल का दुरुपयोग करते हुए दिल्ली यातायात पुलिस, दिल्ली नगर निगम को पत्र लिख कर कहा की जिन वाहन स्क्रैप डीलरो को हम प्रवर्तन शाखा के अधिकारियों से वाहन उठवाकर सुपुर्द कर रहे है उन्हें ही आप भी अपने प्रवर्तन अधिकारियों द्वारा उठवाकर वाहन सुपुर्द करे। इसका फायदा उन वाहन स्क्रैप डीलरो को अधिक हुआ जो परिवहन आयुक्त के अति करीबी थे। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो दिल्ली यातायात पुलिस, दिल्ली नगर निगम और स्वयं परिवहन विभाग की प्रवर्तन एवम्स्क्रैप शाखा द्वारा दिल्ली की जनता के जबरदस्ती बल

पूर्वक एवम्बॉक्सर की मदद लेकर उठवाए वाहनों में से 50 प्रतिशत से भी अधिक वाहन 12 वाहन स्क्रैप डीलरो में से दो तीन वाहन स्क्रैप डीलरो को सुपुर्द किए।

विश्वस्त सूत्रों की माने तो सबसे अधिक वाहनों को प्राप्त करने वाले परिवहन आयुक्त के अति करीबी इन्हीं स्क्रैप डीलरो ने ना तो वाहन मालिकों को वाहन की भारत सरकार द्वारा आदेशित स्क्रैप निम्न दर तक नहीं दिए और ना ही तीनों (परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम और दिल्ली यातायात पुलिस) विभागों में नियमानुसार आदेशित समय में दर जमा करवाई। विश्वस्त सूत्रों की जानकारी के अनुसार यहां आपकी जानकारी हेतु बता दें जनता को गुमराह करने के लिए मात्र परिवहन विभाग द्वारा सभी 12 वाहन स्क्रैप डीलरो को ईमेल द्वारा पैसे जमा करवाने का दौर चला रखा है जब की दिल्ली यातायात पुलिस ने तो अभी तक सुपुर्द किए जनता के वाहनों की दर की बात ही नहीं उठाई और दिल्ली नगर निगम ने शायद एक बार पत्र/ ईमेल द्वारा दर जमा करवाने के लिए कहा है। अब आप ही बताए दिल्ली परिवहन आयुक्त और पूर्व में कार्यरत विशेष परिवहन आयुक्त शहजाद आलम के बदौलत जनता के पैसों को हड़पने वालो और हड़प कर अरबपति बनवाने वालो पर क्या कानूनी कार्यवाही बनती हैं या नहीं ?

डीटीसी कर्मचारियों को भाजपा से उम्मीद

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। यूनियन का कहना है कि अफसरों को पहले से ही Basic + DA मिल रहा है, ऐसे में कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को इससे वंचित रखना अन्याय है. इतने कम वेतन में न तो परिवार चलाया जा सकता है और न ही कोई भविष्य सुरक्षित हो सकता है. यूनियन ने यह भी दोहराया कि 2019 में एक बार स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू हुई थी, अब उसे फिर से शुरू किया जाए. डीटीसी कर्मचारी एकता यूनियन को भाजपा सरकार से पूरी उम्मीद है कि वह जल्द ही इन मांगों पर सकारात्मक कदम उठाएगी और कर्मचारियों को राहत देगी.

डीटीसी कर्मचारियों की प्रमुख मांगे:

Basic + DA और Grade Pay की सुविधा तत्काल प्रभाव से दी जाए: जब तक अनुबंधित चालकों, कंडक्टरों और सफाई कर्मचारियों की नौकरी पक्की नहीं हो जाती, उन्हें Basic वेतन के साथ महंगाई भत्ता और ग्रेड पे दिया जाए.

डीटीसी के बेड़े में अपनी बसें लाई जाएं: निजी ऑपरेटरों की जगह डीटीसी को अपनी बसों से सेवाएं देनी चाहिए, जिससे स्थायी रोजगार के अवसर बढ़ सकें।

हरीश सभरवाल राष्ट्रीय अध्यक्ष ए.आई.एम.टी.सी के प्रयास से राजस्थान में वाहनों की फिटनेस जांच समस्या की परेशानी से मिली मुक्ति

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। डॉ. हरीश सभरवाल पहले ऐसे योग्य और प्रतिष्ठित नेता हैं जो बस ऑपरेटर सेगमेंट से ए.आई.एम.टी.सी के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हैं उन्होंने अपने संबोधन में बयान किया कि गत 1अप्रैल से राजस्थान में वाणिज्यिक वाहनों की फिटनेस नवीनीकरण में हो रही बाधा को हल करने के लिए **टीम ए.आई.एम.टी.सी.,** 2 अप्रैल से निरंतर प्रयासरत थी। पिछले सप्ताह इस विषय को लेकर राजस्थान की **ट्रांसपोर्ट कमिश्नर श्रीमती सूचि त्यागी** व संबंधित अधिकारियों को कई बार प्रतिनिधित्व पत्रों और ईमेल्स के माध्यम से निवेदन / जागरूक किया परंतु उनके कानों में जब कोई जूं नहीं रेंगी तो हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष, ए.आई.एम.टी.सी ने

यह मुद्दा माननीय केंद्रीय मंत्री **श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी, और ट्रांसपोर्ट मिनिस्ट्री के सचिव श्री वी. उमाशंकर जी** के साथ व्यक्तिगत रूप से हुई बैठक कर, तुरंत समाधान की मांग की

फलस्वरूप, आदरणीय मंत्री जी के हस्तक्षेप से ट्रांसपोर्ट कमिश्नर द्वारा राजस्थान में तुरंत मैनुअल फिटनेस चालू करने के दिशा निर्देश जारी हुए। अतः हम अपने ट्रांसपोर्ट व टूरिज्म ट्रेड तथा अपनी बिरादरी की तरफ से केंद्रीय मंत्री श्री गजेंद्र शेखावत जी का उनके इस समस्या में सहायता व योगदान के लिए तहे दिल से धन्यवाद करते है। उनके प्रयासों द्वारा **राजस्थान राज्य में रुकी हुई फिटनेस प्रक्रिया पुनः आरंभ हो गई है।** डॉ. सभरवाल ने सभी को संस्था से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और यह कहा कि समस्याओं का समाधान केवल संगठन के ज़रिये ही संभव है। उन्होंने पुर ज़ोर अपील करी कि हमें अपने ट्रेड, विशेषकर टूरिज़्म ट्रेड को आगे बढ़ाने के लिए हमेशा एकजुट रहना होगा। टूरिज्म ट्रेड में दिल्ली व अन्य राज्यों में आने वाली सभी समस्याओं के हल का ईमानदार प्रयास डी.सी.बी.ए.(दिल्ली कॉन्ट्रैक्ट बस एसोसिएशन) के नेतृत्व में होगा, और जो भी समस्याएं पर्यटन सीजन के दौरान आती हैं, उनके समाधान हेतु डी.सी.बी.ए वचनबद्ध है ।

सड़कों पर रफ्तार भरेगी 650 नई इलेक्ट्रिक बसें, यात्रियों को नहीं करना होगा लंबा इंतजार

दिल्ली की सड़कों पर जल्द ही 650 नई इलेक्ट्रिक बसें उतरेंगी जिसमें 390 बड़ी और 280 छोटी बसें शामिल हैं। स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र न मिलने के कारण पिछले चार महीने से डीटीसी डिपो में खड़ी छोटी बसों को चलाने का हल निकल गया है। कंपनियां अब शपथ पत्र देकर बसों को सड़क पर उतार सकेंगी।

नई दिल्ली। दिल्ली की सड़कों पर जल्द 650 नई इलेक्ट्रिक बसें उतरेंगी। इसमें 390 बसें 15 मीटर वाली बड़ी बसें और 12 मीटर की 280 बसें शामिल होंगी। पिछले चार महीने से डीटीसी के डिपो में खड़ीं इन छोटी बसों को चलाने का भी भाजपा सरकार ने समाधान निकाल लिया है।

दरअसल स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र न मिल पाने के कारण इन बसों को सड़कों पर नहीं उतारा जा सका था। अब भाजपा सरकार को शपथ पत्र देकर संबंधित कंपनियां इन बसों को सड़कों पर उतार सकेंगी। दिल्ली सरकार से कंपनियों को इस बारे में बड़ी रियायत मिल गई है।सरकार के अनुसार छह महीने के अंदर कंपनियां अपना स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र जमा कर सकेंगी।

जल्द ही बसों की उतरेगी एक बड़ी खेप

परिवहन मंत्री डा पंकज सिंह कहते हैं कि दिल्ली में जल्द ही बसों की एक बड़ी खेप उतरने वाली है। उन्होंने कहा कि हम छोटी बसें भी सड़कों पर उतारने जा रहे हैं कि जिससे लोगों को लास्टमाइल कनेक्टिविटी में बढ़ावा मिल सकेगा।

उन्होंने कहा कि छोटी बसों में कुछ बसों का स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र आ गया है जिनका रह गया है उनका छह माह में कंपनियां जमा करा सकेंगी।बता दें कि दिल्ली में जिस तरह से पुरानी बसें सड़कों से हट रही है ऐसे में जनता को पर्याप्त बसें उपलब्ध कराना एक चुनौती है।

अप्रैल और मई के बीच हटेंगी कुल 476 बसें

सूत्रों की माने तो जनवरी से मार्च तक करीब 790 बसें सड़कों से हट चुकी हैं, इन बसों को चलाने के लिए उम्र पूरी हो चुकी है और इनका अब बिस्तर नहीं दिया जा सकता था। अब अप्रैल में भी 111 पुरानी बसें हटने जा रही हैं और अप्रैल व मई के बीच कुल 476 बसें हटाई जानी हैं।

इस साल जनवरी से दिसंबर तक कुल 2000 बसें सड़कों से हट जानी हैं यह एक साल में अभी तक की सबसे बड़ी संख्या है।दिल्ली में बसों की स्थिति की बात करें तो इस समय में दिल्ली में कुल बसें 7600 से घटकर 6966 रह गई हैं।

जिसमें 3147 बसें क्लस्टर योजना के तहत चल रही हैं और 3819 दिल्ली परिवहन निगम में चल रही हैं। हालांकि 1040 मिनी बसों की खरीद सरकार ने की है।इसमें से ही 280 बसें आ गई हैं और बची हुई बसें दिसंबर तक आने की उम्मीद है।

क्या है स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र

स्वदेशी अनुपालन प्रमाण पत्र (सीओसी) या अनुरूपता प्रमाण पत्र (सीओसी) एक आधिकारिक दस्तावेज़ होता है। यह प्रमाणित करता है कि कोई उत्पाद निर्दिष्ट मानकों का पालन करता है। इसे आमतौर पर निर्माता जारी करता है, लेकिन किसी तीसरे पक्ष की परीक्षण प्रयोगशाला भी इसे जारी कर सकती है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली में लागू की जा रही ईवी (इलेक्ट्रिक वाहन) नीति को तत्काल प्रभाव से रोकने हेतु मुख्यमंत्री को किया निवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एक संगठन का जिम्मेदार नागरिक होते हुए यह पत्र आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि वर्तमान में दिल्ली सरकार द्वारा जबरन लागू की जा रही ईवी नीति एकतरफा, गैर-लोकतांत्रिक एवं व्यापारिक हितों से प्रेरित प्रतीत होती है। इस नीति को प्रदूषण नियंत्रण की आड़ में लागू किया जा रहा है, जो न केवल व्यवसायिक वाहन चालकों (विशेषकर ऑटो व टैक्सी चालकों) के लिए आर्थिक और मानसिक पीड़ा का कारण बन रही है, बल्कि यह नीति एक बड़े स्तर के संभावित घोटाले की ओर भी संकेत करती है।

पृष्ठभूमि के रूप में:

1. माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 1993 में दिल्ली में सीएनजी को वैकल्पिक और पर्यावरण के अनुकूल ईंधन के रूप में मान्यता दी गई थी, जिसके चलते ऑटो और टैक्सी चालकों ने अपने वाहन पेट्रोल से सीएनजी में बदले।

2. इसके बाद BS6 मानकों के अनुरूप वाहनों को रजिस्टर किया गया, जिन्हें सरकार द्वारा प्रदूषण मुक्त माना गया।

3. अब अचानक ईवी नीति के नाम पर चालकों को बाध्य किया जा रहा है कि वे अपने चालू, वैध, प्रदूषण-मुक्त वाहनों को हटाकर भारी खर्च पर इलेक्ट्रिक वाहन खरीदें – जो अधिकांश मध्यम व निम्नवर्गीय चालक वर्ग के लिए संभव नहीं है।

हमारी माँगें:

1. ईवी नीति को तत्काल प्रभाव से रोका जाए और इसकी निष्पक्ष जांच करवाई जाए।

2. पहले से BS6 या CNG मानकों पर खरे उतर रहे वाहनों को न्यूनतम उनकी वैधता अवधि तक दिल्ली में संचालित करने की अनुमति दी जाए।

3. दिल्ली में प्रदूषण के अन्य प्रमुख स्रोतों – जैसे निर्माण कार्य, कूड़ा जलाना, उद्योगों का धुआँ – पर सख्त नियंत्रण लाया जाए।

4. व्यवसायिक चालकों पर एकतरफा नीति थोपने की बजाय, उनसे संवाद कर समाधान निकाला जाए।

5. इलेक्ट्रिक वाहन कंपनियों से कथित रूप से हो रही आर्थिक लेन-देन या लॉबिंग की जांच हो।

निष्कर्षतः, यह नीति ऐसा प्रतीत होती है जैसे चालकों को बलि का बकरा बनाकर कुछ निजी कंपनियों को लाभ पहुंचाने की योजना है। अतः माननीय मुख्यमंत्री जी से यह विनम्र निवेदन है कि इस नीति को तत्काल प्रभाव से रोका जाए एवं समुचित जन-सहभागिता के बाद ही कोई निर्णय लिया जाए।

आलोक तिवारी

माता वैष्णोदेवी की कथा

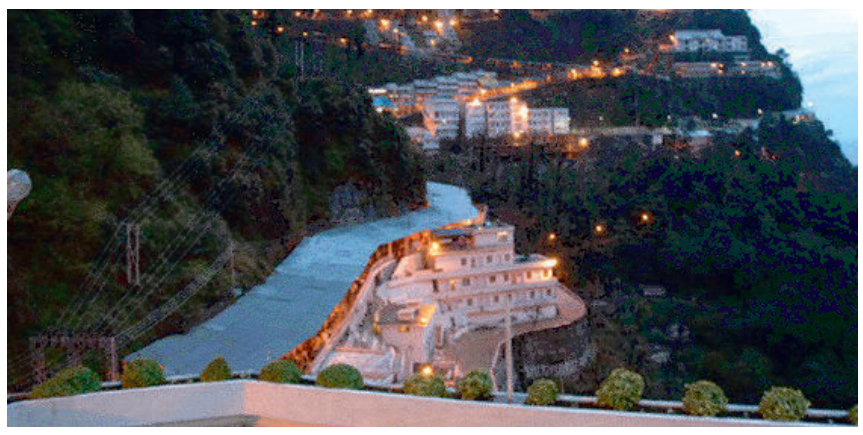

वैष्णो देवी उत्तरी भारत के सबसे पूजनीय और पवित्र स्थलों में से एक है। यह मंदिर पहाड़ पर स्थित होने के कारण अपनी भव्यता व सुंदरता के कारण भी प्रसिद्ध है। वैष्णो देवी भी ऐसे ही स्थानों में एक है जिसे माता का निवास स्थान माना जाता है। मंदिर, 5,200 फीट की ऊंचाई और कटरा से लगभग 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हर साल लाखों तीर्थ यात्री मंदिर के दर्शन करते हैं।यह भारत में तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर के बाद दूसरा सर्वाधिक देखा जाने वाला धार्मिक तीर्थस्थल है। वैसे तो माता वैष्णो देवी के सम्बन्ध में कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं लेकिन मुख्य 2 कथाएँ अधिक प्रचलित हैं।

माता वैष्णो देवी की कथा मान्यतानुसार एक बार पहाड़ों वाली माता ने अपने एक परम भक्तपंडित श्रीधर की भक्ति से प्रसन्न होकर उसकी लाज बचाई और पूरे सृष्टि को अपने अस्तित्व का प्रमाण दिया। वर्तमान कटरा कस्बे से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित हंसाली गांव में मां वैष्णवी के परम भक्त श्रीधर रहते थे। वह निःसंतान होने से दुःखी रहते थे। एक दिन उन्होंने नवरात्रि पूजन के लिए कुँवारी कन्याओं को बुलवाया। माँ वैष्णो कन्या वेश में उन्हीं के बीच आ बैठीं। पूजन के बाद सभी कन्याएं तो चली गई पर माँ वैष्णो देवी वहीं रहीं और श्रीधर से बोलीं- 'सबको अपने घर भंडारे का निमंत्रण दे आओ।' श्रीधर ने उस दिव्य कन्या की बात मान ली और आस – पास के गाँवों में भंडारे का संदेश पहुँचा दिया। वहाँ से लौटकर आते समय गुरु गोरखनाथ व उनके शिष्य बाबा भैरवनाथ जी के साथ उनके दूसरे शिष्यों को भी भोजन का निमंत्रण दिया। भोजन का निमंत्रण पाकर सभी गांववासी अचंभित थे कि वह कौन सी कन्या है जो इतने सारे लोगों को भोजन करवाना चाहती है? इसके बाद श्रीधर के घर में अनेक गांववासी आकर भोजन के लिए एकत्रित हुए। तब कन्या रुपी माँ वैष्णो देवी ने एक विचित्र पात्र से सभी को भोजन परोसना शुरू किया। भोजन परोसते हुए जब वह कन्या भैरवनाथ के पास गई। तब उसने कहा कि मैं तो खीर – पूड़ी की जगह मांस भक्षण और मदिरापान करुंगा। तब कन्या रुपी माँ ने उसे समझाया कि यह ब्राह्मण के यहां का भोजन है, इसमें मांसाहार नहीं किया जाता। किंतु भैरवनाथ ने जान – बुझकर अपनी बात पर अड़ा रहा। जब भैरवनाथ ने उस कन्या को पकडना चाहा, तब माँ ने उसके कपट को जान लिया। माँ ने वायु रूप में बदलकर त्रिकूट पर्वत की ओर उड़ चली। भैरवनाथ भी उनके पीछे गया। माना जाता है कि माँ की रक्षा के लिए पवनपुत्र हनुमान भी थे। मान्यता के अनुसार उस वक्त भी हनुमानजी माता की रक्षा के लिए उनके साथ ही थे। हनुमानजी को प्यास लगने पर माता ने उनके आग्रह पर धनुष से पहाड़ पर बाण चलाकर एक जलधारा निकाला और उस जल में अपने केश धोए। आज यह पवित्र जलधारा बाणगंगा के नाम से जानी जाती है, जिसके पवित्र जल का पान करने या इससे स्नान करने से श्रद्धालुओं की सारी थकावट और तकलीफें दूर हो जाती हैं। इस दौरान माता ने एक गुफा में प्रवेश कर नौ माह तक तपस्या की। भैरवनाथ भी उनके पीछे वहां तक आ गया। तब एक साधु ने भैरवनाथ से कहा कि तू जिसे एक कन्या समझ रहा है, वह आदिशक्ति जगदम्बा है। इसलिए उस महाशक्ति का पीछा छोड़ दे। भैरवनाथ साधु की बात नहीं मानी। तब माता गुफा की दूसरी ओर से मार्ग बनाकर बाहर निकल गईं। यह गुफा आज भी अर्धकुमारी या आदिकुमारी या गर्भजून के नाम से प्रसिद्ध है। अर्धक्वाँरी के पहले माता की चरण पादुका भी है। यह वह स्थान है, जहाँ माता ने भागते – भागते मुड़कर भैरवनाथ को देखा था। गुफा से बाहर निकल कर कन्या ने देवी का रूप धारण किया। माता ने भैरवनाथ को चेताया और वापस जाने को कहा। फिर भी वह नहीं माना। माता गुफा के भीतर चली गई। तब माता की रक्षा के लिए हनुमानजी ने गुफा के बाहर भैरव से युद्ध किया। भैरव ने फिर भी हार नहीं मानी जब वीर हनुमान निढाल होने लगे, तब माता वैष्णवी ने महाकाली का रूप लेकर भैरवनाथ का संहार कर दिया। भैरवनाथ का सिर कटकर भवन से 8 किमी दूर त्रिकूट पर्वत की भैरव घाटी में गिरा। उस स्थान को भैरोनाथ के मंदिर के नाम से जाना जाता है। जिस स्थान पर माँ वैष्णो देवी ने हठी भैरवनाथ का वध किया, वह स्थान पवित्र गुफा' अथवा 'भवन के नाम से प्रसिद्ध है। इसी स्थान पर माँ काली (दाएँ), माँ सरस्वती (मध्य) और माँ लक्ष्मी (बाएँ) पिंडी के रूप में गुफा में विराजित हैं। इन तीनों के सम्मिलत रूप को ही माँ वैष्णो देवी का रूप कहा जाता है। इन तीन भव्य पिण्डियों के साथ कुछ श्रद्धालु भक्तों एव जम्मू कश्मीर के भूतपूर्व नरेशों द्वारा स्थापित मूर्तियाँ एवं यन्त्र इत्यादी है। कहा जाता है कि अपने वध के बाद भैरवनाथ को अपनी भूल का पश्चाताप हुआ और उसने माँ से क्षमादान की भीख माँगी। माता वैष्णो देवी जानती थीं कि उन पर हमला करने के पीछे भैरव की प्रमुख मंशा मोक्ष प्राप्त करने की थी, उन्होंने न केवल भैरव को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति प्रदान की, बल्कि उसे वरदान देते हुए कहा कि मेरे दर्शन तब तक पूरे नहीं माने जाएँगे, जब तक कोई भक्त मेरे बाद तुम्हारे दर्शन नहीं करेगा। उसी मान्यता के अनुसार आज भी भक्त माता वैष्णो देवी के दर्शन करने के बाद 8 किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई चढ़कर भैरवनाथ के दर्शन करने को जाते हैं। इस बीच वैष्णो देवी ने तीन पिंड (सिर) सहित एक चट्टान का आकार ग्रहण किया और सदा के लिए ध्यानमग्न हो गईं। इस बीच पंडित श्रीधर अधीर हो गए। वे त्रिकुटा पर्वत की ओर उसी रास्ते आगे बढ़े, जो उन्होंने सपने में देखा था, अंततः वे गुफ़ा के द्वार पर पहुंचे, उन्होंने कई विधियों से 'पिंडों' की पूजा को अपनी दिनचर्या बना ली, देवी उनकी पूजा से प्रसन्न हुईं, वे उनके सामने प्रकट हुईं और उन्हें आशीर्वाद दिया। तब से, श्रीधर और उनके वंशज देवी मां वैष्णो देवी की पूजा करते आ रहे हैं।

!!जय माता दी !!

मनसा देवी की कथा एवं स्तोत्र

इनके नाम-स्मरण से सर्पभय और सर्पविष से मिलती है मुक्ति प्राचीनकाल में जब सृष्टि में नागों का भय हो गया तो उस समय नागों से रक्षा करने के लिए ब्रह्माजी ने अपने मन से एक देवी का प्राकट्य किया, मन से प्रकट होने के कारण ये 'मनसा देवी' के नाम से जानी जाती हैं, देवी मनसा दिव्य योगशक्ति से सम्पन्न होने के कारण कुमारावस्था में ही भगवान शंकर के धाम कैलास पहुंच गईं और वहां गहन तप किया, इससे प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें सामवेद का अध्ययन कराया और 'मृतसंजीवनी विद्या' प्रदान की इसीलिए देवी मनसा को 'मृतसंजीवनी' और 'ब्रह्मज्ञानयुता' कहते हैं। भगवान शंकर ने देवी मनसा को भगवान श्रीकृष्ण के अष्टाक्षर (18 अक्षर का) मन्त्र—'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णाय नमः' का भी उपदेश किया साथ ही वैष्णवी दीक्षा दी, भगवान शिव से शिक्षा प्राप्त करने के कारण ये शिव की शिष्या हुईं इसलिए ये 'शैवी' कहलाती हैं, इन्होंने भगवान शिव से सिद्धयोग प्राप्त किया था, इसलिए वे 'सिद्धयोगिनी' के नाम से भी जानी जाती हैं। इसके बाद देवी मनसा ने तीन युगों तक पुष्कर में तप करके परमात्मा श्रीकृष्ण का दर्शन प्राप्त किया, उस समय गोपीपति भगवान श्रीकृष्ण ने उनके वस्त्र और शरीर को जीर्ण देखकर उनका नाम 'जरत्कारु' रख दिया, स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने उनकी पूजा कर उन्हें संसार में पूजित होने का वर प्रदान किया, फिर देवताओं ने भी इनकी पूजा की तब से देवी मनसा की ब्रह्मलोक, स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और नागलोक में पूजा होने लगी और ये 'विश्वपूजिता' कहलाईं। देवी मनसा अत्यन्त गौरवर्ण, सुन्दरी व मनोहारिणी हैं, अतः ये 'जगद्गौरी' के नाम से भी पूजी जाती हैं, ये भगवान विष्णु की भक्ति में संलग्न रहती हैं और मन से परमब्रह्म परमात्मा का ध्यान करती हैं इसलिए 'वैष्णवी' कहलाती हैं यही कारण है कि इनकी आराधना से भगवान विष्णु की कृपा भी प्राप्त हो जाती है। भगवान श्रीकृष्ण से वर और सिद्धि प्राप्त कर ये कश्यप ऋषि के पास चली आईं, देवी मनसा कश्यप ऋषि की मानसी कन्या हैं। कश्यप ऋषि ने देवी मनसा का विवाह श्रीकृष्ण के अंशरूप महर्षि जरत्कारु के साथ कर दिया। महर्षि जरत्कारु की पत्नी होने के कारण इन्हें 'जरत्कारुप्रिया' भी कहते हैं। महर्षि जरत्कारु से इन्हें 'आस्तीक' नाम का पुत्र हुआ, वे आस्तीक मुनि की माता हैं इसलिए 'आस्तीकमाता' के नाम से प्रसिद्ध हैं। भगवान शंकर ने आस्तीक को 'मृत्युंजय विद्या' की दीक्षा दी थी।

देवी मनसा के नाम-स्मरण से सर्पभय और सर्पविष से मिलती है मुक्ति श्रृंगी मुनि ने राजा परीक्षित को शाप दिया कि 'एक सप्ताह के बीतते तक्षक सर्प उन्हें काट लेगा, शाप के अनुसार तक्षक ने राजा परीक्षित को डस भी लिया, पिता की ऐसी मृत्यु देखकर परीक्षित के पुत्र जनमेजय को सर्पों पर बड़ा क्रोध हुआ और उन्होंने नागवंश को समाप्त कर देने के लिए सर्पयज्ञ का अनुष्ठान शुरु कर दिया। ब्राह्मणों की मन्त्र शक्ति के प्रभाव से प्रत्येक आहुति पर सैंकड़ों सर्प यज्ञकुण्ड में खिंचे चले आते और भस्म हो जाते, इससे डरकर तक्षक इन्द्र की शरण में चला गया, तब ब्राह्मणों ने इन्द्र सहित तक्षक की यज्ञ में आहुति देने का विचार किया। इससे भयभीत होकर इन्द्र देवी मनसा की शरण में जाकर अपनी रक्षा की प्रार्थना करने लगे, तब देवी मनसा में अपने पुत्र आस्तीक मुनि को राजा जनमेजय के पास भेजा आस्तीक मुनि के प्रयत्न से राजा जनमेजय ने सर्पयज्ञ समाप्त करवा दिया। इस प्रकार देवी मनसा और आस्तीक मुनि के कारण नागवंश की रक्षा हुई अतः वे 'नागेश्वरी' व 'नागमाता' के नाम से भी जानी जाती हैं। तभी से नाग देवी मनसा की विशेष पूजा करने लगे और नागराज शेष ने उन्हें अपनी बहिन बना लिया इसलिए इन्हें 'नागभगिनी' कहते हैं नाग ही इनके वाहन और शय्या बन गये। देवी मनसा सर्पविष का हरण करने में समर्थ हैं इसलिए 'विषहरी' कहलाती हैं।

देवी मनसा के बारह नाम का स्तोत्र

जरत्कारु जगद्गौरी मनसा सिद्धयोगिनी।
वैष्णवी नागभगिनी शैवी नागेश्वरी तथा।।
जरत्कारुप्रिया आस्तीकमाता, विषहरीति च।
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता।।
द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले तु यः पठेत्।
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च।।
(ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड ४५।१५-१७)

स्तोत्र पाठ का फल जरत्कारु, जगद्गौरी, मनसा, सिद्धयोगिनी, वैष्णवी, नागभगिनी, शैवी, नागेश्वरी, जरत्कारुप्रिया, आस्तीकमाता, विषहरा और महाज्ञानयुता—जो मनुष्य देवी मनसा के इन बारह नामों का पाठ पूजा के समय करता है, उसे तथा उसके वंशजों को नागों/सर्पों का भय नहीं रहता। जिस भवन, घर या स्थान पर सर्प रहते हों वहां इस स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य सर्पभय से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य इस स्तोत्र को नित्य पढ़ता है उसे देखकर नाग भाग जाते हैं। दस लाख पाठ करने से यह स्तोत्र सिद्ध हो जाता है। जिस मनुष्य को यह स्तोत्र सिद्ध हो जाता है उस पर विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और वह नागों को आभूषण बनाकर धारण कर सकता है। अत्यन्त करुणा और दयामयी देवी मनसा को भक्त बहुत प्रिय हैं। आराधना करने पर वह मनुष्य को सभी प्रकार के अभ्युदय प्रदान कर देती है।

माँ तारा के अनन्य भक्त व महान तांत्रिक वामाचरण (वामाक्षेपा) का इतिहास

जानें क्या है माँ तारा और बामा खेपा का रिश्ता, क्यों प्रसिद्ध है तारापीठ ?

पश्चिम बंगाल के एक गांव में वामा चरण नाम के बालक का जन्म हुआ. बालक के जन्म के कुछ समय बाद उसके पिता का देहांत हो गया. माता भी गरीब थी . इसलिए बच्चों के पालन पोषण की समस्या आई . उन्हें मामा के पास भेज दिया गया . मामा तारापीठ के पास के गांव में रहते थे . जैसा कि आमतौर पर अनाथ बच्चों के साथ होता है . दोनों बच्चों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नहीं हुआ . धीरे-धीरे वामाचरण की रुचि साधु संगति की तरफ होने लगी. गांव के मशान में आने वाले बाबाओं की संगत में रहते हुए वामाचरण में भी देवी के प्रति रुझान बढ़ने लगा. अब वह तारा माई को बड़ी मां कहते और अपनी मां को छोटी मां। बामा चरण कभी श्मशान में जलती चिता के पास जाकर बैठ जाता, तो कभी यूं ही हवा में बातें करता रहता. ऐसे ही वह युवावस्था तक पहुंच गया. उसकी हरकतों की वजह से उसका नाम बामाचरण से वामा खेपा पड़ चुका था. खेपा का मतलब होता है पागल. यानी गांव वाले उसको आधा पागल समझते थे. उसके नाम के साथ उन्होंने पागल उपनाम जोड़ दिया था. वे यह नहीं जानते थे कि वस्तुतः कितनी उच्च कोटि का महामानव उनके साथ है.

वह भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि थी . मंगलवार का दिन था . भगवती तारा की सिद्धि का परम सिद्ध मुहूर्त . रात का समय था .

वामाखेपा जलती हुई चिता के बगल में श्मशान में बैठा हुआ था तभी ! नीले आकाश से ज्योति फूट पड़ी और चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। उसी प्रकाश में वामाचरण को माँ तारा के दर्शन हुए कमर में बाघ की खाल पहने हुए, एक हाथ में कैंची लिए, एक हाथ में खोपड़ी लिए, एक हाथ में नीले कमल का पुष्प लिए एक हाथ में खड्ग लिए हुए. महावर लगे सुंदर पैरो में पायल पहने खुले हुए कमर तक बिखरे केश से युक्त, परम ब्रह्मांड की स्वामिनी, सौंदर्य की प्रतिमूर्ति, नील वर्णी , मंद मंद मुसकाती माँ तारा, वामाखेपा के सामने खड़ी थी। वामाखेपा उस भव्य और सुंदर देवी को देखकर खुशी से भर गए. माता ने उसके सर पर हाथ फेरा और वामाखेपा वही समाधिस्थ हो गए। 3 दिन और 3 रात उसी समाधि की अवस्था में वे श्मशान में रहे . 3 दिन के बाद उन्हें होश आया और होश आते ही वह मां मां चिल्लाते हुए इधर उधर दौडने लगे . अब गांव वालों को पूरा यकीन हो गया कि बामा पूरा पागल हो गया है . बामा की यह स्थिति महीने भर रही। कुछ दिन बाद वहां की रानी जी को सपने में भगवती तारा ने दर्शन दिए और निर्देश दिया कि मसान के पास मेरे लिए मंदिर का निर्माण करो और बामा को पुजारी बनाओ. अगले दिन से मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हो गया. कुछ ही दिनों में मंदिर बनकर तैयार हो गया और बामा को मंदिर का पुजारी बना दिया गया. बामा बेहद खुश हो गए क्योंकि उनकी बड़ी मां अब उनके साथ थी। रानी के द्वारा बनाया मंदिर अर्थात मोटे चढ़ावे की संभावना. अब ऐसे मंदिर में एक आधे पागल को पुजारी बनाना बहुत से पण्डों को रास नहीं आया. वे बामाखेपा को निपटाने का मार्ग खोजते रहते थे. बामाखेपा की हरकतें अजीब अजीब हुआ करती थी . कई बार वह दिन भर पूजा करता . कई बार दो-तीन दिन तक पूजा ही नहीं करता. कभी देवी को माला पहनाता कभी खुद पहन लेता . इनमें से कोई भी क्रम पंडों के हिसाब से शास्त्रीय पूजन विधि से मैच नहीं खाता था . यह बात उनको खटक रही थी. फिर एक दिन ऐसा हुआ कि प्रसाद बना और प्रसाद बनने के बाद जब मंदिर में पहुंचा तो देवी को भोग लगाने से पहले वामा चरण के मन में विचार आया, कि इसे चख कर देख लो कि यह माता के खाने के लायक है या नहीं . बस फिर क्या था . उन्होंने प्रसाद की थाली में हाथ डाला और चखने के लिए अपने मुंह में डाल लिया . चखने के बाद जब सही लगा तो बाकी प्रसाद उन्होंने माई को अर्पित कर दिया। इतना बड़ा अवसर पंडित कहाँ छोड़ते . उन्होंने बवाल मचा दिया कि, देवी के प्रसाद को बामा ने खा लिया है . उसे जूठा कर दिया है. जूठा प्रसाद देवी को चढ़ा दिया है . अब देवी रुष्ट हो जाएगी, उसका प्रकोप सारे गांव को झेलना पड़ेगा . उसके बाद भीड़तंत्र का बोलबाला हुआ और गांव वालों ने मिलकर पंडों के साथ बामाचरण की कस कर पिटाई कर दी . उसे श्मशान में ले जाकर फेंक दिया। मंदिर पर पण्डों का कब्जा हो गया . उन्होंने शुद्धिकरण और तमाम प्रक्रियाएं की . उस दिन पूजन पण्डों के अनुसार संपन्न हुआ। उधर बामाखेपा को होश आया तो वह माई पर गुस्सा हो गया – मैंने गलत क्या किया जो तूने मुझे पिटवा दिया . तुझे देने से पहले खाना स्वादिष्ट है या नहीं देख रहा था . इसमें मेरी गलती क्या थी ? मैं तो तुम्हें स्वादिष्ट भोग लगाने का प्रयास कर रहा था और चाहता था कि तुझे अच्छे स्वाद का प्रसाद ही मिले . अगर स्वाद गड़बड़ होता तो उसे फेककर दूसरा बनवाता . लेकिन तूने बेवजह मुझे पिटवाया जा मैं अब तेरे पास नही आऊंगा। मसान घाट पर बैठकर बामाचरण ने मां को सारी बातें सुना दी और वहां से उठकर चला गया जंगल की ओर . जंगल में जाकर एक गुफा में बैठ गया . यह स्थिति बिलकुल वैसे ही थी जैसे अपनी मां से रूठ कर बच्चे किसी कोने में जाकर छुप जाते हैं . बामाचरण और तारा माई के बीच में मां और बेटे जैसा रिश्ता था . यह रिश्ता बिल्कुल वैसा ही था जैसे एक अबोध शिशु और उसकी मां की बीच में होता है। अपने शिशु की व्यथा तारा माई को सहन नहीं हुई . उसी रात रानी के स्वप्न में माई प्रकट हुई। क्रोधित माई ने रानी को फटकार लगाई – तेरे पण्डों ने मेरे पुत्र को बुरी तरह से मारा है . मैं तेरा मंदिर छोड़ कर जा रही हूं . अब तुझे और तेरे राज्य को मेरा प्रकोप सहना पड़ेगा, अगर उससे बचना चाहती है तो कल के कल मेरे पुत्र को वापस लाकर मंदिर में पूजा का भार सौंप, वरना प्रतिफल भुगतने के लिए तैयार रह। एक तो तारा माई का रूप ऐसे ही भयानक है . क्रोधित अवस्था में तो सीधी सरल माता भी काली से कम नहीं दिखाई देती . क्रोधित माई का स्वरूप व्याख्या से परे था। रानी हड़बड़ा कर पलंग पर उठ बैठी . रानी के लिए रात बिताना भी मुश्किल हो गया . उसने सारी रात जागकर बिताई। अगले दिन अपने सेवकों को दौड़ाया और मामले का पता लगाने के लिए कहा . जैसे ही पूरी जानकारी प्राप्त हुई रानी अपने लाव लश्कर के साथ मंदिर पहुंच गई . सारे पण्डों को कसकर फटकार लगाई और मंदिर में प्रवेश से प्रतिबंधित कर दिया . अपने सेवकों को आदेश दिया कि जैसे भी हो बामाखेपा को ढूंढ कर लाओ। अब सारे सेवक चारों तरफ बामाखेपा की खोज में लग गए . एक सेवक को गुफा में बैठा हुआ बामाखेपा मिल गया . बड़ी मनोव्वल के बाद भी वह नहीं माना तो सेवक ने जाकर रानी को बात बताई . अंततः रानी खुद गुफा तक पहुंची। बामा ने उन पर भी अपना गुस्सा उतारा – आप के कहने पर मैं पूजा कर रहा था और मुझे देखो इन लोगों ने कितना मारा ! उनकी बाल सुलभ सहजता को देखकर रानी का नारी हृदय भी ममत्व से भर गया . उनकी समझ में आ गया कि तारा माई का मातृत्व इस बामाखेपा के प्रति क्यों है। उन्होंने फरमान जारी कर दिया – इस मंदिर का पुजारी बामाखेपा है . उसकी जैसी मर्जी हो जैसी विधि वह करना चाहे उस प्रकार से पूजा करने के लिए वह स्वतंत्र है. कोई भी उसके मार्ग में आएगा तो दंड का भागी होगा. यह मंदिर बामाखेपा का है और तारा माई भी बामाखेपा की है. वह जिस विधान को सही समझे, उस विधान से पूजा करेगा और वही विधान यहां पर सही माना जाएगा। बामाखेपा को तो जैसे मन मांगी मुराद मिल गई . मां और बेटे का मिलन हो चुका था . मंदिर व्यवस्था फिर से बामाखेपा के हिसाब से चलने लगी। ऐसा माना जाता है कि तारा माई खुद बामाखेपा के हाथ से प्रसाद ग्रहण करती थी . ऐसे अद्भुत ढंग से बामाखेपा तारा माई के पूजन करते जिसका कोई नियम नहीं था . कभी सुबह 4 बजे पूजा चल रही है तो कभी दोपहर 12 बजे तक पूजा प्रारंभ नहीं होती . कभी रात भर पूजा चल रही है तो कभी पूरे दिन भर मंदिर की ओर बामाखेपा के दर्शन ही नहीं होते थे. उनकी पूजन विधि लोगों को पसंद नहीं थी, लेकिन उनके पास कोई उपाय नहीं था, क्योंकि रानी का फरमान था . बामाखेपा अपनी मस्ती में जीते थे और लोग उन्हें नीचा दिखाने का रास्ता खोजते। एक दिन बामाखेपा की मां का निधन हो गया . नदी में बाढ़ थी . नदी के उस पार गांव था .बामा जिद पर अड़ गए छोटी मां का दाह संस्कार बड़ी मां के पास वाले श्मशान में किया जाएगा . गांव वाले बाढ़ वाली नदी को पार करने में जान का खतरा है यह जानते थे, लेकिन बामा को समझाना किसी के बस की बात नहीं। नाव वाले से बाबा ने देह को नदी के पार पहुंचाने की बात की . नाव वाले ने साफ इंकार कर दिया . बाबा ने नाव देने के लिए कहा . नाव वाला हाथ जोड़कर बोला – "बाबा यही मेरे जीवन का सहारा है अगर बाढ़ में यह बह गया तो मैं घर कैसे चलाउँगा ?" बामा के चेहरे में रहस्यमई मुस्कान बिखर गई . जैसे उन्होंने कोई निर्णय ले लिया हो . उन्होंने अपनी माता के शव को उठाया और खुद नदी पर चलते हुए इस पार पहुंच गए . गांव वाले आंखें फाड़े उस दृश्य को देखते रह गए . बामा की इच्छा के अनुसार ही उन्होंने माई के मंदिर के पास वाले श्मशान में अपनी मां का दाह संस्कार संपन्न किया। मृत्यु भोज के लिए आसपास के सारे गांव में जितने लोग हैं, सभी को निमंत्रित करने के लिए बामाखेपा ने अपने घर के लोगों और आसपास के लोगों को कहा . सब इसे बामाखेपा का पागलपन समझकर शांत रहें . जिसके पास दो वक्त की रोटी का पता नहीं वह आसपास के 20 गांव को खाना कैसे खिलाएंगा यह उनके लिए कल्पना से भी परे की बात थी। जब कोई भी निमंत्रण देने जाने को तैयार नहीं हुआ तो बामाखेपा अकेले निकल पड़े . उन्होंने आसपास के 20 गांवों में हर किसी को मृत्यु भोज के लिए आमंत्रित कर लिया . सारे गांव वाले यह देखने के लिए तारापीठ पहुंचने लगे कि देखा जाए यह पगला किस प्रकार से इतने सारे लोगों को मृत्यु भोज कराता है। गांव वालों की आंखें उस समय फटी की फटी रह गई जब सुबह से बैल गाड़ियों में भर-भर कर अनाज सब्जी आदि तारापीठ की तरफ आने लगी . बैल गाड़ियों का पूरा एक काफिला मंदिर के पास पहुंच गया . अनाज और सब्जियों का ढेर लग गया . जो लोग आए थे उन्होंने खाना बनाना भी प्रारंभ कर दिया . दोपहर होते-होते सुस्वादु भोजन की गंध से पूरा इलाका महक रहा था। प्रकृति भी अपना परीक्षण कब छोड़ती है, आसमान में बादल छाने लगे. प्रकृति ने भी उग्र रूप धारण कर लिया. बिजली कड़कने लगी . हवाएं चलने लगी और जोरदार बारिश के आसार नजर आने लगे . बामाखेपा अपनी जगह से उठे और जिस जगह पर श्राद्ध भोज होना था, उस पूरे जगह को बांस के डंडे से एक घेरा बनाकर घेर दिया। घनघोर बारिश चालू हो गई लेकिन घेरे के अंदर एक बूंद पानी भी नहीं गिरी . गांव वाले देख सकते थे कि वे जहां बैठकर भोजन कर रहे हैं वह पूरा हिस्सा सूखा हुआ है, और उस घेरे के बाहर पानी की मोटी मोटी बूंदें बरस रही है . जमीन से जल धाराएं बह रही हैं . वह पूरा इलाका जिसमें भोज का आयोजन था ,पूरी तरह से सूखा हुआ था . 20 गांव से आए हुए सभी लोगों ने छक कर भोजन किया . हर कोई तृप्त हो गया। अब बारी थी वापस अपने अपने गांव जाने की . घनघोर बारिश को देखते हुए वापस जाने के लिए दिक्कत आएगी यह सोचकर सभी चिंतित थे। बामाखेपा ने माई के सामने अपना अनुरोध पेश किया और कुछ ही क्षणों में आसमान पूरी तरह से साफ हो गया और धूप खिल गई . सारे लोग बड़ी सहजता से अपने अपने गांव तक पहुंच गए। इस घटना के बाद बामाखेपा की अलौकिकता के बारे में लोगों को पता लगा . धीरे-धीरे लोगों की भीड़ बामाखेपा की तारा पीठ में बढ़ने लगी . कोई बीमार आता तो बामाखेपा उस पर हाथ फेर देते तो वह स्वस्थ हो जाता . निसंतानों को संतान की प्राप्ति हो जाती और सभी आगंतुकों की इच्छा और मनोकामना तारापीठ में पूरी होने लगी। बामाखेपा कभी भी बिना चखे माई को भोजन नहीं कराते थे . माई स्वयं अपने हाथ से उनको भोजन खिलाती थी और उनके हाथों से भोजन ग्रहण करती थी . ऐसे अद्भुत महामानव बामाखेपा अपने अंत समय में माई की प्रतिमा में लीन हो गए। आज भी तारापीठ में माँ तारा के भोग से पहले भक्त वामाक्षेपा का भोग लगाया जाता है।

।।जय माँ तारा ।।

वामन द्वादशी

भगवान विष्णु को समर्पित पवित्र वामन द्वादशी प्रति वर्ष 2 बार मनाई जाती है। साल 2025 में वामन द्वादशी का व्रत बुधवार 09 अप्रैल 2025 को पड़ रहा है। एक चैत्र माह की शुक्ल द्वादशी तिथि को, और दूसरी बार भाद्रपद माह में शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को। विष्णु जी के दस अवतारों में से वामन उनका पांचवां अवतार है। वामन द्वादशी का व्रत जातक के शत्रुओं का नाश करने वाला होता है। ऐसा माना जाता है कि यदि इस दिन श्रावण नक्षत्र हो, तो इस व्रत का महत्व कई गुना अधिक हो जाता है। भक्तों को इस दिन उपवास रखकर भगवान वामन की स्वर्ण प्रतिमा बनवा कर पंचोपचार करना चाहिए, और विधि-विधान से भगवान विष्णु के इस स्वरूप का पूजन करना चाहिए।

इस व्रत के फलस्वरूप श्री हरि अपने भक्तों को जीवन में संपूर्ण सुख व वैभव प्रदान करते हैं, और मरणोपरांत अपने निज धाम वैकुंठ धाम जाने का वरदान देते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस द्वादशी तिथि पर श्री हरि के वामन अवतार की पूजा करने से मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। कहा जाता है कि यदि आप प्रतिदिन भगवान वामन को अर्पित किए हुए शहद का सेवन करते हैं, तो हर प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलेगी। वामन द्वादशी पूजन व व्रत से व्यावसायिक सफलता मिलती है व पारिवारिक क्लेश दूर होता है।

वामन द्वादशी के अनुष्ठान वामन द्वादशी के पवित्र दिन पर, अनुष्ठानों को आरंभ करने का सबसे आदर्श तरीका ब्राह्मणों को दही, चावल, और भोजन दान करना है क्योंकि इसे वामन द्वादशी के दिन अत्यधिक शुभ माना जाता है। भगवान विष्णु को प्रसन्न करने के लिए, भक्त इस दिन उपवास के साथ-साथ पूजा और अन्य अनुष्ठान भी करते हैं। विष्णु सहस्रनाम और अन्य विभिन्न मंत्रों का पाठ किया जाता है। पढ़े विष्णु मंत्र भगवान विष्णु के नाम का 108 बार पाठ करते हुए, भक्त भगवान को अगरबत्ती, दीपक और फूल चढ़ाते हैं। भक्त शाम को वामन कथा सुनते हैं और फिर भगवान की आरती और भोग अर्पित करने के बाद, वे भक्तों को प्रसाद वितरित करते हैं।

वामन द्वादशी की पूजा विधि इस दिन भगवान विष्णु को उनके वामन रूप में पूजा जाता है। इस दिन उपासक को सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। नित्यक्रिया के बाद स्नान कर और फिर भगावन विष्णु का ध्यान कर दिन की शुरुआत करनी चाहिए। उसके बाद, दिन की शुरुआत में आपको वामन देव की सोने या मिट्टी से बनी हुई प्रतिमा की पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। इस दिन उपवास का भी विशेष महत्व है, इसलिए भक्त भगवान विष्णु के अवतार वामन देव को प्रसन्न करने के लिए उपवास भी रखते हैं। इस दिन पूजा करने का सबसे उत्तम समय श्रवण नक्षत्र में होता है। इस नक्षत्र में भगवान वामन देव की सोने या मिट्टी से बनी प्रतिमा के सामने बैठकर वैदिक रीति-रिवाजों से पूजा की जानी चाहिए। इस दौरान भगवान वामन देव की व्रत कथा को पढ़ना या सुनना चाहिए। कथा के समापन के बाद भगवान को भोग लगाकर प्रसाद वितरित करना चाहिए, और फिर ही उपवास खोलना लाभकारी होगा। ऐसा माना जाता है कि इस दिन चावल, दही और मिश्री का दान करने से अधिक लाभ प्राप्त होता है। इस दिन भक्त वामन देव की पूजा पूरे वैदिक विधि और मंत्रों के साथ करते हैं, तो उनके जीवन की सभी समस्याओं का निवारण हो जाता है, अर्थात भगवान वामन अपने उपासकों की हर मनोकामना पूरी करते हैं।

नेता प्रतिपक्ष आतिशी की युवाओं से की अपील: "नौकरी ढूंढने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें"

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

दिल्ल। दिल्ली विधानसभा में नेता विपक्ष और दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी ने ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के इंटरनेशनल लीडरशिप फोरम 2025 में अपने भाषण के दौरान युवाओं से अपील करते हुए कहा कि, वे सिर्फ नौकरी की तलाश न करें, बल्कि खुद एंत्रप्रेन्योर बनकर दूसरों को भी रोजगार दें।

उन्होंने उच्चशिक्षा व्यवस्था की खामियों को लेकर चिंता जताई और कहा कि, "भारत की युवा आबादी हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत बन सकती है, लेकिन अगर उन्हें सही दिशा और अवसर नहीं मिले, तो यह बेरोजगारी और अस्थिरता का कारण भी बन सकती है।"दिल्ली के बिजनेस ब्लास्टर्स प्रोग्राम का उदाहरण देते हुए आतिशी ने कहा कि, इस प्रोग्राम में स्टूडेंट्स केवल ₹2,000 के शुरुआती निवेश के ज़रिए सालाना 50,000 स्टार्टअप शुरू करते हैं। उन्होंने कहा, "अगर भारत को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनना है, तो अकेले राजनेता इसे हासिल नहीं कर सकते। हम सभी को जिम्मेदारी लेनी चाहिए।"

दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत की जनसंख्या में बड़ी संख्या में युवा होना देश के लिए या तो तरक्की का ज़रिया बन सकता है या फिर समाज में अस्थिरता ला सकता है। उन्होंने कहा, हर महीने 2035 तक 10 लाख भारतीय 18 साल के हो जाएंगे। यह जनसंख्या लाभ देश के लिए वरदान भी बन सकता है और अभिशाप भी।"

आतिशी ने समझाया, ₹अगर सही दिशा में काम किया जाए तो यह भारत की अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने का ज़रिया बन सकता है, जैसे पहले दुनिया के कई विकसित देश इसी जनसंख्या लाभ के दम पर आगे बढ़े थे।"

आतिशी ने ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से मौजूदा नौकरियों पर मंडरा रहे खतरे की ओर भी ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा कि मैकेंजी की एक स्टडी के मुताबिक, भारत को 2030 तक 9 करोड़ नई गैर-कृषि नौकरियां पैदा करनी होंगी ताकि युवा वर्ग को रोजगार मिल सके। उन्होंने सवाल उठाया, "ये नौकरियां आएंगी कहां से? क्योंकि ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के चलते हर दिन उद्योगों में नौकरियां खत्म हो रही हैं।"

उन्होंने कहा कि सिर्फ नीतियों से नहीं, बल्कि सोच में बदलाव की ज़रूरत है। उन्होंने कहा, "हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था, हमारा पूरा पारिवारिक और सामाजिक ढांचा – परिवार, पड़ोसी, रिश्तेदार – जब बच्चा स्कूल में होता है और खासकर अगर वो पढ़ाई में अच्छा होता है, तो उससे बस एक ही बात कही जाती है: एक अच्छी नौकरी पाओ। और सबसे अच्छी नौकरी मानी जाती है सरकारी नौकरी, क्योंकि वो सुरक्षित होती है।"

आतिशी ने कहा कि, यह जोखिम से डरने वाली मानसिकता भारतीयों की स्वाभाविक उद्यमिता भावना के बिल्कुल विपरीत है। उन्होंने कहा, "भारतीय हमेशा से दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में जाकर उद्यमी रहे हैं। आपने ऐसे भारतीयों को देखा होगा जिन्होंने उन देशों में, जहां उन्हें भाषा नहीं आती थी, जहां कोई आर्थिक मदद नहीं थी, और कोई जान-पहचान भी नहीं थी — वहां जाकर अपनी बिजनेस शुरू किए।"

उन्होंने कहा कि, कि इन उम्मीदों से भरे उदाहरणों के बावजूद भारतीय समाज दिन-ब-दिन जोखिम से बचने वाला बनता जा रहा है। उन्होंने कहा, "25 से 35 साल के युवा ही दुनिया में बड़े सामाजिक बदलाव और क्रांतियों के केंद्र में रहे हैं, लेकिन आज के युवा अपने ऑफिस के क्यूबिकल में सिमट गए हैं — उनका ध्यान बस प्लेसमेंट इंटरव्यू और सैलरी पर रहता है।"

शिक्षा मंत्री ने किया पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र के स्कूलों का दौरा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने आज पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र में कई सरकारी स्कूलों का दौरा किया। उन्होंने पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र के सर्वोदय कन्या विद्यालय, मयूर विहार फेस-2, पॉकेट बी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, मंडावली नंबर-1, सर्वोदय कन्या विद्यालय, मंडावली नंबर-3 और राजकीय सह शिक्षा सर्वोदय विद्यालय, वेस्ट विनोद नगर का निरीक्षण किया। निरीक्षण में उनके साथ शिक्षा निदेशक लोक निर्माण विभाग तथा अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

स्कूलों के निरीक्षण के बाद आशीष सूद ने कहा कि हम अपने विधायकों की शिकायत पर दिल्ली के स्कूलों में जहां-जहां बिल्डिंग में या फिर शिक्षा व्यवस्था में कोई भी खामी है। हम उस जगह खुद जाकर निरीक्षण कर रहे हैं। पटपड़गंज के विधायक रवींद्र सिंह नेगी ने अपने विधानसभा क्षेत्र के कई जर्जर स्कूल भवन का जिक्र किया था। जिसे देखने के लिए वह आए है।

उन्होंने कहा कि बीते कई सालों से स्कूलों के निर्माण के रूके हुए काम को लेकर वह बेहद चिंतित हैं। यहीं नहीं कई खतरनाक घोषित हो चुके स्कूलों में बच्चों का आज भी आना-जाना है।

सूद ने आगे कहा कि पटपड़गंज विधानसभा में 20 सरकारी स्कूल हैं, जिनमें से कई स्कूलों की छते आज भी पक्की नहीं हो सकी हैं। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को दी जाने वाली मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार दिल्ली के जर्जर हो चुके सभी स्कूलों की बिल्डिंग की मरमम्त या स्कूलो का पनर्निर्माण प्राथमिकता के आधार पर करने की योजना बना रही है।

अंत में सूद ने कहा कि दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में हमारी सरकार दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसके लिए दिल्ली सरकार ने शिक्षा के बजट में 19 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी कर कुल बजट 19291 करोड़ का किया है। ताकि शिक्षा बजट के पैसे से दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों की दशा एवं दिशा में सुधार कर बच्चों को मूलभूत सुविधा मुहैया करवाई जा सके। शिक्षा मंत्री ने आम आदमी पार्टी पर निशाना साधते हुए कहा कि पिछली सरकार ने दिल्ली के राउज एवेन्यू और पटपड़गंज के दो स्कूलों को चमका कर लोगों में शिक्षा क्रांति का भ्रम फैलाया। पिछली सरकार ने विज्ञापनों के माध्यम से लोगों को भ्रमित भी किया। आज दिल्ली की जनता के सामने उनकी पोल खुल रही है। अभी तो सिर्फ चार स्कूलों के निरीक्षण में ही इतनी खामियां मिली है कि जिनको सुधारने में काफी वक्त लगेगा।

ओडिशा के मुख्यमंत्री की नई दिल्ली यात्रा से महत्वपूर्ण औद्योगिक उपलब्धियां हासिल हुईं

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : ओडिशा के माननीय मुख्यमंत्री, मोहन चरण माझी की नई दिल्ली की दो दिवसीय यात्रा राज्य के औद्योगिक परिदृश्य को मजबूत करने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण परिणामों के साथ संपन्न हुई है। 7 और 8 अप्रैल, 2025 को आयोजित इस यात्रा की विशेषता रणनीतिक जुड़ाव और साझेदारी है, जिससे आर्थिक विकास में तेजी आने और ओडिशा को उद्योग के लिए विशेष रूप से पेट्रोकेमिकल और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में एक मजबूत केंद्र के रूप में स्थापित करने की उम्मीद है। एक बड़े कदम के रूप में, ओडिशा सरकार ने नई दिल्ली में प्रमुख उद्योग खिलाड़ियों के साथ कई उच्च मूल्य के समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इसका मुख्य आकर्षण ओडिशा में डुअल-फीड नेफ्था क्रैकर परियोजना की स्थापना के लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL) के साथ समझौता था, जिसमें 98,880 करोड़ रुपये का निवेश होगा। इस पहल से लगभग 67,000 नौकरियां पैदा होने और राज्य की पेट्रोकेमिकल बुनियादी ढांचे और विनिर्माण क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है। यात्रा के मुख्य आकर्षणः समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर और मेगा रोड शो। कार्यक्रम की शुरुआत ओडिशा के मुख्य सचिव मनोज आहूजा के स्वागत भाषण से हुई, इसके बाद आईओसीएल के अध्यक्ष ए एस साहनी की टिप्पणियां हुईं। रसायन क्षेत्र के पारिस्थितिकी तंत्र पर एक वीडियो और उद्योग और एमएसएमई के अतिरिक्त मुख्य सचिव हेमंत शर्मा द्वारा एक प्रस्तुति ने ओडिशा की औद्योगिक विकास रणनीति को प्रदर्शित किया। इस आयोजन का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण ओडिशा सरकार और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL) के बीच एक डुअल-फीड नेफ्था क्रैकर परियोजना की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर आधिकारिक रूप से हस्ताक्षर करना था। ये साझेदारियां भारत के पेट्रोकेमिकल परिदृश्य में ओडिशा की रणनीतिक भूमिका को मजबूत करती हैं और टिकाऊ औद्योगिक विकास, आयात प्रतिस्थापन और एक लचीली आपूर्ति श्रृंखला के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। कुल मिलाकर, 103090 करोड़ रुपये की राशि के 13 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे सभी क्षेत्रों में राज्य की क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। परियोजनाओं से लगभग 95,915 रोजगार के अवसर पैदा होने, क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने और औद्योगिक गतिविधि को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। इस कार्यक्रम को ओडिशा के उद्योग और कौशल विकास और तकनीकी शिक्षा मंत्री संपद चंद्र स्वैन ने संबोधित किया, इसके बाद केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम (जनजातीय मामले), धर्मेंद्र प्रधान (शिक्षा), और हरदीप सिंह पुरी (पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस) ने औद्योगीकरण के प्रति ओडिशा के सक्रिय दृष्टिकोण की सराहना की। उन्होंने कहा, ₹आज इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन ओडिशा की औद्योगिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण क्षण है। यह न केवल साझा दृष्टिकोण को दर्शाता है, बल्कि पूर्व से भारत की पेट्रोकेमिकल क्रांति का नेतृत्व करने की राज्य की क्षमता में एक मजबूत विश्वास को भी दर्शाता है। पारादीप, अपने रणनीतिक स्थान और विकसित हो रहे बुनियादी ढांचे के साथ, पश्चिम में दहेज की तरह एक परिवर्तनकारी औद्योगिक केंद्र बनने के लिए तैयार है। ओडिशा तैयार है, और हम आपको हमारे उज्ज्वल भविष्य में निवेश करने के लिए आमंत्रित करते हैं। यही समय है, सही समय है₹। उद्योग जगत के नेताओं के साथ जुड़ाव

इस यात्रा में नई दिल्ली के ताज पैलेस होटल में विभिन्न क्षेत्रों के उल्लेखनीय उद्योग नेताओं के साथ उत्पादक आमने-सामने की बैठकें शामिल थीं। मुख्यमंत्री माझी ने विभिन्न प्रकार की कंपनियों के प्रतिनिधियों के साथ विचार-विमर्श किया, जिनमें शामिल हैं: x किरी इंडस्ट्रीजः एक विशेष रसायन उत्पादन इकाई स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया। x हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल लिमिटेडः बालासोर में एक टायर निर्माण इकाई का जीर्णोद्धार करने की योजना बना रही है। x एसएलएमजी बेवरेजेज प्राइवेट लिमिटेडः भारत में एक प्रमुख बोतल निर्माता, ओडिशा के भीतर विनिर्माण क्षमता का विस्तार कर रही है। x चौगुले समूहः राज्य में जहाज निर्माण और मरम्मत इकाई की स्थापना की संभावना तलाश रही है। x आईनॉक्स जीएफएल ग्रुपः विशेष रूप से गुजरात फ्लोरोकेमिकल्स का अधिग्रहण करने के बाद, रासायनिक क्षेत्र में निवेश करना चाह रही है। इसके अतिरिक्त, एसोसिएशन ऑफ इंडियन मैन्युफैक्चरर्स ऑफ मेडिकल डिवाइसेस (AIMED), टॉय एसोसिएशन ऑफ इंडिया, यूनाइटेड स्टेट्स इंडिया बिजनेस काउंसिल और अन्य के साथ चर्चाओं में मेडिकल डिवाइस और परिधान सहित विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती रुचि पर प्रकाश डाला गया। आर्थिक विकास के प्रति प्रतिबद्धता यात्रा के दौरान, मुख्यमंत्री माझी ने उद्योग के नेताओं को आर्थिक विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए ओडिशा सरकार की अटूट प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया। उन्होंने बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, नियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने और उद्योग की जरूरतों के अनुरूप कौशल विकास में निवेश करने के लिए प्रशासन की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। इस यात्रा के दौरान हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापनों का प्रभाव बहुआयामी होने की उम्मीद हैः 1. रोजगार सृजनः महत्वपूर्ण निवेशों के साथ, विनिर्माण इकाइयों की स्थापना से विभिन्न क्षेत्रों में हजारों नौकरियों का सृजन होने की उम्मीद है, जिससे स्थानीय समुदायों को सीधे लाभ होगा। 2. आर्थिक विविधीकरणः पेट्रोकेमिकल्स से लेकर कपड़ा और खाद्य प्रसंस्करण तक विविध क्षेत्रों पर जोर, ओडिशा की आर्थिक लचीलापन में योगदान देगा, जिससे एक ही क्षेत्र पर निर्भरता कम होगी। 3. बुनियादी ढांचे का विकासः निवेश ओडिशा की बुनियादी ढांचा क्षमताओं को बढ़ाएगा, जिसमें परिवहन, उपयोगिताएँ और प्रौद्योगिकी प्रणालियाँ शामिल हैं, जिससे व्यावसायिक संचालन के लिए एक मजबूत वातावरण तैयार होगा। 4. कौशल विकासः उद्योग जगत के नेताओं के साथ सहयोग कौशल विकास पहलों को सुगम बनाएगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि स्थानीय कार्यबल तेजी से विकसित हो रहे उद्योगों की मांगों को पूरा करने के लिए सुसज्जित है। 5. निर्यात को बढ़ावा देनाः रसायन और वस्त्र जैसे क्षेत्रों में विनिर्माण क्षमताओं में वृद्धि ओडिशा को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय निर्यात बाजारों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करेगी। समग्र प्रभाव और भविष्य की संभावनाएँ नई दिल्ली की इस यात्रा ने पूर्वी भारत में एक बढ़ते औद्योगिक केंद्र के रूप में ओडिशा की क्षमता को सफलतापूर्वक उजागर किया है। हस्ताक्षरित समझौतों और आयोजित की गई फलदायी चर्चाओं से राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए दीर्घकालिक लाभ मिलने की उम्मीद है।

फिल्म 'जाट' का प्रमोशन करने दिल्ली पहुंचे सनी देओल, रणदीप हुड्डा और विनीत कुमार सिंह

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। सनी देओल, रणदीप हुड्डा और विनीत कुमार सिंह जैसे सितारों से सजी और बहुत जल्द सिनेमाघरों तक पहुंचने वाली फिल्म 'जाट' की कहानी एक सुदूर तटीय ग्रामीण जीवन पर आधारित है, जहां एक क्रूर अपराधी रणतुंगा स्थानीय लोगों को आतंकित और प्रताड़ित करता है। उस क्रूर अपराधी की आपराधिक प्रवृति से ग्रामीण भारी परेशानी में हैं और उसे सबक सिखने का अवसर नहीं मिलने की पीड़ा से ग्रस्त रहते हैं। अंततः उस अपराधी के काले और खूंखार कारनामों से त्रस्त होकर ग्रामीण उसे सबक सिखाने का बीड़ा उठा लेते हैं। गोपीचंद मालिनेनी लिखित और निर्देशित और माइथ्री मूवी मेकर्स और पीपल मीडिया फैक्ट्री की ओर से निर्मित इसी फिल्म का प्रमोशन करने के सिलसिले में पिछले दिनों सनी देओल, रणदीप हुड्डा और विनीत कुमार सिंह दिल्ली पहुंचे थे। नेहरू प्लेस स्थित पीवीआर आईनॉक्स सत्यम में आयोजित प्रमोशन कार्यक्रम में ये सभी कलाकार न केवल मीडिया से मुखतिब हुए, बल्कि अपनी फिल्म के बारे में जानेकारी देने के साथ मीडिया के सवालों का भी जवाब दिया। बता दें कि यह फिल्म 10 अप्रैल 2025 को रिलीज होगी।

सस्टेनेबल डेवलपमेंट का अनूठा प्रतीक पिपलांत्री गांव !

पेड़ हमारे पर्यावरण, हमारे पारिस्थितिकी तंत्र, मानव व धरती के समस्त प्राणियों, वनस्पतियों को बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पेड़ जीवन का मुख्य आधार हैं। यही कारण भी है कि हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में पेड़ों को युगों युगों से बहुत ही अहम और महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहां तक कि हमारे यहां तो पेड़ों की पूजा करने तक का प्रावधान रहा है।हिंदू धर्म में तो पीपल, बरगद, केला, और नीम जैसे पेड़ों को अत्यंत पवित्र माना गया है। हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में तो यहां तक माना जाता है कि पेड़ों में मनुष्यों के समान चेतना होती है। सच तो यह है कि भारतीय संस्कृति में पेड़ों को अपने पुत्रों से बढ़कर माना गया है। पाठकों को बताता चलूं कि भारतीय संस्कृति को अरण्य अर्थात वृक्ष की संस्कृति भी कहा जाता है। बहरहाल, आज जंगल कम हो रहे हैं। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। विकास के नाम पर, शहरीकरण और औधोगिकीकरण के नाम पर वनों का अतिक्रमण हो रहा है। हाल ही में आई केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देश के 25 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 13,056 वर्ग किमी वन क्षेत्र पर अतिक्रमण हुआ है, जो दिल्ली के कुल क्षेत्रफल से भी अधिक है, यह चिंताजनक है। जानकारी मिलती है कि मध्य प्रदेश में सबसे अधिक 5,460.9 वर्ग किमी वन भूमि पर कब्जा है, जबकि 409 वर्ग किमी भूमि अतिक्रमण मुक्त की जा चुकी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय हरित अधिकरण को सौंपी गई रिपोर्ट कहीं न कहीं देश में वनों के अतिक्रमण की भयावह स्थिति को उजागर करती है, लेकिन वहीं देश में कुछ ऐसे भी स्थान हैं,जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में देश और समाज के समक्ष एक मिसाल प्रस्तुत करते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि राजस्थान के राजसमंद ज़िले का पिपलांत्री गांव, पर्यावरण संरक्षण के साथ साथ ही लड़कियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। जानकारी के अनुसार यहां हर नवजात बेटी के जन्म पर 111 पौधे लगाए जाते हैं और इस अनोखी पहल की वजह से यह गांव हमारे देश में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में मशहूर है। गांव की खास बात यह है कि इस गांव में हर तरफ हरियाली नजर आती है तथा यह पहाड़ियों से घिरा हुआ है। बहुत कम ही लोगों को यह जानकारी होगी कि गौचर भूमि संरक्षण,जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण में इस गांव का स्थान विश्व में प्रमुखता से लिया जाता है। इस गांव में हजारों पेड़ लगाए गए हैं और यहां आप पक्षियों की चहचहाहट सुन सकते हैं। इस गांव में पेड़ों को भाई मानकर पेड़ों के राखी बांधने की परंपरा आज भी कायम है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पिपलांत्री मॉडल हमारे देश व समाज ही नहीं अपितु पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल है। वास्तव में यह बालिकाओं को बचाने और हमारे पर्यावरण व पारिस्थितिकी की रक्षा की नींव पर निर्मित यह पर्यावरण-नारीवाद मॉडल कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। राजस्थान के इस गांव की कहानी वर्ष 2005 में राजस्थान के इस गांव के सरपंच (पिपलांत्री गांव के पूर्व सरपंच/पंचायत प्रमुख) श्री श्याम सुंदर पालीवाल के साथ शुरू हुई। उन्होंने बालिकाओं को बचाने,जल संरक्षण करने तथा पेड़ लगाने का बीड़ा उठाया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार वर्ष 2000 से पहले, पिपलांत्री गांव में

संगमरमर की खदानों और खदानों की भरमार थी, जैसा कि राजसमंद इनके लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां पानी का स्तर 700- 800 फीट तक नीचे चला गया था और पीने तक के लिए पानी नहीं बचा था। गांव में सामान्य बुनियादी ढांचे(बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर) जैसे कि सड़क, सिंचाई और कृषि का अभाव था। श्री पालीवाल को वर्ष 2007 में निर्जलीकरण (डिहाइड्रेशन) के कारण अपनी 17 वर्षीय बेटी किरण की मृत्यु का सामना करना पड़ा। इससे पिपलांत्री को बदलने का उनका जुनून और बढ़ गया। अपनी बेटी किरण की मृत्यु के बाद, उन्होंने अपनी बेटी किरण की याद में पहला पेड़ लगाया। इससे पिपलांत्री गांव में क्रांति का विचार आया। पालीवाल इस बात से वाकिफ थे कि किस प्रकार से एक लड़की को जन्म से पहले ही मार दिया जाता था, श्री पालीवाल ने बेटी जन्म पर एक पेड़ लगाने के विचार को बढ़ाकर 111 पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा, इससे एक

सामाजिक बदलाव की शुरुआत हुई। उनकी इस पहल के कारण अब तक 3 लाख से अधिक पेड़ लगाए गए हैं और 700-800 फीट से नीचे का जल स्तर मात्र 5 वर्षों में 15 फीट ऊपर उठ गया है। इतना ही नहीं,पेड़ों को दीमक से बचाने और फलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उनके चारों ओर 2.5 मिलियन से अधिक एलोवेरा के पौधे भी लगाए गए हैं। एलोवेरा उत्पादों से आर्थिक बदलाव भी आएं हैं, लोगों को रोजगार मिला है। पाठकों को बताता चलूं कि गांव में 'किरण निधि' योजना की शुरुआत की गई, जिसमें पंचायत द्वारा बालिका के नाम पर बैंक खाता खोला जाता था और उसमें 21,000 रुपये की शुरुआती राशि जमा की जाती थी। माता-पिता (जो शेष 11000 रुपये का योगदान करते हैं) को एक हलफनामे पर हस्ताक्षर करना होता है, जिसमें वादा किया जाता है कि वे कन्या भ्रूण हत्या नहीं करेंगे या अपनी बेटी की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले नहीं करेंगे, और वे उसे शिक्षित करेंगे। इससे यह सुनिश्चित होता है कि कोई भी बालिका शिक्षा से वंचित न रहे और उसके पास अपने भविष्य के लिए पर्याप्त धन हो। इतना ही नहीं, श्री पालीवाल ने खदान प्रबंधन का मुद्दा अपने हाथों में ले लिया, क्यों कि मार्बल का फेंका गया कचरा एक बड़ी समस्या के रूप में उभर रहा था और इससे गांव की जमीनें बंजर हो रहीं थीं।श्री पालीवाल को निर्मल ग्राम पंचायत पुरस्कार मिला और पुरस्कार स्वरूप 5 लाख रुपए मिले। श्री पालीवाल के कारण आज पिपलांत्री अपने प्राकृतिक संसाधनों पर एक आत्मनिर्भर और समृद्ध गांव है। इतना ही नहीं, महिला व्यवसाय और शिक्षा के विकास से बालिका सशक्तीकरण का मुख्य लक्ष्य पूरा हुआ है। वन्य जीवन में वृद्धि देखी गई है, जल संरक्षण हुआ है और गांव के लोग समृद्ध और खुशहाल हैं। श्री पालीवाल की उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें वर्ष 2021 में प्रतिष्ठित पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि बेटी के जन्म को इस गांव में एक बड़े उत्सव के रूप में मनाया जाता है। आज भी बेटी के जन्म पर यहां 111 पौधे लगाने की परंपरा जारी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि राजस्थान के राजसमंद जिले का यह गांव लैंगिक समानता और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सामुदायिक भागीदारी का एक अनोखा, नायाब व खूबसूरत मॉडल प्रस्तुत कर रहा है।सच तो यह है कि इस गांव की यह परंपरा महज एक रस्म नहीं, बल्कि आज एक सामाजिक आंदोलन बन चुकी है, जो समाज की मानसिकता को बदलने का कार्य कर रही है। गांव में हर नवजात बेटी के जन्म के साथ 111 पौधे लगाए जाते हैं, जो यह दर्शाता है कि यदि संकल्प सच्चा हो, तो इस दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। वास्तव में, गांव की यह अनूठी प्रथा न सिर्फ़ जीवन के उत्सव का प्रतीक है बल्कि पर्यावरण और लड़कियों दोनों के पोषण और सुरक्षा की शपथ भी है। आज पौधारोपण के संकल्प से पूरे गांव की बयार बदल चुकी है। हर तरफ हरितिमा का आवरण आज नजर आता है। आज गांव में नीम, शीशम, आम और आंवला समेत अनेक प्रजातियां विद्यमान हैं।जल संरक्षण, वनस्पतियों का संरक्षण और साथ ही बेटियों की रक्षा का अनूठा संगम इसी गांव में देखने को मिलता है। मुहिम का असर इस कदर हुआ है कि आज बेटियों को बोझ नहीं, बल्कि गौरव का प्रतीक माना जाने लगा है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि पिपलांत्री का यह मॉडल लैंगिक समानता, जलवायु अनुकूलन, जैव-विविधता और टिकाऊ विकास(सस्टेनेबल डेवलपमेंट) का अनूठा प्रतीक बन चुका है। वास्तव में, पर्यावरण संरक्षण और लैंगिक समानता के प्रति गांव के ऐसे समग्र दृष्टिकोण ने गांव को सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक प्रगति के प्रतीक में बदल दिया है। अंत में, यही कहूंगा कि राजस्थान के राजसमंद के पिपलांत्री की यह कहानी महिला सशक्तीकरण, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जमीनी पहल को दिखाती है। हमें यह चाहिए कि हम राजसमंद के इस गांव से प्रेरणा लें और अपनी युवा पीढ़ी को इसके बारे में जानकारी दें ताकि वे पर्यावरण संरक्षण के साथ ही जल संरक्षण और बेटियों की सुरक्षा व संरक्षण के प्रति कृतसंकल्पित हों सकें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

विदेशी नाम, देसी छल — डॉक्टरी का तमाशा चालू है

[नकली डॉक्टर, असली बिल : मौत भी प्रीमियम पैकेज में]

देश में अब डॉक्टर बनने का ऐसा तड़क-भड़क वाला शॉर्टकट निकल आया है कि मेडिकल कॉलेज वाले अपनी डिग्रियां कागज़ के हवाई जहाज़ बनाकर उड़ा दें। न एमबीबीएस की घिसाई, न किताबों की किल्लत, न इंटर्नशिप का पचड़ा। बस एक चमकदार विदेशी नाम उठाइए—जैसे ₹डॉ. रॉबर्ट डाउनी जूनियर फ्रॉम न्यूयॉर्क₹—और स्टेथोस्कोप को गले का मंगलसूत्र बना लीजिए। चश्मा नाक पर थोड़ा सा खिसकाइए, बालों में विदेशी स्टाइल की हवा भरिए, और चेहरे पर ऐसी गंभीरता चढ़ाइए कि लगे कोई हॉलीवुड स्टार मरीजों का इलाज करने उतर आया है। फिर किसी अस्पताल में दनदनाते हुए घुस जाइए—ऑपरेशन थिएटर के दरवाज़े ऐसे खुलेंगे जैसे कोई ग्रैंड फिल्म प्रीमियर शुरू हो रहा हो। डिग्री न सही, धांसू एंट्री तो बनती है!

दमोह के इस 'सुपरस्टार' (फर्जी नाम - डॉ. एन जॉन कैम, असली नाम - नरेंद्र विक्रमादित्य यादव) ने तो इस खेल को साइंस से आगे बढ़ाकर सुपरहिट स्क्रिप्ट बना डाली। ब्रिटेन के बड़े डॉक्टर (डॉ. एन जॉन कैम) का नाम उधार लिया, और फिर दिल के मरीजों पर ऐसा हाथ फेरा जैसे कोई जादूगर टोपी से खरगोश निकाल रहा हो। सात लोग ऊपर तशरीफ ले गए—अरे, इसमें कौन-सी आफत आ गई? दिल तो बस 'दिल लेके देखो' गाने के लिए बना है, सर्जरी का क्या काम। और वैसे भी, भारत में तो भावनाएं ही सबसे बड़ा ऑपरेशन टूल हैं—कागज़ी डिग्रियों का क्या मोल? मरीजों के घरवाले भी शायद सोचते होंगे, ₹विदेशी नाम है, सात मरे तो क्या, कम से कम क्लास के साथ तो गए!"

सोचिए तो ज़रा, बिना डिग्री के, बिना ट्रेनिंग के, कोई शख्स सर्जन की चौखट पर इतने दिन तक कैसे शान से डटा रहा और रंग जमाता रहा? ये भारत है—यहां 'जुगाड़' का ऐसा चमत्कार है कि हर पहेली सुलझ जाए और 'भरोसे' का ऐसा तमाशा है कि हर सवाल धुआं बनकर उड़ जाए। हमारा सिस्टम तो कमाल का है—शक करना तो मानो वक्त की बर्बादी और आंख मूंदकर यकीन करना सबसे बड़ा टैलेंट। कोई जोर से चिल्लाया, ₹मैं ऑक्सफोर्ड से हूं,₹ तो बस, सबके होश उड़े, दिल धक-धक, और हाथ झट से सलामी में—अरे वाह, ये तो शायद प्रिंस चार्ल्स का पुराना रूममेट होगा, या फिर बकिंघम पैलेस का स्टार, जल्दी से स्कैल्पल पकड़ाओ! डिग्री मांगने का साहस कौन करे—यहां तो एक्सेंट की चमक ही वीज़ा है, बाकी सब कागज़ी झंझट हवा में घोल दो!

अस्पताल प्रशासन की तो बात ही बेकार और मज़ेदार है। ये लोग तो ऐसे ढीले पड़े थे जैसे आंखों पर धूप का चश्मा चढ़ाकर, कानों में कॉटन बॉल्स ठूंसकर, और दिमाग को मालदीव की रेत पर सैर कराने भेजकर इस 'मेडिकल ब्लॉकबस्टर' का टिकट काट रहे हों। या शायद सपने देख रहे होंगे कि ये 'फॉरेन का फंडा' उनकी बुझी हुई किस्मत का चमकता सितारा बनकर टपक पड़ा है। कागज़ चेक करना? अरे, वो तो नानी-दादी के ज़माने का बासी डायलॉग है। अब तो बस ₹हाय, हाउ आर यू₹ की मखमली चाशनी टपकी, और ऑपरेशन थिएटर का गेट रैंप वॉक के लिए खुल गया। स्वास्थ्य विभाग भी इस 'ग्लोबल तड़के वाली सस्पेंस फिल्म' का दीवाना बनकर कोने में दुबका रहा—शायद कोल्ड ड्रिंक सिप करते हुए ठहाके लगा रहा था, ₹अरे यार, ये तो मज़ा आ गया, अब अगला ट्विस्ट क्या लाएगा?"

जिन बेचारों को लगता था कि डॉक्टरी में सालों की मेहनत और डिग्री का दम चाहिए, वो अब अपने डिप्रेशन का इलाज ढूंढ रहे होंगे। जब कोई बिना पढ़े-लिखे हार्ट सर्जन बन सकता है, तो आप भी हौसला रखिए। दो-चार नकली सर्टिफिकेट्स छपवाइए—लोकल प्रिंटर से सौ रुपये में सेट हो जाएंगे—और किसी का किडनी, लीवर, या जो जी में आए, निकाल डालिए। मार्केट खुला है, मौका ताज़ा है, बस थोड़ा साहस और एक धमाकेदार नाम चाहिए। ₹डॉ. जॉनी डेप फ्रॉम कैलिफोर्निया₹ भी चलेगा—कौन क्रॉस-चेक करने वाला है?

मज़े की बात ये कि इस 'डॉक्टर साहब' ने मरने वालों के घरवालों से मोटा बिल भी ठोक दिया। यानी इलाज का रिज़ल्ट चाहे जो हो—मरीज स्वर्ग जाए या सीधे सैर पर—पेमेंट तो फुल एडवांस। ये तो ऐसा बिज़नेस मॉडल है कि एमबीए वाले भी नोट्स लेने लगें। असली डॉक्टरों को इनसे टिप्स लेने चाहिए—'सर्विस का वादा नहीं, पैसे का ठाठ ज़रूर!' और पुलिस को खबर? अरे, वो तो इस फिल्म की 'स्पेशल अपीयरेंस' है—जब सारा खेल खत्म हो जाए, तब आएगी, दो-चार फोटो खिंचवाएगी, और ₹केस सॉल्व्ड₹ का ढोल पीट देगी।

अस्पताल वालों को तो पता ही नहीं कि उनके ऑपरेशन थिएटर में क्या तमाशा चल रहा था। कौन घुसा, किसने किसका दिल फाड़ा, कौन ज़िंदा निकला, और कौन ₹टाटा-बाय-बाय₹ बोल गया—ये सब तो किसी सुपरहिट मसाला फिल्म से कम नहीं। सवाल ये नहीं कि मरीज क्यों मरे, सवाल ये है कि क्या अस्पताल में कोई 'डॉक्टर डिटेक्टर' भी है, या सब ₹जो दिखे, वो सही₹ के फॉर्मूले पर चल रहा है? ये तो ऐसा 'ग्रैंड हार्ट सर्जरी शो' था कि दर्शक समझ ही नहीं पाए कि तालियां बजाएं या मातम मनाएं।

अब सरकार ने जांच का ढोल पीटना शुरू कर दिया है। वही पुराना स्क्रिप्ट—एक मोटी फाइल बनेगी, टेबल पर धूल की परत चढ़ेगी, दो-चार अफसरों का तबादला होगा, और फिर सब ₹हुआ तो हुआ₹ में सिमट जाएगा। अगली बार जब कोई ₹डॉ. टॉम हिडलस्टन फ्रॉम लंदन₹ आएगा, तो उसे ढोल-नगाड़ों के साथ ऑपरेशन थिएटर का माइक थमा दिया जाएगा। क्योंकि हमारा सिस्टम तो नकली को असली बनाने का ग्रैंडमास्टर है।

असली मज़ाक ये नहीं कि कोई नकली डॉक्टर बन गया। मज़ाक ये है कि पूरा सिस्टम अपनी 'ईमानदारी' का ढोल पीटता रहा। सात लोग मरे, और किसी को शक तक न हुआ—क्योंकि यहां शक करना पुराना फैशन है, और आंख मूंदकर यकीन करना नया ट्रेंड। हमें अब डॉक्टर नहीं, ऐसे सुपरस्टार चाहिए जो स्टाइल से ऑपरेशन करें, भले ही मरीज ऑपरेशन थिएटर से सीधे ₹ऊपर की ओपीडी₹ में पहुंच जाए। ये देश अब डिग्रियों से नहीं, ड्रामे और दम से चलता है।

तो अगली बार जब अस्पताल जाएं, तो डॉक्टर से ये सवाल ज़रूर करें—₹सर, आपके पास डिग्री है या बस विदेशी लहजा तैरता है?₹ क्योंकि इलाज से पहले हकीकत जानना जरूरी है, वरना इलाज के बाद 'श्रद्धांजलि' ही आपकी आखिरी चिट्ठी बन जाएगी। और हां, अगर डॉक्टर कहे, ₹मेरा स्टाइल ही मेरी डिग्री है,₹ तो जूते हाथ में थामें और दरवाजे की ओर दौड़ पड़ें—क्योंकि अगला शिकार आप ही हो सकते हैं। ये नया भारत है, जहां मेडिकल डिग्री नहीं, मैनेजमेंट का जादू और मार्केटिंग का जोश हावी है। और इस खेल में दमोह का ये 'डॉक्टर' तो सलमान खान बनकर उभरा—डिग्री नहीं, स्टाइल से सबको चित्त कर गया।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

गांव राखी शाहपुर में डॉक्टर अंबेडकर की तस्वीर की बेअदबी के मामले में एससी संगठनों व ग्रामीणों ने किया हांसी लघु सचिवालय में जबरदस्त रोष प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

हांसी। गांव राखी शाहपुर में डॉक्टर बीआर अंबेडकर व भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर आजाद तथा गांव के दलित सरपंच मनीष कुमार की तस्वीरों पर किसी शरारती तत्व द्वारा जानबूझकर अपमान करने की नीयत से कालिख पोतने के मामले में आज हांसी लघु सचिवालय में सैकड़ो की संख्या में गांव राखी शाहपुर के दलित ग्रामीण तथा दलित संगठनों के लोग इकट्ठा हुए तथा हांसी की पुलिस की कार्यशैली के विरोध में नेशनल अलायन्स फ़ॉर दलित ह्यूमन राइट्स के संयोजक रजत कल्सन के नेतृत्व में जबरदस्त रोष प्रदर्शन किया तथा हरियाणा पुलिस तथा हरियाणा सरकार के विरोध में जबरदस्त नारेबाजी की इस मोके पर पुलिस प्रशासन ने भारी पुलिस बल तैनात किया था।

इस दौरान मौके पर मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए अधिवक्ता रजत कलसन ने कहा की हरियाणा में पुलिस की शह पर दलितों के साथ अत्याचार में उत्पीड़न की घटनाएं हो रही है तथा दलितों पर अत्याचार के मामले में हरियाणा पुलिस दूसरे नंबर पर है।

उन्होंने कहा कि एक जातिवादी मानसिकता के पुलिस अधिकारी जो नारनौद थाना का एसएचओ है उसने सरेआम कानून की धज्जियां उड़ाते हुए यह कह दिया कि गांव राखी शाहपुर में डॉक्टर अंबेडकर की तस्वीर की बेअदबी के मामले में कोई मुकद्धमा नही बनता तथा शिकायतकर्ता की दरखास्त पर कोई कार्रवाई नहीं की जबकि इस मामले में एससी एसटी एक्ट की धारा 3(1)(टी) के तहत मुकद्धमा ईजाद होता है।

इसके बाद सभी प्रदर्शनकारी जुलूस के रूप में लघु सचिवालय के अंदर घुसने की कोशिश करने लगे, यहां पर पहले से ही भारी पुलिस बल मौजूद था। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को अंदर जाने से रोक दिया। मौके पर आए डीएसपी रविंद्र सांगवान ने कहा कि प्रदर्शनकारी उन्हें अपना ज्ञापन उन्हें दे दें लेकिन प्रदर्शनकारी पुलिस अधीक्षक से मिलने पर लड़े रहे।

जो इस बात पर काफी देर पुलिस कर्मियों और प्रदर्शनकारी में बहस हुई जिसके बाद डीएसपी रविंद्र सांगवान अधिवक्ता रजत कल्सन, अधिवक्ता राहुल चावला, सरपंच मनीष कुमार, अधिवक्ता नरेश गुणपाल सहित 10 ग्रामीणों का प्रतिनिधिमंडल को लेकर एसपी के पास पहुंचे जहां पर एसपी ने ग्रामीणों को आश्वासन देते हुए कहा कि इस मामले में आप की शिकायत पर मुकद्धमा दर्ज कर लिया गया है तथा थाना प्रभारी चंद्रभान को नारनोंद से ट्रांसफर कर नए थाना प्रभारी की नियुक्ति कर दी गई है तथा इस मामले में जांच डीएसपी रविंद्र सांगवान को दी है तथा जल्द ही इसमें आरोपी की पहचान कर उसकी गिरफ्तारी की जाएगी। इस मौके पर अधिवक्ता रजत कल्सन ने कहा कि हांसी पुलिस का दलितों के मामले में कंडक्ट ठीक नहीं है तथा अगर एक सप्ताह के अंदर आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हुई तो वह मुख्यमंत्री के हांसी आगमन पर उन्हें काले झंडे दिखाने का काम करेंगे।

इस मामले में गांव राखी शाहपुर से आए ग्रामीणों ने बताया कि उन्हें गांव की ही एक खास बिरादरी के कुछ युवाओं पर शक है लेकिन इस मामले में पुलिस को गहन जांच करके आरोपी का पता लगाना पड़ेगा तथा ऐसे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए जो गांव का माहौल व भाईचारा खराब करना चाहते हैं।

गांव राखी शाहपुर के सरपंच मनीष कुमार ने बताया कि 2 मार्च को रात्रि 11:00 बजे एक अज्ञात शरारती तत्व ने जानबूझकर दलित समाज के

महापुरुषों का अपमान करने की नीयत से डॉ बीआर अंबेडकर तथा भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर तथा उसकी खुद की तस्वीर पर कालिख पोत दी थी, जो यह घटना सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गई जिस बारे में उन्होंने तत्कालीन थाना प्रभारी चंद्रभान को सीसी फुटेज के साथ शिकायत दी थी, लेकिन उसने यह कहते हुए मुकद्धमा दर्ज करने से मना कर दिया कि इस मामले में कोई अपराध नहीं बनता। सरपंच ने बताया कि मौजूदा थाना प्रभारी बलवान सिंह भी उन पर तथा दलित ग्रामीणों पर आरोपियों के साथ समझौता करने का दबाब बना रहा है तथा धमकी दे रहा है कि अगर इस मामले में तुम लोगों ने कार्रवाई की गांव में बवाल हो जाएगा।

दलित अधिकार कार्यकर्ता रजत कल्सन ने कहा बीआर अंबेडकर तथा दलित समाज के अन्य महापुरुषों की प्रतिमाओं व तस्वीरों की बेअदबी की घटनाएं बेतहाशा बढ़ी हैं तथा सोशल मीडिया पर भी डॉक्टर बीआर अंबेडकर के बारे में अश्लील व अभद्र टिप्पणीयां की जा रही है तथा दलितों के महापुरुषों की तस्वीरों को एडिट करके अपमानजनक तरीके से उनकी वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट की जा रही है जो कि इन घटनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह एक संगठित अपराध की तरफ इशारा करती हैं । उन्होंने कहा कि इसके पीछे कोई बड़ा संगठन व माफिया है जो प्रदेश का जातिय माहौल खराब करना चाहता है इस बारे में गहन जांच करके माफिया का पता लगाया जाए।

इस मौके पर अधिवक्ता नरेश गुणपाल, अधिवक्ता राहुल चावला, अधिवक्ता किरण जांगड़ा, सरपंच गांव राखी शाहपुर मनीष कुमार ,जय भीम आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय चौहान, रामनिवाश नम्बरदार ,पवन सरपंच ढाणी ब्राह्मण,कैलाश मास्टर ,सुनील मास्टर ,राहुल ,संदीप ,सोमबीर,रागबीर बलवान, हरदेवा ,अमित बुडाना,संजय गमाडा मौजूद रहे।

- रजत कल्सन

फर्जी आधार कार्ड से साथियों ने फाइनेंस कराई कार, जान दे बैठा कानपुर का युवक

सुनील बाजपेई

कानपुर। साथियों ने फर्जी आधार कार्ड सेकर फाइनेंस कर ली। विरोध किया तो प्रताड़ित किया और धमकाया भी, जिससे खफा होकर युवक ने अपनी जान दे दी। उसकी लाश रुमा के पास रेलवे पटरी से बरामद की गई। साथ ही मौके से आत्महत्या से पहले लिखा गया पत्र भी बरामद किया गया है, जिसमें घटना के लिए दो लोगों को दोषी ठहराया गया है।

इस सुसाइड नोट में सम्राट ने हिंदुजा एएसएम नारायण दत्त मिश्रा और एलएंडटी एसएम राहुल गुप्ता पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उसने लिखा कि नारायण ने साहिल निषाद के नाम से फर्जी आधार कार्ड भेजकर गाड़ी फाइनेंस करवाई।

सुसाइड नोट के अनुसार, जब यह मामला सामने आया तो दोनों अधिकारियों ने उसे धमकाना शुरू कर दिया। राहुल ने उसे ऑफिस में बुलाकर डीलर हरि मोटर्स और ग्राहक से एफआईआर करवाने की धमकी दी। ऑफिस में सुमित और एएसएम संतोष ने गाड़ी सरेंडर करने को कहा।

मिली जानकारी के मुताबिक इस सुसाइड नोट में सम्राट ने अपने परिवार को प्रताड़ित न करने की अपील की है। उसने स्पष्ट किया कि अन्य सभी केस सही ग्राहकों के हैं, लेकिन उसकी आत्महत्या के लिए राहुल और नारायण जिम्मेदार हैं।

मौके पर पहुंची पुलिस को परिजनों ने बताया कि सम्राट बाइक से कंपनी गया था। इसके बाद उसने फोन पर घर न आने की बात कही।

इसी के बाद उसकी लाश रेल पटरी से बरामद की गई। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच के साथ ही आरोपियों की भी तलाश की जा रही है। वहीं घटना से उसके परिवार में कोहराम मचा है।

वक़्फ़ (संशोधन) बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी मिली- नया कानून अस्तित्व में आया- यूनिफाइड मैनेजमेंट एंपावरमेंट इंपिरिएंसी एंड डेवलपमेंट (उम्मीद) नाम हुआ

केंद्र सरकार द्वारा एक अधिसूचना जारी कर वक़्फ़ के बदले लाए गए कानून उम्मीद को लागू करने की तारीख बताई जाएगी व नियम बनाए जाएंगे- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर हर लोकतांत्रिक देश में भारतीय भाषा में कहे तो वहां की संसद के दोनों सदनों में लोकतांत्रिक तरीके से ही कोई भी बिल पास करके उसे कानून का दर्जा देकर क्रियान्वयन किया जाता है, उसी कड़ी में भारत में एक और अध्याय वक़्फ़ संशोधन बिल 2025 के रूप में जुड़ गया है, जो दोनों सदनों में पारित होकर दिनांक 5 अप्रैल 2025 को देर शाम राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद अब 'उम्मीद' नाम से कानून बन चुका है व आम जनता की जानकारी के लिए इसे गज़ट में भी प्रकाशित कर दिया गया है, अब इस कानून को कब से लागू करने की अधिसूचना जारी की जाती है इसपर सभी की नज़रें लगी हुई है, चूँकि वक़्फ़ संशोधन बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई है, नया कानून अस्तित्व में आया गया है अब उसका नाम यूनिफाइड मैनेजमेंट एंपावरमेंट इंपिरिएंसी एंड डेवलपमेंट (उम्मीद) हुआ इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे केंद्र सरकार एक अधिसूचना जारी कर वक़्फ़ के बदले नए कानून उम्मीद को लागू करनेकी तारीख बताएगी व नियम भी बनाए जाएंगे।

साथियों बात अगर हम वक़्फ़ संशोधन बिल 2025 के कानून बन जाने की करें तो, वक्फ संशोधन बिल संसद के दोनों सदनों से पास होने के बाद अब कानून भी बन गया है, इसे राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई है। लोकसभा और राज्यसभा से पास होने के बाद वक्फ संशोधन बिल को मंजूरी के लिए राष्ट्रपति के पास भेजा गया था।राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के साथ ही वक्फ संशोधन बिल अब कानून बन गया, जो कि पूरे देश में लागू होगा।संसद के उच्च सदन राज्यसभा में वक्फ संशोधन विधेयक के पक्ष में 128 और विपक्ष में 95 वोट पड़े थे, इससे पहले लोकसभा में इसके पक्ष में 288 और विपक्ष में 232 वोट पड़े थे।दोनों सदनों में विपक्षी दलों ने इसका पुरजोर विरोध किया था।विपक्षी दलों के नेताओं ने इसे असंवैधानिक करार दिया था। कांग्रेस अध्यक्ष ने सरकार से बिल वापस लेने की अपील भी की थी। इस बिल को लेकर सरकार का दावा है कि इससे वक्फ प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और समावेशिता को बढ़ावा मिलेगा। गरीब मुसलमान जो अपने अधिकारों से वंचित रहते थे, उन्हें उनके अधिकार मिलेंगे, देश में मुसलमानों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार की दिशा में एक अहम कदम है।संशोधन और राष्ट्रपति मुर्मू की मंजूरी के बाद अब इस बिल का नाम यूनिफाइडमैनेजमेंट एपावरमेंट इफ़्फ़िइंसी एंड डेवलपमेंट (उम्मीद) हो गया है। यह कानून सुनिश्चित करता है कि महिलाओं को वक्फ संपत्तियों पर समान उत्तराधिकार अधिकार मिले, जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और मुस्लिम महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयासों का महत्वपूर्ण व अहम हिस्सा है।

साथियों बात अगर हम इस कानून के प्रावधानों की करें तो, (1) वक्फ बोर्ड की संरचनाः बोर्ड में इस्लाम के सभी फिकरों को प्रतिनिधित्व मिलेगा. केंद्रीय वक्फ परिषद में 22 सदस्य होंगे, जिनमें चार गैर-मुस्लिम से अधिक नहीं होंगे। (2) वक्फ़ संपत्ति पर नियंत्रणः वक्फ बोर्ड की देखरेख के लिए परमार्थ आयुक्त (चैरिटी कमिश्नर) की नियुक्ति का प्रस्ताव किया गया है, जो यह सुनिश्चित करेगा कि संपत्तियों का उचित मैनेजमेंट हो रहा है। (3) विधवा, तलाकशुदा महिलाओं और अनाथ बच्चों के अधिकारों की रक्षाः कोई भी व्यक्ति अपनी संपत्ति वक्फ़ कर सकता है लेकिन विधवा, तलाकशुदा महिला और अनाथ बच्चों के अधिकार वाली संपत्तियों को वक्फ घोषित नहीं किया जा सकेगा। (4) विवादों के समाधान के लिए ट्रिब्यूनलः देशभर में वक्फ़ से जुड़े 31,000 से अधिक मामले लंबित हैं, इसलिए वक्फ़ न्यायाधिकरण को अधिक सशक्त बनाया गया है. साथ ही अपील का प्रावधान भी जोड़ा गया है, जिससे असंतुष्ट पक्ष दीवानी अदालत में जा सकता है। (5) राष्ट्रीय संपत्ति और स्मारकों की सुरक्षाःभारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत आने वाली संपत्तियों को वक्फ घोषित नहीं किया जा सकेगा।क्यों लाया गया विधेयक ? संसदीय कार्य मंत्री ने सदन में कहा था, 2006 में देश में 4.9 लाख वक्फ संपत्तियां थीं, जिनसे मात्र 163 करोड़ रुपये की आय हुई। 2013 के संशोधन के बाद भी यह आय केवल तीन करोड़ रुपये बढ़ी। वर्तमान में देश में 8.72 लाख वक्फ संपत्तियां हैं लेकिन इनके प्रबंधन को प्रभावी बनाने की आवश्यकता थी।

साथियों बात अगर हम इस कानून में जिला कलेक्टर की अहम्भूमिका की करें तो, कलेक्टर की भूमिका होगी अहम एक प्रमुख प्रिंट मीडिया पेपर में में छपी एक रिपोर्ट में अधिवक्ता विशेषज्ञ ने कहा कि विधेयक में कुछ प्रावधान ऐसे हैं जिन्हें लागू करना आसान होगा। जैसे कि मूल अधिनियम के तहत निरस्त किए गए सेक्शन। वक्फ संपत्ति का निर्धारण करने का अधिकार पहले वक्फ बोर्ड के पास था, लेकिन अब इसे हटा दिया गया है। इसे तुरंत लागू किया जाएगा। कुछ प्रावधानों को लागू करने में समय लगेगा। खासकर कलेक्टर द्वारा की जाने वाली जांच की प्रक्रिया को स्पष्ट करने में। जब वक्फ बोर्ड किसी मामले को कलेक्टर को भेजता है,

तो जांच कैसे होगी, इसके नियम बनाए जाएंगे। कुछ संशोधनों के लिए केवल प्रक्रियात्मक बदलावों की आवश्यकता होगी।उनके अनुसार सरकारी संपत्तियों और नामित अधिकारियों की भूमिका से संबंधित प्रावधानों को भी नियमों में स्पष्ट करने की आवश्यकता होगी। उन्होंने कहा, सरकारी संपत्तियों के लिए,एक नामित अधिकारी होगा। यह अधिकारी कौन होगा, उसका कार्यकाल और अधिकार क्षेत्र क्या होगा, यह नियमों में बताया जाएगा।नियमों को प्रकाशित करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा, केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों का मंत्रालय इन नियमों का मसौदा तैयार करने के लिए जिम्मेदार है। मंत्रालय के एक अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर प्रिंट मीडिया में बताया कि राष्ट्रपति द्वारा विधेयक को मंजूरी दिए जाने के बाद नियम बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा हमें उम्मीद है कि नियमों को प्रकाशित करने में ज्यादा समय नहीं लगेगा, क्योंकि मंत्रालय विधेयक और संशोधनों को लेकर स्पष्ट है। एक बार नियम बन जाने के बाद, उन्हें कानून बनने के छह महीने के भीतर प्रकाशित करना होगा। कुछ मामलों में, समय सीमा को बढ़ाया जा सकता है। कुछ नियमों के लिए सार्वजनिक परामर्श की आवश्यकता होती है, जिसमें फीडबैक के लिए कम से कम 30 दिन का समय दिया जाता है। यदि इस प्रक्रिया के दौरान कई सुझाव आते हैं, तो प्रकाशन की समय सीमा छह महीने तक बढ़ सकती है। जिन नियमों के लिए सार्वजनिक परामर्श की आवश्यकता नहीं है, उनके लिए समय सीमा विधेयक के अधिनियमित होने से छह महीने है। लोकसभा के पूर्व महासचिव से बात करते हुए विधेयक के अगले कदमों के बारे में बताया।उन्होंने कहा कि एक बार राष्ट्रपति की सहमति मिलने और इसे गजट में अधिसूचित किए जाने के बाद, संशोधित विधेयक में कुछ प्रावधान हो सकते हैं जो नियमों के लिए हैं और कुछ संशोधन पहले से ही वर्णित हैं। विधेयक का खंड 41 एक नया सेक्शन जो केंद्र सरकार को नियम बनाने का अधिकार देता है। किसी अधिनियम को तभी लागू किया जा सकता है जब नियम बनाए और अधिसूचित किए जाएं, इसलिए नियमों को तत्काल बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, कुछ मामलों में, सरकार विधेयक को संसद में पेश किए जाने या पारित होने से पहले ही नियम बना लेती है, ताकि जैसे ही यह पारित हो, नियमों को अधिसूचित शीघ्र ही सरलता से किया जा सके।

साथियों बात अगर हम कानूनी विशेषज्ञ की राय की करें तो, सुप्रीम कोर्ट के एक विशेषज्ञ अधिवक्ता ने कहा कि संशोधन वक्फ के रूप में संपत्ति घोषित करने वालों को प्रतिबंधित करता है। इसे केवल उन मुसलमानों तक सीमित करता है जो कम से कम पांच वर्षों से मुसलमान हैं। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि यह कैसे निर्धारित किया जाएगा। बिल में वक्फ बोर्ड द्वारा भेजे गए मामलों में कलेक्टर द्वारा जांच करने की प्रक्रिया को और अधिक स्पष्ट करने की बात कही गई है। उन्होंने बताया कि उन्होंने संयुक्त संसदीय समिति के सामने विधेयक पर एक प्रस्तुति भी दी थी। विधेयक में कुछ प्रावधानों को लागू करना आसान होगा, जबकि कुछ के लिए नियमों को बनाने में अधिक समय लगेगा। वहीं सरकार को उम्मीद है कि नियमों को बनाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। सरकार ने एक अधिसूचना जारी कर जानकारी दी है कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 को संसद की मंजूरी मिलने के बाद राष्ट्रपति ने 5 अप्रैल, 2025 को इसकी स्वीकृति दे दी है। अब यह कानून बन चुका है और आम लोगों की जानकारी के लिए इसे प्रकाशित किया गया है। यह जानकारी पीटीआई की रिपोर्ट के हवाले से सामने आई है। सरकार ने कहा है कि नए कानून का मकसद वक्फ संपत्तियों में पारदर्शिता लाना, गड़बड़ी रोकना और अवैध कब्जों पर लगाम लगाना है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वक़्फ़ (संशोधन) बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी मिली- नया कानून अस्तित्व में आया- यूनिफाइड मैनेजमेंट एंपावरमेंट इंपिरिएंसी एंड डेवलपमेंट (उम्मीद) नाम हु।वक़्फ़ के नए कानून उम्मीद को तीन विपक्षी पार्टियों ने अलग-अलग याचिका दाखिल कर सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। मुसलमान वक़्फ़ अधिनियम 1923 को भारतीय गज़ट में अधिसूचना जारी कर निरस्त किया गया।केंद्र सरकार द्वारा एक अधिसूचना जारी कर वक़्फ़ के बदले लाए गए कानून उम्मीद को लागू करने की तारीख बताई जाएगी व नियम बनाए जाएंगे

2025 स्कोडा कोडियाक भारत में जल्द होगी लॉन्च, क्या कुछ होगा नया और खास?

परिवहन विशेष न्यूज

जल्द ही नई Skoda Kodiaq लॉन्च होने वाली है। इसमें पहले से बेहतर तकनीक लग्जरी और परफॉर्मेंस का कॉम्बीनेशन देखने के लिए मिलेगा। इसे कंपनी दो वेरिएंट में लेकर आने वाली है। इसमें नया विंग-डिजाइन डैशबोर्ड 13-इंच का फ्लोटिंग टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम 10-इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और नया टू-स्पोक स्टीयरिंग व्हील देखने के लिए मिलेगा। आइए जानते हैं कि नई Skoda Kodiaq कितनी खास होने वाली है?

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जल्दी ही नई Skoda Kodiaq लॉन्च होने वाली है। कंपनी ने इसे भारत में लॉन्च करने की तैयारी भी तेज कर दी है। नई स्कोडा कोडिआक को दो वेरिएंट Lauren and Klement (L&K) और Sportline में लाया जा रहा है। आइए जानतें हैं कि नई Skoda Kodiaq में क्या कुछ नया देखने के लिए मिलेगा और यह भारतीय बाजार में कब लॉन्च होने वाली है।

शार्प और प्रीमियम डिजाइन

नई Skoda Kodiaq के एक्सटीरियर को पहले से ज्यादा स्टाइलिश बनाया गया है। इसमें स्प्लिट हेडलैंप सेटअप को पहले की तरह बरकरार रखा गया है, लेकिन इसमें नए LED डे-टाइम रनिंग लाइट्स दिए गए हैं। इसके ग्रिल को अब इल्युमिनेटेड सेक्शन के साथ जोड़ा गया है, जो इसे काफी प्रीमियम अपील देता है।

Skoda Kodiaq

इसके रियर में C-शेप टेललैंप्स को एक लाइट बार से जोड़ा गया है, जो पूरे टेलगेट तक फैला हुआ है। इसमें 18-इंच के अलॉय व्हील्स स्टैंडर्ड रुप में दिए गए हैं।

इसके Sportline वेरिएंट में ब्लैक-आउट ग्रिल, D-पिलर गार्निश और रियर बंपर जैसे स्पोर्टी एलिमेंट्स दिए गए हैं, जबकि इसके L&K वर्जन में इन्हीं चीजों को सिल्वर फिनिश दिया गया है।

इंटीरियर और फीचर्स

इसके केबिन को पहले से ज्यादा प्रीमियम लुक दिया गया है। इसमें नया विंग-डिजाइन डैशबोर्ड, 13-इंच का फ्लोटिंग टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10-इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और नया टू-स्पोक स्टीयरिंग व्हील को शामिल किया गया है।

Skoda Kodiaq

इसके L&K ट्रिम में 3-ज़ोन क्लाइमेट कंट्रोल, वेंटिलेटेड और हीटेड फ्रंट सीट्स, मसाज फंक्शन, पावर्ड सीट्स, पैनोरमिक सनरूफ, 360 डिग्री कैमरा और पार्क असिस्ट जैसे फीचर्स को शामिल किया गया हैं। वहीं, Sportline वेरिएंट में स्पोर्टी बकेट सीट्स दी गई है।

इंजन और परफॉर्मेंस

नई Skoda Kodiaq में 2.0-लीटर, 4-सिलेंडर टर्बो-पेट्रोल इंजन दिया गया है। इसका इंजन 204hp की पावर और 320Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इस इंजन को 7-स्पीड DCT (ड्यूल क्लच ट्रांसमिशन) से लैस किया गया है और ऑल-व्हील ड्राइव (AWD) भी दिया है।

कीमत और मुकाबला

नई Skoda Kodiaq को भारतीय बाजार में 17 अप्रैल 2025 को लॉन्च किया जा सकता है। इसे 45 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया जा सकता है। इसका भारतीय बाजार में Jeep Meridian और Hyundai Tucson से देखने के लिए मिल सकता है।

मारुति ग्रैंड विटारा हुई अपडेट, सभी वेरिएंट्स में मिलेगा छह एयरबैग का अपडेट, जानें कितनी होगी कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली Grand Vitara को अपडेट कर दिया गया है। एसयूवी के किस वेरिएंट में किस तरह के अपडेट किए गए हैं। किन फीचर्स के साथ इसे ऑफर किया जा रहा है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti की ओर से Grand Vitara को अपडेट कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसमें कई फीचर्स को स्टैंडर्ड तौर पर अपडेट (Maruti Grand Vitara Updates 2025) किया गया है और कई वेरिएंट्स में कुछ और फीचर्स को जोड़ा गया है। किस तरह के फीचर्स अब एसयूवी में दिए गए हैं। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

अपडेट हुई Maruti Grand Vitara

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी को अपडेट कर दिया गया है। इसमें कई फीचर्स को जोड़ा गया है और कुछ वेरिएंट्स में नए फीचर्स दिए गए हैं।

स्टैंडर्ड तौर पर मिले ये फीचर्स

निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि अब ग्रैंड विटारा एसयूवी में कुछ फीचर्स को स्टैंडर्ड तौर पर दिया जाएगा। जिसके बाद इसके सभी वेरिएंट्स में इन फीचर्स को दिया जाएगा। स्टैंडर्ड तौर पर दिए जाने वाले फीचर्स में छह एयरबैग (Maruti Grand Vitara six airbags update) को शामिल किया गया है। इसके साथ ही इसमें ईएसपी, हिल होल्ड असिस्ट, फ्रंट और रियर डिस्क ब्रेक, एबीएस, ईबीडी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज और थ्री पाइंट सीट बेल्ट को शामिल किया गया है।

मिला नया वेरिएंट

मारुति ग्रैंड विटारा एसयूवी में Delta+ स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वेरिएंट को भी ऑफर किया गया है। नए वेरिएंट को जेटा प्लस और एल्फा प्लस वेरिएंट के बीच में पोजिशन किया गया है। जिसे 16.99 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

मिले ये फीचर्स

एसयूवी में कुछ नए फीचर्स (Grand Vitara new features 2025) को भी जोड़ा गया है। इसमें 8वे ड्राइवर पावर्ड सीट, 6AT वेरिएंट्स में इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, ऑटो प्यूरीफायर, नई एलईडी केबिन लैंप, रियर डोर सनशेड, 17 इंच अलॉय व्हील्स को शामिल किया गया है। इसके अलावा Zeta (O), Zeta+ (O), Alpha (O) and Alpha+ (O) वेरिएंट्स में पैनोरमिक सनरूफ को भी ऑफर किया गया है।

कितनी है कीमत

मारुति ग्रैंड विटारा में नए फीचर्स जोड़ने के बाद अब इसकी कीमत को भी अपडेट किया गया है। एसयूवी को 11.42 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.68 लाख रुपये रखी गई है। एसयूवी के अब कुल 18 वेरिएंट्स को ऑफर किया जा रहा है।

2025 यामाहा FZ-S Fi नए इंजन और कलर ऑप्शन में लॉन्च, स्पोर्टी लुक हुआ और बेहतर

परिवहन विशेष न्यूज

2025 यामाहा FZ-S Fi को भारत में नए अपडेट के साथ लॉन्च किया गया है। इसमें नया OBD-2B कम्प्लायंट इंजन दिया गया है। इसके साथ ही नई Yamaha FZ-S Fi को चार नए कलर ऑप्शन भी दिए गए हैं। इन कलर के साथ बाइक का स्पोर्टी लुक और भी बेहतर हो गया है। इसमें नेगेटिव LCD डिस्प्ले दिया गया है जो Yamaha Y-Connect मोबाइल ऐप से जुड़ जाता है।

नई दिल्ली। यामाहा ने भारत में अपनी पॉपुलर मोटरसाइकिल 2025 Yamaha FZ-S Fi को नए अपडेट और कलर ऑप्शन के साथ लॉन्च किया है। इतना ही नहीं, इसमें नया OBD-2B कम्प्लायंट भी दिया गया है। इसके साथ ही इसमें नए फीचर्स भी दिए गए हैं। आइए जानते हैं कि 2025 Yamaha FZ-S Fi की कीमत कितनी है और इसमें क्या कुछ नया मिला है?

कीमत

नई Yamaha FZ-S Fi को भारतीय बाजार में 1,34,800 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। यह पिछले जनरेशन की Yamaha FZ-S Fi V4 DLX से 3,000 रुपये महंगी है और Yamaha FZ-S Fi Hybrid से 10,000 रुपये सस्ती है। यह बाइक भारत में Bajaj Pulsar N150 और TVS Apache RTR 160 2V जैसे लोकप्रिय मॉडलों से टक्कर लेगी।

डिजाइन और कलर ऑप्शन

2025 Yamaha FZ-S Fi के डिजाइन को पहले की तरह बरकरार रखा गया है, लेकिन इसे चार नए कलर ऑप्शन भी दिए गए हैं, जो Metallic Grey, Matte Black, Ice Fluo-Vermillion और Cyber Green है। यह कलर न केवल उसे स्पोर्टी लुक देते हैं, बल्कि हर राइडर के टेस्ट के हिसाब से सॉफ्ट और प्लैशी ऑप्शन भी उपलब्ध कराते हैं।

इंजन और परफॉर्मेंस

Yamaha की इस नई बाइक में नया OBD-2B कम्प्लायंट 149cc सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 12.5PS की पावर और 13.3Nm का टॉर्क जनरेट करता है। परफॉर्मेंस के मामले में यह Yamaha FZ-S Fi Hybrid के समान ही है।

फीचर्स और टेक्नोलॉजी

इसमें Yamaha ने कनेक्टिविटी फीचर्स पर भी खास ध्यान दिया गया है। बाइक में नेगेटिव LCD डिस्प्ले का इस्तेमाल किया गया है, जो Yamaha Y-Connect मोबाइल ऐप से जुड़ जाता है। इसके जरिए आप बाइक की स्क्रीन पर ही कॉल, SMS और ईमेल अलर्ट, फोन बैटरी स्टेटस, फ्यूल कंजम्पशन ट्रैकर और पार्किंग लोकेशन जैसे फीचर्स का लाभ ले सकते हैं।

इसके अलावा, बाइक में ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम को भी शामिल किया गया है। हालांकि, 150cc बाइक में यह कुछ लोगों को ओवर लग सकता है, लेकिन नए राइडर्स के लिए यह एक बड़ा सेफ्टी फीचर साबित हो सकता है।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग

2025 Yamaha FZ-S Fi में टेलिस्कोपिक फ्रंट फोर्क और मोनोशॉक रियर सस्पेंशन दिया गया है। इसमें 17-इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। ब्रेकिंग के लिए 282mm फ्रंट और 220mm रियर डिस्क ब्रेक को शामिल किया गया है, जो सिंगल-चैनल ABS के साथ आते हैं।

नई मारुति सुजुकी ग्रैंड विटारा को खरीदना हो गया महंगा, किस वेरिएंट की कितनी बढ़ी कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति ग्रैंड विटारा की नई कीमत भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई कारों की कीमतों में बढ़ोतरी कर दी गई है। इनमें एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Grand Vitara भी शामिल है। निर्माता की ओर से एसयूवी की कीमत में कितनी बढ़ोतरी की गई है। किस वेरिएंट की कीमत में कितनी बढ़ोतरी हुई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल मारुति सुजुकी की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से एसयूवी सेगमेंट में Grand Vitara की बिक्री की जाती है। इस एसयूवी की कीमतों को आठ अप्रैल 2025 से बढ़ा दिया गया है। एसयूवी के किस वेरिएंट की कीमत में कितनी बढ़ोतरी हुई है। किस कीमत पर अब इसको खरीदा (Maruti Grand Vitara new price) जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

अपडेट के साथ हुई बढ़ोतरी

मारुति सुजुकी की ओर से हाल में ही अपनी चार मीटर से बड़ी एसयूवी ग्रैंड विटारा को अपडेट किया गया है। जिसके साथ ही इसकी कीमतों को भी बढ़ा दिया गया है।

बेस वेरिएंट की कीमत में कितनी बढ़ोतरी

मारुति सुजुकी की ओर से ग्रैंड विटारा की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। एसयूवी के बेस वेरिएंट के तौर पर Sigma को ऑफर किया जाता है। इसकी कीमत में 23 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। कीमत बढ़ने से पहले इसकी एक्स शोरूम कीमत 11.19 लाख रुपये थी, लेकिन अब इसे 11.42 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया गया है।

Delta वेरिएंट की कीमत में कितनी बढ़ोतरी

एसयूवी के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर Delta की बिक्री की जाती है। इस वेरिएंट की पुरानी कीमत 12.30 लाख रुपये थी, लेकिन अब इसकी शुरुआत 12.53 लाख रुपये से होगी। ऐसे में इसकी कीमत में भी 23 हजार रुपये बढ़ाए गए हैं।

Zeta वेरिएंट की क्या हुई कीमत

एसयूवी के जेटा वेरिएंट को पहले 14.26 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जा रहा था। कीमतों में बढ़ोतरी के बाद इसकी एक्स शोरूम कीमत 14.67 लाख रुपये हो गई है। इस वेरिएंट की कीमत में 41 हजार रुपये बढ़ाए गए हैं।

टॉप वेरिएंट Alpha की नई कीमत

एसयूवी के टॉप वेरिएंट के तौर पर एल्फा की बिक्री की जाती है। इस वेरिएंट की पुरानी एक्स शोरूम कीमत 15.76 लाख रुपये थी। लेकिन अब इसे 16.14 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ही खरीदा जा सकता है। टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत में 38 हजार रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

किनसे है मुकाबला

मारुति सुजुकी की ओर से ग्रैंड विटारा एसयूवी को चार मीटर से ज्यादा बड़ी एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Toyota Urban Cruiser Hyryder, Hyundai Creta, Kia Seltos, Honda Elevate जैसी एसयूवी के साथ होता है।

स्टीलबर्ड ने लॉन्च किया हजार रुपये से कम कीमत में नया हेलमेट, स्टाइल और सेफ्टी का है जबरदस्त कॉम्बिनेशन

परिवहन विशेष न्यूज

स्टीलबर्ड ने 999 रुपये की कीमत में नया SBH-64 ZIP RF हेलमेट लॉन्च किया है जो स्टाइल और सेफ्टी का बेहतरीन कॉम्बिनेशन है। यह हाफ-फेस हेलमेट एयरोडायनामिक रियर स्पॉइलर एक्सटेंडेड वाइज़र क्विक-रिलीज बकल और हाइजीनिक इंटीरियर जैसे फीचर्स से लैस है। BIS सर्टिफाइड यह हेलमेट शहर और हाईवे दोनों के लिए उपयुक्त है और तीन साइज व कई रंगों में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। अगर आप दोपहिया वाहन चलाते हैं, तो आपको एक अच्छा हेलमेट पहनना जरूरी होता है। यह न केवल आपको सिर्फ सुरक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि ट्रैफिक चालान से भी बचाता है। Steelbird दोपहिया वाहन चालकों के लिए कई हेलमेट ऑफर करता है। अब कंपनी ने एक नया हेलमेट लॉन्च किया है, जो SBH-64 ZIP RF है। यह एक हाफ-फेस हेलमेट है, जो ना सिर्फ आपको सुरक्षा देगा, बल्कि स्टाइलिश भी है। आइए Steelbird के नए हेलमेट SBH-64 ZIP RF के कीमत, फीचर्स और डिजाइन के बारे में जानते हैं।

फीचर्स

SBH-64 ZIP RF में एयरोडायनामिक रियर स्पॉइलर दिया गया है, जो इसे स्पोर्टी और अग्रेसिव लुक देता है। भले ही यह इसे हाफ-फेस डिजाइन के साथ लेकर आया गया है, लेकिन इसका वाइड पॉलीकार्बोनेट वाइजर आपके पूरे चेहरे को अच्छी तरह से कवर करता है, जो आपको हवा, धूल और कीड़े-मकौड़ों से सुरक्षा प्रदान करता है।

राइडर कम्फर्ट

इसके अंदर के इंटीरियर को इटैलियन स्टाइल में डिजाइन किया गया है। इसे हाइजीनिक, सांस लेने योग्य और वॉशेबल मटेरियल से बनाया गया है, जो इस हेलमेट को लंबे समय तक हेलमेट को साफ और आरामदायक बनाए रखने में मदद करता है। इसमें कॉम्पैक्ट और एर्गोनॉमिक डिजाइन नेक पैड दिया गया है, जो लंबे समफ के दौरान आपकी गर्दन को सपोर्ट देता है।

क्विक रिलीज बकल और नाइट विजिबिलिटी

Steelbird SBH-64 ZIP RF में क्विक-रिलीज बकल सिस्टम दिया गया है, जिससे आप हेलमेट को आसानी से एक हाथ से खोला और बंद किया जा सकता है। इसमें पीछे की तरफ रिफ्लेक्टर दिया गया है, जो राइडिंग के दौरान विजिबिलिटी को बढ़ाता है। इससे आपके साथ हादसे होने की संभावना कम हो जाती है।

BIS सर्टिफाइड सेफ्टी

इस हेलमेट को BIS (IS 4151:2015) सर्टिफिकेशन मिला है और इसे हाई-इम्पैक्ट ABS शेल व मल्टी-लेयर EPS कोर भी मिला है। इसका सीधा मतलब है कि किसी भी टक्कर या गिरने की स्थिति में हेलमेट राइडर को ज्यादा सुरक्षा प्रदान करता है।

कीमत

Steelbird SBH-64 ZIP RF को भारतीय बाजार में 999 रुपये की कीमत में लॉन्च किया गया है। इसे 10 से ज्यादा कलर ऑप्शन के साथ लेकर आया गया है। इसे M (580mm), L (600mm), और XL (620mm) साइज लाया गया है। इस कीमत में यह आपके लिए एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकता है।

भारतीय साहित्य में समकालीन महिलाओं की आवाज़ें

विजय गर्ग

भारतीय साहित्य में महिलाओं की आवाज विविध आख्यानों में योगदान करती है और सामाजिक मानदंडों को चुनौती देती है। भारत में महिलाओं के लेखन का विकास प्राचीन से समकालीन समय तक फैला हुआ है। यह यात्रा बदलती धारणाओं और महिलाओं के सशक्तिकरण को दर्शाती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्राचीन साहित्य प्राचीन भारत में, महिला कवियों और विद्वानों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। वेदों और उपनिषदों जैसे ग्रंथों में उनके कौशल की विशेषता है। लोपामुद्रा, गार्गी और मैत्रेयी प्रमुख आंकड़े हैं। उनके कार्यों ने भविष्य की महिलाओं के लेखन की नींव रखी।

मध्यकालीन काल भक्ति आंदोलन ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण युग को चिह्नित किया। इसने महिला लेखकों को आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों को व्यक्त करने का अधिकार दिया। उल्लेखनीय कवियों में मीराबाई और अक्का महादेवी शामिल हैं। उन्होंने सामाजिक सम्मेलनों को चुनौती दी और दिव्य प्रेम का जश्न मनाया। उनकी कविता समकालीन चर्चाओं में प्रभावशाली बनी हुई है।

औपनिवेशिक युग ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने महिलाओं की शिक्षा और साहित्यिक अभिव्यक्ति को प्रभावित किया। इसने महिलाओं को लिखने और प्रकाशित करने के लिए रास्ते खोले। सरोजिनी नायडू इस दौरान एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उभरी थीं। उनकी कविता ने राष्ट्रवादी विषयों और व्यक्तिगत अनुभवों को संबोधित किया। कमला दास को भी महिलाओं के मुद्दों और पहचान पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रमुखता मिली।

क्षेत्रीय साहित्य भारतीय साहित्य क्षेत्रीय आख्यानों से समृद्ध है। विभिन्न भाषाओं की महिला लेखक योगदान करती हैं। इस्मत चुग़ताई ने उर्दू में लिखा, जो सामाजिक मुद्दों को दर्शाता है। कमला मार्कंडेय ने अपनी मार्मिक कहानियों के साथ अंग्रेजी साहित्य का प्रतिनिधित्व किया। तमिल लेखक बामा जाति और लिंग की गतिशीलता की पड़ताल करता है।

महिला साहित्य में विषय नारीवाद और लिंग मुद्दे महिलाओं का साहित्य अक्सर पितृसत्ता और लैंगिक भूमिकाओं की पड़ताल करता है. लेखक सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते हैं और महिलाओं के अधिकारों की वकालत करते हैं। उनके कार्य परिवर्तन को प्रेरित करते हैं और लिंग मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं।

पहचान और अंतर जाति, वर्ग और धार्मिक पहचान का प्रतिनिधित्व महत्वपूर्ण है। महिला लेखक व्यक्तिगत और राजनीतिक कथाओं को आपस में जोड़ते हैं। यह अंतर्द्वंद्व साहित्य में पहचान पर प्रवचन को समृद्ध करता है।

सांस्कृतिक विरासत और परंपरा लोकगीत और पौराणिक कथाएं साहित्य में महिलाओं की आवाज़ को आकार देती हैं। लेखक पारंपरिक आख्यानों को नारीवादी दृष्टिकोण से पुनः व्याख्या करते हैं। यह पुनः परीक्षा सांस्कृतिक विरासत के बारे में नई महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

साहित्यिक रूप और शैली कविता कविता आत्म-अभिव्यक्ति के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में कार्य करती है। यह महिलाओं को अपने अनुभवों को खुलकर आवाज देने की अनुमति देता है। कमला दास एक उल्लेखनीय कवि हैं जिन्होंने प्रेम और पहचान के बारे में लिखा है। उसका काम कई पाठकों के साथ प्रतिध्वनित होता है।

कल्पना उपन्यास और लघु कथाएँ महिलाओं के जीवन की जटिलताओं को दर्शाती हैं। ऐतिहासिक कथा और जादुई यथार्थवाद सहित विभिन्न शैलियों की खोज की जाती है। लेखक समृद्ध नैरेटिव बनाते हैं जो सामाजिक चुनौतियों को दर्शाते हैं।

गैर-कथा और संस्मरण आत्मकथात्मक लेखन और निबंधों ने प्रमुखता प्राप्त की है। महिला लेखक व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक टिप्पणियों का दस्तावेजीकरण करती हैं। उनके कार्य समकालीन मुद्दों के बारे में मूल्यवान महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।

समाज पर प्रभाव जागरूकता बढ़ाने में महिला साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लैंगिक असमानता और जातिगत भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दों को संबोधित करता है। इन लेखों का प्रभाव नारीवादी आंदोलनों तक है। वे सांस्कृतिक प्रवचन को आकार देते हैं और भारत में सक्रियता को प्रेरित करते हैं।

शिक्षा पर महिला साहित्य का प्रभाव महिला साहित्य ने शैक्षिक आख्यानों को बदल दिया है। यह पाठ्यक्रम में विविध आवाज़ों को शामिल करने को प्रोत्साहित करता है। यह बदलाव छात्रों के बीच महत्वपूर्ण सोच और जागरूकता को बढ़ावा देता है।

भारतीय महिला लेखकों की वैश्विक मान्यता भारतीय महिला लेखक अंतरराष्ट्रीय पहचान हासिल कर रही हैं। उनके कार्यों का कई भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। यह वैश्विक आउटरीच उनकी आवाज़ और दृष्टिकोण को बढ़ाता है।

भारतीय साहित्य में महिलाओं की आवाज़ों का भविष्य भारत में महिला साहित्य का भविष्य आशाजनक दिखता है। लेखकों की नई पीढ़ियां उभरती रहती हैं. वे नए विचार लाते हैं और मौजूदा आख्यानों को चुनौती देते हैं। डिजिटल युग उनके काम के व्यापक प्रसार के लिए मंच प्रदान करता है।

साहित्यिक त्योहारों की भूमिका भारत में साहित्यिक त्योहार महिलाओं की आवाज मनाते हैं। वे लेखकों को अपना काम साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। ये घटनाएं लिंग और साहित्य पर चर्चा को प्रोत्साहित करती हैं। वे लेखकों के बीच नेटवर्किंग को भी प्रोत्साहित करते हैं।

महिला साहित्य और सोशल मीडिया सोशल मीडिया ने साहित्यिक जुड़ाव को बदल दिया है। महिला लेखक व्यापक दर्शकों तक पहुंचने के लिए इन प्लेटफार्मों का उपयोग करती हैं। वे अपना काम साझा करते हैं और सीधे पाठकों से जुड़ते हैं। यह बातचीत समुदाय और समर्थन को प्रोत्साहित करती है।

भारत में मंदी नहीं

अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप के टैरिफ वार से दुनिया के देशों में हाहाकार, कोहराम मचा है। शेयर बाजार औंधे मुंह गिर रहे हैं। भारत की सूचीबद्ध कंपनियों के, एक ही दिन में, 14 लाख करोड़ रुपए से अधिक डूब गए। आकलन है कि इसी सत्र में भारतीय बाजार के 50-60 लाख करोड़ रुपए डूब चुके हैं। भारत के अलावा चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, हांगकांग, ताइवान आदि देशों में भी निवेश स्वाहा हुए हैं, लिहाजा निवेशक अपना शेष धन बचाने के लिए इधर-उधर प्रयासरत हैं। करीब 50 देशों ने राष्ट्रपति ट्रंप से बातचीत की पेशकश की है, लेकिन अभी तक कोई ठोस जवाब अमरीका ने नहीं दिया है। हालांकि टैरिफ वार के बाद अमरीकी कंपनियों का मार्केट कैप भी करीब 516 लाख करोड़ रुपए (करीब 6 लाख करोड़ डॉलर) घट चुका है। यह राशि भारतीय जीडीपी से डेढ़ गुणा ज्यादा के करीब है। चूंकि अमरीका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, लिहाजा संभव है कि वह इस नुकसान की भरपाई जल्द ही कर ले! हालात ऐसे बन गए हैं कि अमरीका में ही आर्थिक मंदी की आशंका 35 फीसदी से बढ़ कर 45 फीसदी हो गई है। बहरहाल अमरीका में जन-सैलाब सड़कों पर उमड़ा है। लोग राष्ट्रपति ट्रंप की टैरिफ के साथ-साथ अन्य नीतियों का भी पुरजोर विरोध कर रहे हैं। भीड़ के निशाने पर खरबपति अमरीकी एलन मस्क भी हैं। उनकी टेस्ला कारें जलाई जा रही हैं। ट्रंप जनवरी, 2025 में ही दूसरी बार अमरीका के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए हैं। इतनी जल्दी उनकी लोकप्रियता के पतन को देखकर हर कोई हैरान है। शायद ऐसा किसी भी अमरीकी राष्ट्रपति के संदर्भ में नहीं हुआ! बेशक टैरिफ वार का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ेगा, लिहाजा अमरीका के मित्र माने जाने वाले यूरोप और नाटो देश भी राष्ट्रपति ट्रंप के खिलाफ लामबंद हो रहे हैं।

राष्ट्रपति ट्रंप ने संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन सरीखी अंतरराष्ट्रीय पंचायतों पर भी प्रहार किए हैं और वह वैश्वीकरण की धारणा और व्यवस्था को ही खत्म करने पर आमादा हैं, नतीजतन दुनिया की स्थापित 'सप्लाई चेन' भी खंडित होगी, लिहाजा नए व्यापारिक समीकरण बनेंगे और नई सप्लाई चेन भी स्थापित हो सकती है। अलबत्ता निर्यात कम होंगे। मांग कम होगी। मंदी के आसार बनेंगे। सरकारों को तैयार हो जाना चाहिए। यदि देश अमरीका पर ही टैरिफ लगाते हैं और अन्य देशों पर पहले जैसा ही टैरिफ वसूलते हैं, तो उसके परिणाम अलग होंगे। अमरीका के टैरिफ प्रहार पर फिलहाल भारत सरकार खामोश और निश्चिंत लग रही है। केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय आगामी 6 सप्ताह तक टैरिफ वार के चौतरफा प्रभावों का विश्लेषण करना चाहता है। बेशक भारत के कारोबार और अर्थव्यवस्था पर भी असर पड़ेगा, लेकिन आर्थिक मंदी की बात करना या दुष्प्रचार करना गलत है। भारत में घरेलू बाजार, मांग और खपत व्यापक है। हम अमरीका को निर्यात के ही भरोसे नहीं हैं, क्योंकि भारत बड़ा निर्यातक देश नहीं है। हमारी जीडीपी में माल निर्यात की हिस्सेदारी मात्र 10 फीसदी है। जीडीपी का मात्र 2 फीसदी ही अमरीका की टैरिफ नीति से प्रभावित होगा। भारत मुख्यत: 'सर्विस इकोनॉमी' है। जीडीपी में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी करीब 65 फीसदी है। अमरीका को जो सेवा-निर्यात किया जाता है, उस पर टैरिफ बढ़ाया नहीं गया है, लिहाजा इस 'ट्रेड वार' से लगभग मुक्त रहेगा। भारत घरेलू मांग पर आधारित अर्थव्यवस्था है, लिहाजा कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान भी हमने खाद्य-संकट महसूस नहीं किया। अब भी संभावना यही है कि अमरीका और चीन के बीच टैरिफ-युद्ध के आसार के मद्देनजर बड़े विदेशी निवेशक भारत में लौट सकते हैं। बहरहाल मंदी के आसार न भी हों, लेकिन व्यापारिक खौफ और अंतरराष्ट्रीय मांग के कम होने के कारण हमारे ऑटोमोबाइल, सूचना प्रौद्योगिकी, धातु, फार्मा और ऊर्जा के बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में गिरावट देखी गई है। भारत को 'पलटवार टैरिफ'

कहानी: वही खुशबू

विजय गर्ग

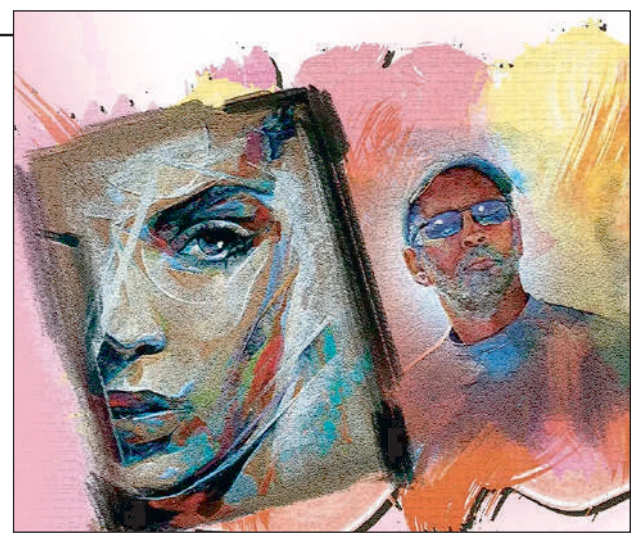

भैरों सिंह का बीमारों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहना एक पहेली बना हुआ था. वह किसी भी व्यक्ति की, चाहे वह अपरिचित ही क्यों न हो, स्वयंसेवक की तरह सहायता करता था. कुछ लोग इसे उस की पीने की लत से जोड़ते. पर, क्या वास्तविकता यही थी?

बहुत दिनों से सुनती आई थी कि भैरों सिंह अस्पताल के चक्कर बहुत लगाते हैं. किसी को भी कोई तकलीफ हो, किसी स्वयंसेवक की तरह उसे अस्पताल दिखाने ले जाते. एक्सरे करवाना हो या सोनोग्राफी, तारीख लेने से ले कर पूरा काम करवा कर देना जैसे उन की जिम्मेदारी बन जाती. मैं उन्हें बहुत सेवाभावी समझती थी. उन के लिए मन में श्रद्धा का भाव उपजता, क्योंकि हमें तो अकसर किसी की मिजाजपुरसी के लिए औपचारिक रूप से अस्पताल जाना भी भारी पड़ता है.

लोग यह भी कहते कि भैरों सिंह को पीने का शौक है. उन की बैठक डाक्टरों और कंपाउंडरों के साथ ही जमती है. इसीलिए अपना प्रोग्राम फिट करने के लिए अस्पताल के इर्दगिर्द भटकते रहते हैं. अस्पताल के जिक्र के साथ भैरों सिंह का नाम न आए, हमारे दफ्तर में यह नामुमकिन था.

पिछले वर्ष मेरे पति बीमार हुए तो उन्हें अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा. तब मैं ने भैरों सिंह को उन की भरपूर सेवा करते देखा तो उन की इंसानियत से बहुत प्रभावित हो गई. ऐसा लगा लोग यों ही अच्छेखासे इंसान के लिए कुछ भी कह देते हैं. कोई भी बीमार हो, वह परिचित हो या नहीं, घंटों उस के पास बैठे रहना, दवाइयों व खून आदि की व्यवस्था करना उन का रोज का काम था. मानो उन्होंने मरीजों की सेवा का प्रण लिया हो.

उन्हीं दिनों बातोंबातों में पता चला कि उन की पत्नी भी बहुत बीमार रहती थी. उसे आर्थ्राइटिस था. उस का चलनाफिरना भी दूभर था. जब वह मेरे पति की सेवा में 4-5 घंटे का समय दे देते तो मैं उन्हें यह कहने पर मजबूर हो जाती, 'आप घर जाइए, भाभीजी को आप की जरूरत होगी.'

पर वे कहते, 'पहले आप घर हो आइए, चाहें तो थोड़ा आराम कर आएं, मैं यहां बैठा हूं.'

यों मेरा उन से इतनी आत्मीयता का संबंध कभी नहीं रहा. बाद में बहुत समय तक मन में यह कुतूहल बना रहा कि भैरों सिंह के इस आत्मीयतापूर्ण व्यवहार का कारण क्या रहा होगा? धीरेधीरे मैं ने उन में दिलचस्पी लेनी शुरू की. वे भी किसी न किसी बहाने गपशप करने आ जाते.

एक दिन बातचीत के दौरान वे काफी संकोच से बोले, ''चूंकिआप लिखती हैं, सो मेरी कहानी भी लिखें.''मैं उन की इस मासूम गुजारिश पर हैरान थी. कहानी ऐसे हीलिख दी जाती है क्या? कहानी लायक कोई बात भी तो हो. परंतु यह सब मैं उन से न कह सकी. मैं ने इतना ही कहा, ''आप अपनी कहानी सुनाइए, फिर लिख दूंगी.''

बहुत सकुचाते और लजाई सी मुसकान पर गंभीरता का अंकुश लगाते हुए उन्होंने बताया, ''सलोनी नाम था उस का, हमारी दोस्ती अस्पताल में हुई थी.''

मुझे मन ही मन हंसी आई कि प्यार भी किया तो अस्पताल में. भैरों सिंह ने गंभीरता से अपनी बात जारी रखी, ''एक बार मेरा एक्सिडैंट हो गया था. दोस्तों ने मुझे अस्पताल में भरती करा दिया. मेरा जबड़ा, पैर और कूल्हे की हड्डियां सेट करनी थीं. लगभग 2 महीने मुझे अस्पताल में रहना पड़ा. सलोनी उसी वार्ड में नर्स थी, उस ने मेरी बहुत सेवा की. अपनी ड्यूटी के अलावा भी वह मेरा ध्यान रखती थी.

''बस, उन्हीं दिनों हम में दोस्ती का बीज पनपा, जो धीरेधीरे प्यार में तबदील हो गया. मेरे सिरहाने रखे स्टील के कपबोर्ड में दवाइयां आदि रख कर ऊपर वह हमेशा फूल ला कर रख देती थी. सफेद फूल, सफेद परिधान में सलोनी की उजली मुसकान ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला. मैं ने महसूस किया कि सेवा और स्नेह भी मरीज के लिए बहुत जरूरी हैं. सलोनी मानो स्नेह का झरना थी. मैं उस का मुरीद बन गया.

''अस्पताल से जब मुझे छुट्टी मिल गई, तब भी मैं ने उस की ड्यूटी के समय वहां जाना जारी रखा. लोगों को मेरे आने में एतराज न हो, इसीलिए मैं कुछ काम भी करता रहता. वह भी मेरे कमरे में आ जाती. मुझे खेलने का शौक था. मैं औफिस से आ कर शौर्ट्स, टीशर्ट या ब्लेजर पहन कर खेलने चला जाता और वह ड्यूटी के बाद सीधे मेरे कमरे में आ जाती. मेरी अनुपस्थिति में मेरा कमरा व्यवस्थित कर के कौफी पीने के लिए मेरा इंतजार करते हुए मिलती.

''जब उस की नाइट ड्यूटी होती तो वह कुछ जल्दी आ जाती. हम एकसाथ कौफी पीते. मैं उसे अस्पताल छोड़ने जाता और वहां कईकई घंटे मरीजों की देखरेख में उस की मदद करता. सब के सो जाने पर हम धीरेधीरे बातें करते रहते. किसी मरीज को तकलीफ होती तो उस की तीमारदारी में जुट जाते.

''कभी जब मैं उस से ड्यूटी छोड़ कर बाहर जाने की जिद करता तो वह मना कर देती. सलोनी अपनी ड्यूटी की बहुत पाबंद थी. उस की इस आदत पर मैं नाराज भी होता, कभी लड़ भी बैठता, तब भी वह मरीजों की अनदेखी नहीं करती थी. उस समय ये मरीज मुझे दुश्मन लगते और अस्पताल रकीब. पर यह मेरी मजबूरी थी क्योंकि मुझे सलोनी से प्यार था.''

''उस से शादी नहीं हुई? पूरी कहानी जानने की गरज से मैं ने पूछा.''

भैरों सिंह का दमकता मुख कुछ फीका पड़ गया. वे बोले, ''हम दोनों तो चाहते थे, उस के घर वाले भी राजी थे.''

''फिर बाधा क्या थी?'' मैं ने पूछा तो भैरों सिंह ने बताया, ''मैं अपने मांबाप का एकलौता बेटा हूं. मेरी 4 बहनें हैं. हम राजपूत हैं, जबकि सलोनी ईसाई थी. मैं ने अपनी मां से जिद की तो उन्होंने कहा कि तुम जो चाहे कर सकते हो, परंतु फिर तुम्हारी बहनों की शादी नहीं होगी. बिरादरी में कोई हमारे साथ रिश्ता करने को तैयार नहीं होगा.

''मेरे कर्तव्य और प्यार में कशमकश शुरू हो गई. मैं किसी की भी अनदेखी करने की स्थिति में नहीं था. इस में भी सलोनी ने ही मेरी मदद की. उस ने मुझे मां, बहनों और परिवार के प्रति अपना फर्ज पूरा करने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया.

''मां ने मेरी शादी अपनी ही जाति में तय कर दी. बड़ी धूमधाम से शादी हुई. सलोनी भी आई थी. वह मेरी दुलहन को उपहार दे कर चली गई. उस के बाद मैं ने उसे कभी नहीं देखा. विवाह की औपचारिकताओं से निबट कर जब मैं अस्पताल गया तो सुना, वह नौकरी छोड़ कर कहीं और चली गई है. बाद में पता चला कि वह दूसरे शहर के किसी अस्पताल में नौकरी करती है और वहीं उस ने शादी भी कर ली है.''

''आप ने उस से मिलने की कोशिश नहीं की?'' मैं ने पूछा.

''नहीं,'' भैरों सिंह ने जवाब दिया, ''पहले तो मैं पगला सा गया. मुझे ऐसा लगता था, न मैं घर के प्रति वफादार रह पाऊंगा और न ही इस समाज के प्रति, जिस ने जातपांत की ये दीवारें खड़ी कर रखी हैं. परंतु शांत हो कर सोचने पर मैं ने इस में भी सलोनी की समझदारी और ईमानदारी की झलक पाई. ऐसे में कौन सा मुंह ले कर उस से मिलने जाता. फिर अगर वह अपनी जिंदगी में खुश है और चाहती है कि मैं भी अपने वैवाहिक जीवन के प्रति एकनिष्ठ रहूं तो मैं उस के त्याग और वफा को धूमिल क्यों करूं? अब यदि वह अपनी जिंदगी और गृहस्थी में सुखी है तो मैं उस की जिंदगी में जहर क्यों घोलूं?''

''अब अस्पताल में इतना क्यों रहते हैं? और यह कहानी क्यों लिखवा रहे हैं?'' मैं ने उत्सुकता दिखाई.

भैरों सिंह ने गहरी सांस ली और धीमी आवाज में कहा, ''मैं ने आप को बताया था न कि मैं उस का अधिक से अधिक साथ पाने के लिए उस की ड्यूटी के दौरान उस की मदद करता था, पर दिल में उस की कर्मनिष्ठा और सेवाभाव से चिढ़ता था. अब मुझे वह सब याद आता है तो उस की निष्ठा पर श्रद्धा होती है, खुद के प्रति अपराधबोध होता है. अब मैं मरीजों की सेवा, प्यार की खुशबू मान कर करता हूं और मुझे अपने अपराधबोध से भी नजात मिलती है.''

भैरों सिंह की आवाज और धीमी हो गई. वह फुसफुसाते हुए से बोले, ''अब मैं सिर्फ एक बात आप को बता रहा हूं या कहिए कि राज की बात बता रहा हूं. इस अस्पताल के समूचे वातावरण में मुझे अब भी वही खुशबू महसूस होती है, सलोनी के प्यार की खुशबू. रही बात कहानी लिखने की, तो मेरे पास उस तक अपनी बात पहुंचाने का कोई जरिया भी तो नहीं है. अगर वह इसे पढ़ेगी तो समझ जाएगी कि मैं उसे कितना याद करता हूं. उस की भावनाओं की कितनी इज्जत करता हूं. यही प्यार अब मेरी जिंदगी है.''

विचारों की बयार

विजय गर्ग

एक बेहतर जीवन तभी जिया जा सकता है, जब हम अपने विचारों पर निरंतर गौर करते रहें। सोच- विचार ही हमारी हर गतिविधि और हमारी दिनचर्या के रंग-रूप को निर्धारित करते हैं। शोध बताते हैं कि हर पल हम विचारों के घेरे में ही रहते हैं। तरह-तरह के हजारों विचार हर समय हमारे विवेक को चुनौती देते रहते हैं। यह सच है कि हमारे विचार हमारे माहौल के अनुसार ही पैदा होते हैं। हम सबने महसूस किया है कि जिस समय हम सजधज कर किसी दावत या जश्न में अपने मनपसंद साथी के संग शामिल होते हैं, उस समय हमारे विचार उमंग तथा आनंद से भरे होते हैं। जब हम किसी विपरीत या अनचाहे माहौल में होते हैं, तब हमारे विचार बेहद नकारात्मक या उदासी भरे होते हैं। मसलन, जब हम टिकट आदि के लिए लंबी कतार में प्रतीक्षारत होते हैं या फिर सड़क पर जाम में फंसे हुए होते हैं तब हमारी विचारशीलता एकदम अलग होती है।

दरअसल, आमतौर पर हम अपने माहौल से प्रभावित होकर अपने विचारों के बोझ से दबे रहते हैं और उसी के अनुरूप व्यवहार करते हैं। मगर इतिहास गवाह है कि जो माहौल से अलग हटकर व्यावहारिक बुद्धि का इस्तेमाल करता है वह जीवन को संवार और निखार लेता है। यह सन 1912 के ओलंपिक खेलों की बात है, जहां जिम थार्प, जो ओक्लाहोमा के एक मूल अमेरिकी थे, अमेरिका का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। जिस दिन उनकी प्रतियोगिता होनी थी, किसी ने चुपके से उनके जूते चुरा लिए ताकि वे दौड़ में शामिल न हो सकें। जिम को वहां किसी ने कहा कि तुरंत इसकी शिकायत करो, अर्जी लिखो । मगर जिम जानते थे कि इसमें समय बर्बाद होगा। उनको तो मिनटों में ही जल्दी कुछ करना था । जिम ने ठंडे दिमाग से सोचा। पास ही एक कचरा पात्र को खंगाला और उसमें से दो जूते खोजे और वही पहन लिए। मगर इनमें से एक जूता बड़ा था, इसलिए उन्हें एक अतिरिक्त जुराब भी पहननी पड़ी। इन असमान से जूतों को पहनकर भी जिम ने उस दिन दो स्वर्ण पदक

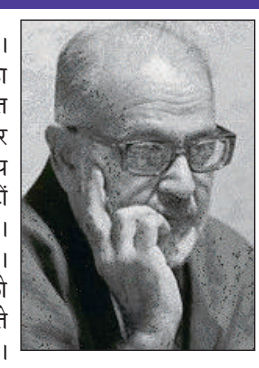

जीते। यह घटना अपने माहौल को सूझ-बूझ से सकारात्मक बनाने और विजेता बनने का एक महान उदाहरण बना। एक समाचार पत्र ने तो यहां तक लिखा कि वह जलनखोर और नादान जूता चोर अब बहुत पछता रहा होगा, क्योंकि ईर्ष्यालु होकर उसने एक विजेता की राह में बाधक बनने का पाप अपने सिर ले लिया ।

हमें अपने जीवन की परेशानियों को बहाना नहीं बनने देना चाहिए। क्या हुआ अगर जिंदगी हमेशा न्यायपूर्ण नहीं रही ! सवाल यह है कि आज हम इसके बारे में क्या करने वाले हैं। चाहे सुबह उठते ही हमें कोई कठिनाई मिली हो- चोरी हुए सामान, खराब सेहत, असफल रिश्ते या कोई डूबा हुआ व्यापार । इन्हें अपने सफर में नहीं बनने देना चाहिए। हमारे पास या तो बहाने हो सकते हैं या फिर परिणाम, लेकिन दोनों एक साथ नहीं। अपने जीवन में हम अक्सर बहुत सारी चीजों के दर्द को कंधे पर लादे हुए फिरते हैं। अपने गलत फैसले को सही या गलत के सांचे में फिट कर देते हैं। असली बात यह है कि हालात न तो कभी सही होते हैं, न कभी गलत होते है । इसे एकतरफा हुए बगैर समझा जा सकता है। यानी जो कुछ भी अनचाहा है उसे भुलाया जाना, छोड़ देना, माफ कर देना और आगे बढ़ जाना हमारे हाथ में है और एकदम संभव भी है।

जिस जगत हम जीवन यापन करते हैं, वह एक गहरी चेतना से सराबोर आईना है। यह चेतना ही हर चीज को संभालती है या गिरा देती है। जो चेतना को सबसे ऊपर रखते हैं, जीवन उनको गतिमान करता रहता है। हम अपने आज पर बीते कल को किस तरह लागू कर रहे हैं, यह पूरी तरह से हमारे ही हाथ में है। कटु स्मृति ह किसी के साथ होती है। मगर सच्चे और सही लोग उससे हटकर सुखद याद के झूले में ही झूलते हैं। सूझ-बूझ का मजबूत घेरा हमें हर तरह की असहजता से लोहा लेना सिखा देता है। ऐसे मजबूत दिमाग वालों से हम खाली गिलास के बारे में सवाल करेंगे तो वह हंसते हुए कुछ जवाब देंगे कि गिलास तो हवा से लबालब है ।

जिस तरह हम अपने कमरे में कोई कचरा नहीं रखते, अपने तन पर मैल नहीं जमने देते, उसी तरह मन को भी हर तरह के कचरे से मुक्त ही रखना चाहिए। बुरी भावना, बुरी आदत, बुरे विचार पर एकाग्रता यह हमको वैसा ही बुरा बना देता है। हमारे विचार जीवन के ऐसे वाहन हैं, जो हमें उन्नति या अवनति के सफर पर ले जाते हैं। इस संदर्भ में एक प्रसंग का जिक्र किया जा सकता है। एक जिज्ञासु छात्र ने अपने अध्यापक से पूछा कि व्यक्तित्व में निखार के लिए हमें क्या करना चाहिए ? अध्यापक ने कहा कि लोग हमें चार तरीके से देखते - समझते हैं। हम क्या बोलते हैं, कैसे बोलते हैं, क्या करते हैं और कैसे दिखते हैं। इन्हीं के हिसाब से हमारा अच्छा प्रभाव पड़ सकता है और बुरा भी। अक्सर देखने में आता है कि लोग अधिक लगाव और चाव बस अपने पहनावे पर रखते हैं, ताकि उनके पहनावे से दूसरों पर प्रभाव पड़ सके ! असल में पहनावा तो एक छोटा-सा पहलू हो सकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि हम अपने विचारों से दूसरों को अपने प्रि कैसा अनुभव करा सकते हैं, ताकि सामने वाले को लगे कि वह कुछ खास है। जो हमसे मिलकर खुद को खास महसूस करेगा, वह हमसे और भी अधिक बार मिलना चाहेगा।

हमारा मन इस ब्रह्मांड की व्यापक व्यवस्था का हिस्सा है। इसलिए मन की सेहत बहुत जरूरी होती है। हम गंदे, मटमैले और प्रदूषित विचारों के साथ अच्छा जीवन नहीं जी सकते हैं। दार्शनिक सुकरात अपने शिष्यों को यही बात समझाते थे कि यह जिंदगी आपकी है, इसे कोई और नहीं चला सकता... न कोई जीव-जंतु और न कोई दुखद वातावरण । यह केवल हमारी जिम्मेदारी है। हमें अपनी संतुलित सोच से इसे खुशी-खुशी निभाना चाहिए।

विकास के साथ सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण जरूरी

विजय गर्ग

भारत एक बड़ा प्रजातंत्र है, जिसका संविधान धर्मनिरपेक्षता की शर्त के तहत वादा करता है कि यहां सभी धर्मों का सम्मान किया जाएगा और कट्टरवाद को त्यागा जाएगा। इसका उद्देश्य यह है कि लोग विभाजित होकर एक-दूसरे में वैमनस्य न फैलाएं। गंगा-जमुना संस्कृति का आदान-प्रदान केवल स्थान विशेष तक सीमित न रहे, बल्कि पूरे देश में लोगों को अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर एकता के सिद्धांत पर आधारित विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए।

सरकार ने भारत को एकजुट और सशक्त बनाने के लिए कई प्रयास किए हैं। सबसे पहले, जीएसटी के रूप में 'एक देश, एक कर' की व्यवस्था लागू की गई। इसके बाद, 'एक देश, एक चुनाव' का प्रस्ताव और एकीकृत सिविल कोड की स्थापना पर चर्चा की जा रही है। हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाने का निर्णय लिया गया था, क्योंकि देश की अधिकांश आबादी इसे समझती है। हालांकि, दक्षिण भारत विशेषकर तमिलनाडु में इस पर विरोध है, जिससे हिंदी को वह दर्जा नहीं मिल सका जो अपेक्षित था। अगर हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें अपनी भाषा हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाना चाहिए और इस रास्ते में किसी भी प्रकार के कटुता, सांप्रदायिकता या क्षेत्रीयवाद के अवरोध नहीं आने चाहिए। हमें अखंड भारत बनाने के लिए और भी बहुत से कदम उठाने होंगे।

अनुच्छेद 370 और 35-ए के उन्मूलन ने जम्मू-कश्मीर को शेष भारत से जोड़ा, जिससे वहां पर्यटन, तीर्थाटन और फिल्मों की शूटिंग फिर से शुरू हुई। यह भारत की एकता का प्रतीक है। हाल ही में बिहार दिवस को सार्वदेशिक रूप से मनाने की घोषणा की गई है, ताकि यह केवल बिहार तक सीमित न रहे, बल्कि पूरा देश इसे मनाए। बिहार की सांस्कृतिक धरोहर, जिसमें माता सीता, महात्मा बुद्ध, महावीर जैन, गुरु गोबिंद सिंह और आर्यभट्ट की जन्मभूमि की गरिमा भी शामिल हैं, को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में स्वीकार किया गया। यह क्षेत्रीयता की सीमाओं से परे जाकर भारतीय संस्कृति की एकता को बढ़ावा देने का कदम है।

सरकार ने 'एक देश, एक उत्सव' और 'एक देश, एक राशन कार्ड' जैसे कदम उठाए हैं, जो राष्ट्रीय एकता और समावेशिता को बढ़ावा देते हैं। एक राशन कार्ड से देशभर में राशन प्राप्त करने की सुविधा से एक राज्य के लोग अन्य राज्यों में भी सस्ता राशन प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उन्हें रोजगार के नए अवसर मिलते हैं। इसके साथ ही, कई राज्यों में रहने वाले लोग मतदान में भाग नहीं ले पाते क्योंकि वे रोजगार की तलाश में दूर जाते हैं। एक उदाहरण के रूप में स्थिति यह है कि बिहार में रह रहे मूल लोगों के कुल वोटों का 45 प्रतिशत ही मतदान कर पाता है। इस तरह कम मतदान प्रतिशत के कारण एक मजबूत लोकतंत्र का निर्माण नहीं हो रहा।

वहीं 'एक देश, एक उत्सव' के विचार से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि हर राज्य का सांस्कृतिक महोत्सव पूरे देश में मनाया जाए, जिससे देश को सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्र में बांधने में मदद मिलेगी।

सत्तारूढ़ राजनेताओं का यह दावा कि एनडीए सरकार के तहत भारत एकीकृत और अखंड हुआ है, सच में कई विकासात्मक कदम उठाए गए हैं। बिहार जैसे पिछड़े राज्यों में प्राथमिकता के आधार पर विकास हुआ है, जैसे नए अस्पताल, इंजीनियरिंग और पॉलीटेक्निक कॉलेजों की संख्या में वृद्धि, और एयरपोर्टों की संख्या में इजाफा। हालांकि, यह सवाल उठता है कि इस समावेशी विकास के साथ हम भारत को एकता के सूत्र में कैसे बांध सकते हैं?

जाति आधारित आरक्षण, जो जनगणना से जुड़े विवादों का मुख्य मुद्दा है, आज भी देश में एक बड़ी चुनौती है। देश के कई राज्यों में जातीय संघर्ष दुर्भाग्यपूर्ण है। जैसे मणिपुर में जातीय संघर्षों की स्थिति है। यह मैतेई और कुकी जाति का मसला ही नहीं बल्कि वहां छोटी-छोटी जनजातियां भी अपने लिए आरक्षण मांग रही हैं। इसके अलावा, उदार अनुकंपा की संस्कृति, जो मेहनत के बजाय मुफ्तखोरी को बढ़ावा देती है, इसको लेकर भी गंभीर चिंताएं हैं।

हम 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनाने की बात तो करते हैं, लेकिन हमें यह समझना होगा कि केवल आर्थिक और भौतिक विकास से देश की एकता नहीं बन सकती। सामाजिक असमानताएं, बेरोजगारी, और वंचित वर्गों की अनदेखी विकास की राह में बाधा डाल रही हैं।

आजादी की पौन सदी बीत चुकी है और हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यदि हम भारत को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बनाना चाहते हैं, तो हमें उन गरीब और वंचित वर्गों को भी मुख्यधारा में लाना होगा, जिनकी आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है। तभी हम एक सशक्त और एकीकृत भारत का निर्माण कर पाएंगे।

युद्धोन्माद व हिंसा के वातावरण में आज ज़्यादा प्रासंगिक हैं महावीर

डा घनश्याम बादल

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जन्मोत्सव के रूप में मनाए जाने वाली महावीर जयंती धार्मिक मात्र नहीं, अपितु सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर वर्तमान समय में तो इसकी प्रासंगिकता और भी अधिक है।

सांसारिक जीवन की विद्रूपताओं से ऊबकर युवावस्था में ही राजकुमार वर्धमान से संन्यासी बने महावीर की शिक्षाएं शाश्वत प्रकाशपुंज हैं । अहिंसा, दया, करुणा व मानव मात्र की भलाई के उनके सिद्धांत आज भी अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करते हैं।

भगवान महावीर का मूल सिद्धांत अहिंसा आज के हिंसक और अशांत वातावरण में व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर शांति और सह-अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी है। सत्य और ब्रह्मचर्य जीवन में सत्य बोलने, ब्रह्मचर्य का पालन करने और इच्छाओं पर संयम रखने मात्र से अनेक समस्याएं हल हो सकती हैं।

उपभोक्तावादी संस्कृति और नैतिक पतन के दौर में महावीर के सिद्धांत व्यक्ति के आत्म-विकास और संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

महावीर स्वामी ने सभी जीवों के प्रति करुणा और समान दृष्टिकोण रखने की शिक्षा दी थी आज के समाज में जाति, धर्म, वर्ग और लिंग के आधार पर हो रहे भेदभाव को मिटाने के लिए यह दर्शन बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।

जैन धर्म में जीवों की रक्षा और प्रकृति के साथ सामंजस्य पर विशेष बल है। जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी के दौर में भगवान महावीर का ₹जियो और जीने दो₹ का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है।

वैश्विक स्तर पर हो रहे संघर्षों, युद्धों और मानवाधिकार उल्लंघनों के संदर्भ में महावीर स्वामी के विचार दुनिया को एक शांतिपूर्ण मार्ग पर ले जाने में सहायक है ध्यान और आत्म-अनुशासन पर बल से आज के तनावग्रस्त जीवन में मानसिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है

महावीर जयंती केवल एक ऐसे जीवनदर्शन की याद दिलाती है जो वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकती है। महावीर की शिक्षाएँ न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए, बल्कि सामाजिक सुधार, नैतिक उत्थान और वैश्विक शांति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

वैसे तो समय के साथ बहुत सारी चीज़ें कालपार हो जाती हैं लेकिन कुछ ऐसे सिद्धांत, घटनाएं एवं व्यक्ति होते हैं जो समय के मार्ग पर ऐसे पदचिन्ह छोड़ जाते हैं जो उनके जाने के बाद भी युगों तक आने वाली पीढ़ियों को एक राह दिखाते हैं और जीवन की सार्थकता का संदेश देते हैं । ऐसे ही महापुरुषों की लंबी श्रृंखला में महावीर स्वामी एक ऐसे ही दैदीप्यमान नक्षत्र हैं ।

महावीर स्वामी के के अनुसार सत्य के पक्ष में रहते हुए किसी के हक को मारे बिना, किसी को सताए बिना, अपनी मर्यादा में रहते हुए पवित्र मन से, लोभ लालच किए बिना, नियम से बंधकर सुख - दुख में समान आचरण करके ही सार्थक जीवन जीया जा सकता है। उनका कहना था कि अगर जीना चाहते है तो दूसरों को भी जीने दो। तभी एक सार्थक जीवनजी सकते हैं, अपनी तृष्णा एवं लालच से दूसरों की शांति भंग मत होने दें , तभी सच्ची शांति प्राप्त हो सकती है।'

महावीर स्वामी का जीवन एक शांत पथिक का जीवन था, जब अनंत बार भोग लेने के बाद भी उनके जीव को तृप्ति नहीं हुई तब भोगों से मन हट गया, किसी चीज की चाह नहीं रही। परकीय संयोगों से बहुत कुछ छुटकारा मिल गया। अब जो कुछ भी रह गया उससे भी छुटकारा पाकर महावीर मुक्ति की राह देखने लगे। 30 वर्ष की आयु में ही त्रिशलानन्दन महावीर कर्मों का बन्धन काटने के लिये तपस्या और आत्मचिंतन में लीन रहने का विचार करने लगे। कुमार की विरक्ति का समाचार सुनकर माता-पिता को बहुत चिंता हुई। कुछ ही दिनों पहले कलिंग के राजा जितशत्रु ने अपनी सुपुत्री यशोदा के साथ कुमार वर्द्धमान का विवाह किया था। माता पिता व परिजनों ने उन्हे बहुत समझाया पर मुक्ति के राही को भोगों के लालच जरा भी विचलित नहीं कर सके और अंततः माता-पिता को मोक्षमार्ग की स्वीकृति देनी पडी।

अपनी शिक्षाओं में महावीर स्वामी ने कहा, ''प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकता है। कर्मों के कारण आत्मा का असली स्वरूप अभिव्यक्त नहीं हो पाता है। कर्मों को नष्ट कर शुद्ध, बुद्ध, निरज्जन और सुखरूप स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। जीवन के सार तत्त्वों का प्रचार करते हुए भगवान महावीर अंतिम समय मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे। वहाँ के उपवन में कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार, 15 अक्टूबर, 527 ई0 पू0. को 72 वर्ष की आयु में उन्हें निर्वाण प्राप्त हुआ।

आज जब दुनिया युद्ध के संकट, लालच एवं तृष्णा से अशांत होती जा रही है तब महावीर स्वामी की शिक्षाओं की कहीं ज्यादा ज़रुरत है । आज काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ व प्रतिशोध बढ़ते जा रहे हैं व जप, तप, त्याग न के बराबर रह गए हैं ऐसे में महावीर और भी प्रासांगिक हो जाते हैं ।

महावीर के उपदेशों का सार जीव मात्र के प्रति दयाभाव रखना है। अस्तेय के रूप में वे लालच, जमाखोरी व चोरी की प्रवृत्ति को मानव मात्र से दूर रखने का मंत्र देते हैं, ब्रह्मचर्य का पालन करने की उनकी सीख पर यदि मानव चले तो समाज से बलात्कार जैसी समस्याएं जड़ से ही समाप्त हो जाएं ।

महावीर स्वामी ने जो बातें कहीं वे केवल जैन धर्म के अनुयाईयों पर ही नहीं वरन् सारे मानव समाज पर असर करती हैं। अहिंसा का महत्व किसी से छुपा नहीं है । लालच व भ्रष्टाचारण के गर्त में डूबते मानव के मानवीय गुण लौटाने में अस्तेय व अचौर्य क्या नहीं का सकते? ब्रह्मचर्य समाज व देश तथा व्यक्ति को ताकत ही नहीं देता वरन् उसका उद्धार करता है, उसका पारिवारिक जीवन शुद्ध व सात्विक करता है । आज भी स्वामी महावीर की शिक्षाएं दुनिया को मुक्ति का मार्ग दिखाने में सक्षम हैं ।

सोशल मीडिया की "यारी", रिश्तों पर पड़ रही भारी

प्रदीप कुमार वर्मा

खुद के फोटो और वीडियो को लाइक कराने की ललक , सब्जेक्ट को शेयर और सब्सक्राइब कराने की मिन्नत और खुद के अकाउंट को फॉलो करा कमेंट पाने का जुनून, कुल मिलाकर लोगों की जिंदगी में अब यही पांच शब्द हावी हैं। सोशल मीडिया पर भले ही दोस्ती का दायरा बढ़ रहा है और दोस्तों की तादाद भी लाखों में है लेकिन आज के दौर में लोग अपने ही घर-परिवार में अकेलेपन से जूझ रहे हैं। यह सोशल मीडिया का एडिक्शन ही कहा जाएगा कि एक ही कमरे में बैठे लोग एक दूसरे से बात करने की बजाय बहुत दूर बैठे अपने कथित बनावटी दोस्तों के साथ चैट करने में मशगूल है। यही वजह है कि लोग सोशल मीडिया पर बात करने के लिए लाचार हैं तथा यही "यारी" ओर लाचारीअब रिश्तों पर भारी पड़ रही है। मनुष्य एक विचारशील एवं सामाजिक प्राणी है। यही वजह है कि मनुष्य अपने विचारों को समाज एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ साझा करना चाहता है। इस कार्य में मीडिया भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपरागत मीडिया के रूप में हम समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टीवी एवं रेडियो को ही जानते हैं। लेकिन बीते कुछ सालों में परंपरागत मीडिया के इतर एक नया मीडिया हम सब के "रूबरू" है। वस्तुत: यही सोशल मीडिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के रूप में आज फेसबुक, व्हाट्सएप्प, इंस्टाग्राम, थ्रेड, स्नैपचैट, मैसेंजर, ट्विटर एवं टेलीग्राम शामिल हैं। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड है, जिसमें इंटरनेट के माध्यम से हम अपनी पहुंच बना सकते हैं। सोशल मीडिया की उपयोगिता की वजह से आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है।

सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह द्रुत गति से सूचनाओं का प्रभावी तथा "रियल टाइम आदान-प्रदान करने में सहायक है। इसके साथ ही सोशल मीडिया में व्यक्तिगत एवं सामूहिक बातचीत के साथ-साथ फोटो, वीडियो तथा पैसों के लेनदेन की सुविधा भी उपलब्ध है। इसी कारण से

आज यह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हर आम और खास की जरूरत बन गए हैं। कई साल पहले समाज में ड्रग्स, शराब, निकोटीन ओर जुआ को ही लत माना जाता था। लेकिन आज के दौर में सोशल मीडिया भी एक लत के रूप में समाज के सामने आया है। सोशल मीडिया और इंटरनेट ने इस तरह लोगों को अपने जाल में फँसाया है कि लोग स्क्रॉलिंग करते-करते कई-कई घंटे बिता देते हैं।

कमाल की बात यह है कि उन्हें खुद ही पता नहीं होता कि वह सोशल मीडिया पर अपने कितने घंटे बर्बाद कर चुके हैं जिसके दुष्प्रभाव के चलते लगातार लोगों में नींद की समस्या देखने को मिल रही है। सोशल मीडिया के घातक दुष्परिणाम पर गौर करें तो एक तरफ जहां यूज़र्स के ढ़ेरों दोस्त बन रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ यह लोगों को दुख और अकेलापन भी दे रहा है। सोशल मीडिया की लत इतनी बढ़ चुकी है कि लोग अपनी पर्सनल लाइफ और उससे संबंधित बातों को सार्वजनिक रूप में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करने में जुटे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जुड़े रहने की इस समूची कवायद का सबसे दुखद पहलू यह है कि इस तथ्य पर सोचने की बजाय लोग आज के दौर में इसे सोशल स्टेटस और अपनी लोकप्रियता मान रहे हैं।

ढसोशल मीडिया प्लेटफार्म के अधिकतम उपयोग और लत के चलते जहां आंख और मस्तिष्क समेत अन्य अंगों के लिए गंभीर स्वास्थ्य खतरा पैदा हो रहा है, वही सामाजिक एवं पारिवारिक रिश्तों में भी दरार आ रही है। वजह है कि किसी वजह से आपसी रिश्तों में आई खटास का उपचार लोग अब सोशल मीडिया पर गैरों से बात करने में ढूंढ रहे हैं। यही नहीं सोशल मीडिया के जरिए किसी से भी बात या कॉन्टैक्ट करना इतना आसान हो गया है, कि लोग साथ में बैठकर भी एक-दूसरे से बात नहीं करते हैं और सोशल मीडिया के माध्यम से कथित दोस्त बनाकर उनसे ही अपने सुख दुख की गुफ्तगू कर रहे हैं। जिसका सीधा दुष्प्रभाव लोगों के रिश्तों में देखने को मिल रहा है। लोग फैमिली टाइम बिताने के बजाय मोबाइल पर बात करना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। जानकारों का कहना है कि सोशल मीडिया का यह ट्रेंड लोगों के जीवन के लिए खासा खतरनाक है और इस पर नियंत्रण करना बहुत जरूरी है। इन दिनों सोशल मीडिया लोगों की लाइफ पर इतना हावी हो चुका है कि लोग बिना मोबाइल और बिना सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के पांच मिनट भी नहीं रह पाते हैं जिसका सीधा असर लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर देखने को मिल रहा है। सोशल मीडिया के कारण मानसिक रूप से बीमारों की संख्या बढ़ रही है। लोग ऑनलाइन धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। डिप्रेशन की बीमारी भी भी बढ़ रही है। सोशल मीडिया को ज्यादा इस्तेमाल घातक है। कुल मिलाकर आज जरूर इस बात की है की सोशल मीडिया की मायावी दुनिया की वजह हम अपने सामाजिक और वास्तविक दुनिया को पहचाने जिससे रिश्तो में मधुरता और स्थिरता कायम रह सके।

प्रदीप कुमार वर्मा
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

किसी को उजाड़ कर बसे तो क्या बसे (हैदराबाद के जंगलों की व्यथा)

कभी थे ये हरियाली के गीत,
जहाँ पंछियों की थी मधुर प्रीत।
पेड़ों की छाँव में बजता था जीवन,
अब वहाँ गूंजता है मशीनों का क्रंदन।

जहाँ हिरण नाचते थे खुले आँगन में,
वहाँ अब बिछी है सड़कें बंजर मन में।
किसे पड़ी थी इन साँसों की राह,
जब विकास का नारा बना तबाही की चाह।

कटते रहे बरगद, पीपल, साल,
गिरे शालवन जैसे टूटी कोई दीवार।
आदिवासी रोये, पशु हुए बेघर,
पर शहर को चाहिए था नया एक घर।

किसी को उजाड़ कर बसे तो क्या बसे,
अगर जड़ें ही न बचीं तो फले कौन हँसे?
जिस मिट्टी ने जीवन को पाला,
उसी को उजाड़ा, है ये तमाशा काला।

विकास की दौड़ में हमने खोया क्या-क्या,
शायद ये सवाल अब पूछेगा सवेरा।
कंक्रीट के जंगलों में क्या बचेगी हवा,
जब पेड़ों की जगह केवल छाया धुआँ?

चलो थम जाएँ, थोड़ा सोच लें,
हर काटे पेड़ के आगे झुक के रो लें।
क्योंकि जो उजाड़ कर बसते हैं राजमहल,
वहीं इतिहास में कहलाते हैं अकल का विहल।

किसी को उजाड़ कर बसे तो क्या बसे,
वो नींव ही हिलती है, जहाँ करुणा मरे।

प्रियंका सौरभ

भगवान महावीर: मौन में अनहद नाद, त्याग में अनंत प्रकाश

जब समय की धारा में मानवता भटकने लगती है, जब हिंसा की आंधी, लोभ की लपटें और असत्य का कोहरा चारों ओर छा जाता है, तब इतिहास के पन्नों से एक ऐसी महान आत्मा का प्रकाश उभरता है, जो न केवल अपने युग को आलोकित करती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक शाश्वत प्रेरणा बन जाती है। लगभग ढाई हजार साल पहले वैशाली के निकट कुंडलपुर की पावन धरती पर जन्मे भगवान महावीर स्वामी ऐसी ही एक अलौकिक विभूति थे। उनका आगमन केवल एक तीर्थंकर का जन्म नहीं था, बल्कि यह एक ऐसी क्रांति का सूत्रपात था, जिसने मानव चेतना को अहिंसा, करुणा और सत्य के उस शिखर तक पहुंचाया, जहां से जीवन का सच्चा अर्थ समझ में आता है। उनके विचार आज भी उतने ही जीवंत और प्रासंगिक हैं, जितने उस काल में थे, जब उन्होंने संसार को यह सिखाया कि हिंसा से नहीं, प्रेम से, और लालच से नहीं, संयम से ही सच्ची विजय प्राप्त होती है।

599 ईसा पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को जन्मे भगवान महावीर जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे, परंतु उनका जीवन और दर्शन किसी एक संप्रदाय की परिधि में बंधकर नहीं रहा। वे एक विश्व-गुरु थे, जिनके संदेश ने न केवल भारत, बल्कि समस्त मानवता को एक नई राह दिखाई। ₹अहिंसा परमो धर्मः₹—यह उनका वह अमर सूत्र था, जो केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन का वह आधार है, जिस पर व्यक्तिगत शांति और सामाजिक समृद्धि की इमारत खड़ी की जा सकती है। उनके जीवन की सबसे बड़ी शिक्षा यह थी कि सिद्धांतों को केवल बोलना पर्याप्त नहीं, उन्हें जीना पड़ता है। और यही उन्होंने किया—राजसी वैभव को ठुकराकर, सांसारिक सुखों को त्यागकर, और 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद कैवल्य ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने यह सिद्ध कर दिखाया कि आत्मा की शक्ति ही सच्ची शक्ति है।

महावीर का जीवन एक चलता-फिरता विश्वविद्यालय था। 30 वर्ष की आयु में संन्यास लेने के बाद उन्होंने जो मार्ग चुना, वह आसान नहीं था। नंगे पांव, बिना किसी सांसारिक संपत्ति के, मौसम की मार झेलते हुए, लोगों के ताने सुनते हुए भी वे अडिग रहे। उनकी तपस्या केवल शारीरिक कष्टों तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक आंतरिक यात्रा थी—मन को वश में करने की, क्रोध को शांत करने की, और लोभ को समाप्त करने की। जब उन्हें कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ, तब उन्होंने 30 वर्षों तक देश-देशांतर में घूमकर लोगों को यह समझाया कि जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं, बल्कि आत्मा की मुक्ति है। उनके उपदेशों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जैसे पंच महाव्रत थे, जो आज भी मानव जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने का रास्ता दिखाते हैं।

आज का युग भगवान महावीर के संदेशों की प्रासंगिकता को और भी गहराई से रेखांकित करता है। विश्व भर में हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, और पर्यावरणीय संकट अपने चरम पर हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दशक में हिंसक संघर्षों के कारण 20 लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं, और जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाओं में 35% की वृद्धि हुई है। ऐसे में भगवान महावीर का ₹जियो और जीने दो₹ का सिद्धांत केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक समाधान है। यदि विश्व की जनसंख्या का एक हिस्सा भी उनके अहिंसा और संयम के मार्ग को अपनाए, तो न केवल मानवीय संघर्ष कम होंगे, बल्कि प्रकृति के साथ हमारा रिश्ता भी संतुलित हो सकता है। उदाहरण के लिए, शाकाहारी जीवनशैली को अपनाने से न केवल हिंसा कम होती है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आती है—एक तथ्य जो वैज्ञानिक अध्ययनों से भी प्रमाणित है।

भारत में जैन समुदाय इसका जीवंत उदाहरण है। लगभग 45 लाख जैन अनुयायी आज भी महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारते हैं। वे न केवल अहिंसा का पालन करते हैं, बल्कि दान, संयम और सामाजिक सेवा के माध्यम से समाज को मजबूत करते हैं। यह कोई संयोग नहीं कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में अहिंसा और सह-अस्तित्व की भावना आज भी जीवित है—इसका श्रेय महावीर जैसे महापुरुषों के दर्शन को जाता है। उनके पंच महाव्रत आज भी उतने ही प्रभावी हैं। अहिंसा हमें हिंसा से दूर रखती है, सत्य हमें नैतिकता सिखाता है, अस्तेय चोरी और लालच से बचाता है, ब्रह्मचर्य संयम का पाठ पढ़ाता है, और अपरिग्रह हमें संचय की प्रवृत्ति से मुक्त करता है। ये सिद्धांत न केवल व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाते हैं, बल्कि सामूहिक रूप से समाज को भी समृद्ध करते हैं।

महावीर जयंती का दिन हमारे लिए महज एक उत्सव का अवसर नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र ठहराव है—एक ऐसा क्षण जो हमें अपनी आत्मा के गहरे कोनों में झांकने और आत्म-मंथन करने का अवसर देता है। यह हमें जागृत करता है कि सच्चा धर्म मंदिरों की भव्यता या रस्मों के शोर में नहीं, बल्कि हमारे रोजमर्रा के कर्मों की सादगी और पवित्रता में बसता है। यह दिन हमें प्रेरणा देता है कि हम अपने भीतर छिपी कमजोरियों—हिंसा की आग, क्रोध की उग्रता, और ईर्ष्या के विष—को न केवल पहचानें, बल्कि साहस के साथ उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लें। आज के इस युग में, जब सोशल मीडिया का मायाजाल नफरत की आंधी और विभाजन की दीवारें खड़ी कर रहा है, महावीर का अमर संदेश एक प्रकाशस्तंभ बनकर उभरता है—यह हमें सिखाता है कि वाणी में संयम और विचारों में निर्मलता ही वह अजेय शक्ति है, जो हमें सच्चे अर्थों में मानव बनाती है।

हमारे सामने एक अनंत संभावनाओं का द्वार है—या तो हम उस भयंकर अंधेरे में विलीन हो जाएं, जहां हिंसा, स्वार्थ और विनाश की आंधियां सब कुछ कुचल रही हैं, या उस चिरप्रदीप्त ज्योति को आत्मा से थाम लें, जो महावीर की तपस्वी साधना से प्रज्ज्वलित हुई है। यह ज्योति हमारे हृदय में शांति का सौंदर्य नृत्य रचती है और एक ऐसी दुनिया का स्वप्न संजोती है, जहां हर प्राणी प्रेम की मखमली लहरों पर झूमता, सम्मान के स्वर्णिम आकाश में विहार करता हो। आज, इस अमर बेला में, एक अटूट प्रतिज्ञा का अलौकिक दीप प्रज्ज्वलित करें—अहिंसा को अपनी प्राणवायु का मधुर राग बनाएं, सत्य को वह प्रचंड ज्वाला जो हर कपट को राख कर दे, और करुणा को वह किरणमाला जो विश्व के हर कण को प्रेम की स्वर्णिम छटा से नहला दे।

भगवान महावीर का जीवन एक ओजस्वी संदेश है, एक दमकता हुआ आह्वान है, और एक अखंड प्रेरणा का प्रतीक है। वे हमें सिखाते हैं कि सच्ची विजय बाहरी मैदानों पर नहीं, बल्कि अपने मन के गहन संग्राम को जीतने में छिपी है। जब हम उनके इस अलौकिक दर्शन को आत्मसात करेंगे और अपने कर्मों में ढालेंगे, तब तक उनका तेजस्वी प्रकाश हमारे जीवन, हमारे समाज, और इस धरती को अनंत आलोक से भरता रहेगा। यही उनकी शाश्वत जयंती की महिमा है—एक ऐसी विजय जो समय की हर सरहद को पार कर, अनंत काल तक ध्वनित होती रहेगी और मानवता को मुक्ति का मार्ग दिखाएगी। महावीर जयंती की अनंत, अनिर्वचनीय शुभकामनाएं। जय महावीर—जय विश्व शांति-जय विश्वमंगल।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आरोग्यम्_परम्_भाग्यम्_का मोदी संदेश

डॉ. वेदप्रकाश

हाल ही में विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वस्थ रहने के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि- स्वास्थ्य ही परम सौभाग्य और संपदा है। उन्होंने स्वस्थ विश्व के निर्माण के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की ओर कहा कि केंद्र सरकार स्वास्थ्य सेवा पर ध्यान केंद्रित करती रहेगी और लोगों के कल्याण के विभिन्न पहलुओं में निवेश करेगी। अच्छा स्वास्थ्य ही समृद्ध समाज की नींव है। अपने एक्स पोस्ट पर वीडियो साझा करते हुए उन्होंने मोटापे के मुद्दे को उठाया और लोगों से खाना पकाने के तेल का सेवन 10 प्रतिशत तक कम करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा-आरोग्यम्परमम्भाग्यम्यानी आरोग्य ही परम भाग्य, परम धन है।

यहां ध्यान देने की बात यह है कि विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले सबसे बड़े लोकतंत्र के शीर्ष पद पर बैठे प्रधानमंत्री यानी नरेंद्र मोदी प्रत्येक व्यक्ति के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित है और वे समय-समय पर अपने अनेक संदेशों में स्वास्थ्य के लिए जन जागरण भी कर रहे हैं। योग, ध्यान, उपवास, संतुलित खानपान आदि अनेक बातें स्वयं उनकी जीवन शैली का अभिन्न अंग हैं. क्या यह हम सभी के लिए प्रेरक नहीं है? विगत दिनों आई एक रिपोर्ट भी इस विषय में महत्वपूर्ण है जिसमें वर्ष 2050 तक 44 करोड़ से अधिक भारतीय मोटापे से पीड़ित होंगे, ऐसी जानकारी है। निश्चय ही यह बड़ी चिंता और चिंतन का मुद्दा है।

हाल ही में अमेरिका के जान्स होपकिंस विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पाया कि जैसे-जैसे मोटापा बढ़ता है वैसे-वैसे हाइपरटेंशन, डायबिटीज, अनियमित दिल की धड़कन, हृदय रोग, किडनी रोग, पल्मोनरी एंबोलिज्म, खून का थक्का जमना, फैटी लिवर, पित्त की पथरी, दमा, पेट में जलन, हड्डियों और जोड़ों की बीमारी आदि 16 बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। ध्यान रहे ऐसी कोई भी बीमारी शरीर को तो कमजोर करती ही है, एक सामान्य व्यक्ति को आर्थिक संकट में भी डालती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति में आरंभ से ही आहार शुद्धि पर विशेष बल रहा है। छांदोग्योपनिषद् में लिखा है- आहारशुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः..। अर्थात आहार शुद्धि से प्राणों के सत की शुद्धि होती है। सत्व शुद्धि से स्मृति निर्मल और स्थिरमति प्राप्त होती है। स्थिरमति से ही जन्म-जन्मांतर के बंधनों और ग्रंथियों का नाश होता है। बंधनों और ग्रंथियों से मुक्ति ही मोक्ष है। अतः आहार शुद्धि प्रथम नियम और प्रतिबद्धता है। ध्यान रहे आहार केवल शरीर का पोषण ही नहीं करता अपितु मन, बुद्धि, तेज व आत्मा का भी पोषण करता है।

आधुनिकता के नाम पर जीवन शैली भी विभिन्न रूपों में प्रभावित और विकृत होती जा रही है। भाषा, वेशभूषा के साथ-साथ आहार और विहार में भी परिवर्तन आ रहे हैं। देर से सोना फिर देर तक सोना। देर से खाना फिर ज्यादा और अपोषित खाना आदि बातें शारीरिक विकृतियों को जन्म देती हैं। चाऊमीन, पिज़्ज़ा, बर्गर, कोक, पेप्सी जैसे फास्ट फूड आहार का हिस्सा बन रहे हैं। आहार की गुणवत्ता घट रही है। भारतीय जीवन पद्धति में ऋतु के अनुसार भोजन का विधान रहा है। हमारे पूर्वज उसी का अनुसरण करते रहे। वे मोटे अनाज जैसे चना, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के साथ-साथ फलियां, फल, कंदमूल आदि आहार में नियमित रूप से प्रयोग करते थे।

जैसे-जैसे हम अपने परंपरागत, ऋतुगत और जलवायुगत भोजन को छोड़ते चले जा रहे हैं वैसे-वैसे भिन्न-भिन्न रूपों में स्वास्थ्य को लेकर अनेक

प्रकार की समस्याएं बढ़ रही हैं। बच्चों में नाटा रह जाना, कम वजन, एनीमिया जैसी अनेक परेशानियां बढ़ रही हैं। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-5 के मुताबिक बच्चों व महिलाओं की आधी से ज्यादा आबादी एनीमिया से पीड़ित है। 6 महीने से 5 वर्ष के लगभग 67 प्रतिशत बच्चे एनीमिया से पीड़ित हैं। इसी प्रकार 15 वर्ष से 50 वर्ष की उम्र की लगभग 57 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं।

भारत सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है इसलिए यहां स्वस्थ भोजन के लिए बुनियादी ढांचे की बहुत आवश्यकता है। इसके साथ ही सभी को भोजन और पोषण युक्त भोजन मिले इसके लिए सतत और व्यापक प्रयास करने होंगे। ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के अधिकाधिक प्रयोग के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभावों को देखते हुए उसे कम करने की आवश्यकता है। भारत जैसे देश में कंप्यूटर और मोबाइल का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। बच्चों और बड़ों की आउटडोर गतिविधियां लगातार घट रही हैं जिससे उनकी जीवन शैली गंभीर रूप से प्रभावित हो रही है। मोबाइल अथवा भिन्न-भिन्न प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से बचने के लिए मोबाइल एवं गैजेट आदि की फास्टिंग अपनानी होगी। ध्यान रहे परंपरागत खेल, परंपरागत खानपान और परंपरागत जीवन शैली स्वस्थ रहने का बड़ा आधार हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विगत में भी फिट इंडिया और करो रोग-रहो निरोग जैसे अनेक अभियान चलाकर जन-जन को स्वस्थ रहने का संदेश दे चुके हैं। आवश्यकता है समय रहते हम सभी अपने स्वास्थ्य को लेकर सजग हों। अपोषक आहार को छोड़कर पोषक आहार की ओर बढ़ें।

3 मार्च 2021 को संयुक्त राष्ट्र में वर्ष 2023 को इंटरनेशनल मिलेट्स ईयर मनाने का प्रस्ताव आया था। भारत की ओर से लाए गए इस प्रस्ताव पर 72 देशों का समर्थन मिला और संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 2023 को अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया। इसके बाद से ही राष्ट्रीय और वैश्विक फलक पर मोटे अनाजों की मांग तेजी से बढ़ रही है। आज जब भारत की लगभग 65 प्रतिशत आबादी युवा है, तब यह आवश्यक है कि वह स्वस्थ भी रहे। क्योंकि विकसित भारत की राह स्वस्थ नागरिक के संकल्पों से ही पूरी होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसके लिए लगातार जन जागरण कर रहे हैं। यह सराहनीय और हम सभी के लिए प्रेरक है।

अप्रैल 2025 की तपती चेतावनी: क्या अब भी नहीं जागोगे?

उमेश कुमार साहू

"गर्मी आ गई है" यह वाक्य इस बार सिर्फ मौसम की सूचना नहीं बल्कि धरती की कराह है। भारतीय मौसम विभाग ने चेतावनी दी है कि अप्रैल 2025 में तापमान सामान्य से कहीं अधिक रहेगा लेकिन सवाल यह है कि क्या यह खबर सिर्फ पढ़कर हम फिर अगली खबर पर बढ़ जाएंगे या इस बार रुकेंगे, सोचेंगे, और कुछ बदलने का मन बनाएंगे?

पिछले कुछ वर्षों में भारत ने जो गर्मी देखी है, वह अब इतिहास नहीं, नया वर्तमान बन चुकी है। खेतों की मिट्टी चिटकने लगी है, जलस्रोत सूखते जा रहे हैं, और हवा, जो कभी जीवनदायिनी थी, अब जहरीली लपटों जैसी महसूस होने लगी है। अप्रैल 2025 की यह पूर्व चेतावनी हमें भविष्य के उस दरवाजे पर खड़ा कर चुकी है जहाँ से लौटना नामुमकिन हो सकता है।

किसानों की छाती पर तपता सूरज

खेती सिर्फ धरती का काम नहीं, ये दिल से जुड़ा जज़्बा है। लेकिन रबी की फसल जब पकने को होती है, तब अगर आसमान आग उगलने लगे तो वो मेहनत, वो सपने, वो उम्मीदें - all turn to dust. उच्च तापमान गेहूं और चने की पैदावार को सीधे नुकसान पहुँचाता है। परिणाम? महंगाई, भुखमरी और आत्महत्या की खबरें। क्या कोई देश अपने अन्नदाताओं को यूँ तपते सूरज के

हवाले छोड़ सकता है?

जल है तो कल? पर अब जल ही नहीं बचा!

क्या आपने कभी देखा है एक माँ को, जो अपने बच्चे को एक गिलास पानी के लिए तरसते देखती है? आने वाला समय यही दिखा सकता है। अप्रैल में जब नहरें सूखेंगी, तालाब मिट्टी में बदलेंगे और टैंकरों पर लोगों की लाठियाँ चलेंगी, तब ये खबरें अखबार की सुर्खियाँ नहीं, हमारी ज़िंदगियों की हकीकत बन जाएंगी।

लू नहीं, यह मूक हत्यारा है

हीटवेव एक धीमी मौत है, बिना आहट के आती है और जान ले जाती है। 2015 में 2,500 से ज्यादा लोग लू की चपेट में आकर मारे गए थे। अब 2025 की गर्मी उससे भी विकराल रूप में सामने है। अस्पताल भर जाएंगे, लेकिन बेड नहीं होंगे। गरीब झोंपड़ियों में तपेंगे, बच्चे स्कूल छोड़ेंगे, और कामगार जान जोखिम में डालकर पसीने से अपने परिवार को बचाने निकलेंगे।

शहरों में चिल्लाती चुप्पी

शहरों में एसी चलेंगे, लेकिन बिजली कब तक साथ देगी? जब पावर ग्रिड फेल होगा, तब ऊंची इमारतों में कैद बुज़ुर्ग, छोटे बच्चे और बीमार लोग सबसे पहले शिकार बनेंगे। शहरों की चुप्पी में एक चीख होगी जो शायद कोई न सुने।

और दोषी कौन?

यह आग हमने ही लगाई है। हर वह पेड़ जो काटा गया, हर वह बोतल जो हमने बेवजह फेंकी, हर वह वाहन जो धुएं उगलता रहा। ये सब मिलकर जलवायु को बेकाबू बना चुके हैं। अब दोष देना बंद करो, कार्रवाई शुरू करो।

अब भी समय है, लेकिन थोड़ा ही

सरकारें चेतावनी पर काम करें। राहत नहीं, रक्षा नीति बनाए। स्कूलों को हीटवेव सुरक्षा पाठ्यक्रम पढ़ाएं। जल संरक्षण को राष्ट्रीय आंदोलन बनाएं। और आम नागरिक आप, मैं, हम सब हर दिन एक बदलाव करें - पानी बचाएं, पेड़ लगाएं, ऊर्जा सीमित करें, और सबसे ज़रूरी - ₹निश्चय करें कि अब चुप नहीं बैठेंगे।₹

यह बस गर्मी नहीं, यह भविष्य की कहानी है

अप्रैल 2025 की गर्मी दरअसल एक घोषणा है, कि प्रकृति अब माफ नहीं करेगी। यह अलार्म है जो बज चुका है, अब भी अगर नहीं उठे, तो इतिहास हमसे सवाल पूछेगा - ₹जब सूरज जल रहा था, तुम क्या कर रहे थे?"

कोचिंग इंडस्ट्री की मनमानी: अभिभावकों और छात्रों के भविष्य से खिलवाड़

एलन करियर इंस्टीट्यूट हिसार प्रकरण पर एक सख्त सवाल

हिसार स्थित ALLEN Career Institute पर अभिभावकों ने आरोप लगाए हैं कि संस्थान ने उनके बच्चों का एक शैक्षणिक वर्ष बर्बाद कर दिया और अब जबरन फीस वसूली कर रहा है। यह घटना कोचिंग इंडस्ट्री की अनियंत्रित और मुनाफाखोर प्रवृत्ति को उजागर करती है। देश में कोचिंग संस्थानों पर कोई प्रभावी निगरानी तंत्र नहीं है, जिससे छात्र और अभिभावक शोषण का शिकार हो रहे हैं। लेख में कोचिंग सिस्टम को रेगुलेट करने, पारदर्शिता बढ़ाने, फीस नियंत्रण, और मानसिक स्वास्थ्य सहायता जैसे उपायों की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। शिक्षा को व्यापार नहीं, सेवा मानते हुए जवाबदेही तय करने की अपील की गई है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल अंकों और रैंकों की दौड़ नहीं है, बल्कि यह एक पीढ़ी को संवारने की प्रक्रिया है। लेकिन जब यह प्रक्रिया मुनाफाखोरी के जाल में फँस जाए, तो न केवल एक छात्र का भविष्य दांव पर लग जाता है, बल्कि अभिभावकों का भरोसा और सामाजिक विश्वास भी दरक जाता है। हाल ही में हरियाणा के हिसार में स्थित नामी कोचिंग संस्थान ALLEN Career Institute पर लगे आरोपों ने इसी हकीकत को उजागर किया है।

गंभीर आरोप, गहरी निराशा

कुछ अभिभावकों ने आरोप लगाया है कि ALLEN संस्थान ने न केवल उनके बच्चों का एक वर्ष बर्बाद कर दिया, बल्कि अब फीस की जबरन वसूली की जा रही है। उनका कहना है कि क्लासरूम्स में पढ़ाई का स्तर बेहद कमजोर था, अनुभवी शिक्षकों की जगह बार-बार स्टाफ बदला गया और छात्रों को कोई ठोस मार्गदर्शन नहीं मिला। कोचिंग में दाखिला लेते समय जो वादे किए गए थे, वे सिर्फ प्रचार का हिस्सा थे। जब इन खामियों की शिकायत की गई, तो संस्थान के प्रबंधकों ने रिफंड देने से साफ इनकार कर दिया और उल्टे कानूनी कार्रवाई की धमकी दी। यह कोई एक संस्थान की कहानी नहीं है, बल्कि कोचिंग उद्योग में व्याप्त एक व्यापक समस्या की मिसाल है।

कोचिंग उद्योग: एक बेताज बादशाह

पिछले दो दशकों में देश में कोचिंग इंडस्ट्री ने एक समानांतर शिक्षा व्यवस्था का रूप ले लिया है। राजस्थान के कोटा से लेकर दिल्ली, हैदराबाद, पटना, और अब छोटे शहरों जैसे हिसार तक, कोचिंग सेंटरों की भरमार हो गई है। इनमें से कई संस्थान अपने आप को "India's No.1" बताकर करोड़ों का कारोबार कर रहे हैं। जेईई, नीट, यूपीएससी, बोर्ड परीक्षाएं—हर परीक्षा की तैयारी के लिए एक 'ब्रांड' मौजूद है। लेकिन जब शिक्षा का यह मॉडल केवल व्यवसायिक हितों पर टिका हो, तो नतीजे भयावह होते हैं।

अभिभावकों की मजबूरी और छात्रों पर दबाव

आजकल लगभग हर अभिभावक अपने बच्चों को किसी न किसी कोचिंग संस्थान में भेजने को मजबूर हैं। सरकारी स्कूलों और कई प्राइवेट स्कूलों की गुणवत्ता इतनी गिर चुकी है कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग ही एकमात्र विकल्प बचा है। ऐसे में कोचिंग संस्थान मनमानी फीस वसूलते हैं—कभी 1 लाख, कभी 3 लाख, और कभी-कभी इससे भी ज़्यादा। इस प्रक्रिया में न केवल मध्यवर्गीय और निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार आर्थिक रूप से टूटते हैं, बल्कि बच्चे मानसिक दबाव, अवसाद और आत्मसम्मान की जटिलताओं से भी जूझते हैं। कोटा जैसे शहरों में आत्महत्याओं की बढ़ती घटनाएं इसका कड़वा प्रमाण हैं।

रेगुलेशन का अभाव: सरकार की चुप्पी

भारत में कोचिंग संस्थानों के लिए कोई ठोस नियामक प्रणाली नहीं है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो अरबों का कारोबार करता है, लेकिन जिस पर न कोई शैक्षणिक नियंत्रण है, न प्रशासनिक। न तो इनके पाठ्यक्रमों की निगरानी होती है, न ही इनकी फीस संरचना पर कोई नियम लागू होता है। यह "शिक्षा" के नाम पर चलने वाला मुनाफाखोरी का कारोबार बन चुका है। हिसार में जो कुछ हुआ, वह इसलिए संभव हो सका क्योंकि संस्थान को यह यकीन है कि उनके खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं होगी। स्थानीय प्रशासन, शिक्षा विभाग और सरकार की भूमिका केवल 'नोटिस भेजने' तक सीमित रहती है, और अंततः यह नोटिस भी फाइलों में दफन हो जाते हैं।

उपभोक्ता अधिकार और शिक्षा का सवाल

एक समय था जब शिक्षा को सेवा माना जाता था, लेकिन अब यह एक पूर्ण उपभोक्ता उत्पाद बन चुकी है। ऐसे में क्या छात्रों और अभिभावकों के पास उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत अपने अधिकारों का उपयोग करने का विकल्प नहीं होना चाहिए? क्या शिक्षा सेवा देने वाले संस्थानों को गुणवत्ता, पारदर्शिता और जवाबदेही के मानकों से नहीं जोड़ा जाना चाहिए? यदि कोई छात्र एक वर्ष तक पढ़ाई करता है और अंत में उसे यही पता चलता है कि उसे गुमराह किया गया, तो क्या उसे न्याय नहीं मिलना चाहिए? क्या फीस वापसी एक बुनियादी उपभोक्ता अधिकार नहीं है?

समाधान की दिशा में

रेगुलेटरी बॉडी की स्थापना: सरकार को कोचिंग संस्थानों के लिए एक केंद्रीय नियामक संस्था बनानी चाहिए जो इनकी मान्यता, फीस ढांचा, फैकल्टी योग्यता, और शिकायत निवारण व्यवस्था की निगरानी करे।

फीस नियंत्रण कानून: जैसे निजी स्कूलों के लिए फीस नियंत्रण समितियाँ बनी हैं, उसी प्रकार कोचिंग संस्थानों के लिए भी राज्य स्तरीय समितियाँ बनाई जानी चाहिए जो शुल्क को लेकर पारदर्शिता सुनिश्चित करें।

रिफंड और शिकायत प्रणाली: प्रत्येक संस्थान को छात्र और अभिभावकों की शिकायतों को सुनने और उचित रिफंड नीति लागू करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य सहायता: छात्रों पर बढ़ते दबाव को देखते हुए, कोचिंग संस्थानों में काउंसलिंग सेवाएं अनिवार्य की जानी चाहिए।

स्थानीय निगरानी समितियाँ: जिला स्तर पर शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों और सामाजिक संगठनों की समितियाँ बनाई जाएँ जो इन संस्थानों की नियमित समीक्षा करें।

शिक्षा सेवा है, व्यापार नहीं

हिसार की घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम शिक्षा को एक सेवा के रूप में देख पा रहे हैं, या वह केवल एक बाजार उत्पाद बन चुकी है। जब तक कोचिंग इंडस्ट्री को रेगुलेट नहीं किया जाएगा, तब तक न जाने कितने अभिभावक आर्थिक रूप से टूटते रहेंगे और न जाने कितने छात्रों का भविष्य अधर में लटकता रहेगा। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करवाना नहीं है, बल्कि यह नैतिकता, जवाबदेही और सामाजिक न्याय के मूल्यों की भी शिक्षा होनी चाहिए। यदि यह खुद अन्याय और लालच का केंद्र बन जाए, तो यह पूरे समाज के लिए एक खतरे की घंटी है। अब समय आ गया है कि सरकार, समाज और शिक्षा विशेषज्ञ मिलकर इस 'अनियंत्रित उद्योग' को दिशा दें, ताकि हर बच्चे को न केवल परीक्षा की तैयारी मिले, बल्कि जीवन की तैयारी भी।

–प्रियंका सौरभ

झारखंड में राजकीय चैत्र परव शुभारंभ, तीन शैलियों का छऊ प्रतियोगिता

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। झारखंड का सांस्कृतिक राजधानी स्वरूप सरायकेला कभी एक ओड़िआ स्वतंत्र ए श्रेणी का देशी रियासत (1620-1947) तक । जिसका आजाद भारत में विलय ओडिशा में रखे जाने हेतु होता है ,अपितु नाटकीय घटनाक्रम में 52 वर्ष तक बिहार का अनुमंडल फिर आज झारखंड में दम तोड रहा विश्वप्रसिद्ध उत्कलीय सैन्य छावनी का छऊ नृत्य अब ओडिया नववर्ष आरंभ में इसकी विधिवत आयोजन स्थानीय धार्मिक परंपराओं के साथ हर वर्ष की तरह किया जा रहा है ।जहां ती शैलीयों के छऊ का प्रतियोगिता का आयोजन जिला प्रशासन द्वारा जारी है ।

सरायकेला खरसावां जिला प्रशासन की ओर से राजकीय छऊ नृत्य कलाकेंद्र प्रेक्षागृह में तीन दिन में से प्रथम दो दिन सरायकेला व पुरूलिया (मानभूम) शैली के छऊ नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया गया ।जिसमें जय मां बसंती कला परिषद टेंटोपोसी,राधा कृष्ण कला परिषद पारोलपोसी,शिवमन्दिर छऊ नृत्य क्लब कोटार चारा राजनगर,नव युवक संघ छऊ नृत्य क्लब,भंडारीसाई,सरायकेला छऊ नृत्य कला केंद्र रंगपुर,जय बहादुर कला परिषद टेंटोपोसी,बिनापानी छऊ नृत्य क्लब चौके,श्री श्री शिव शक्ति छऊ नृत्य कलाकेंद्र,देवगिरिसाई कुल आठ दल ने भाग लिया,जिसमें से निर्णायक मंडली के निर्णय को अंचल अधिकारी भोला शंकर महतो ने सभीं प्रतियोगी दलों के बीच प्रथम,द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले दलों के नामों की घोषणा किया,प्रथम स्थान के रूप में नव युवक संघ छऊ नृत्य क्लब भंडारीसाई ,द्वितीय स्थान सरायकेला छऊ नृत्य कलाकेंद्र,रंगपुर तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में शिव मंदिर छऊ नृत्य क्लब,कोटारचारा राजनगर ने ने कब्जा जमाया ।

दुसरे दिन मानभूम शैली के छऊ नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया गया,जिसमें भगवान बिरसा मुंडा छऊ नृत्य कलाकेंद्र गुंडा,आदिवासी मानभूम छऊ नृत्य कलाकेंद्र जामडीह ,नाजरिया छऊ नृत्य कलाकेंद्र चुनचूड़ियां,आदिवासी कुर्मी छऊ नृत्य कलाकेंद्र चुनचूड़ियां,झारखंड विकास परिषद उदाटांड़,गिरिधर कलाकेंद्र चुनचूड़ियां,नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ छऊ एंड फॉक डांस नीमडीह सहित कुल सात दल ने भाग लिया,जिसमें से निर्णायक मंडली के निर्णय को प्रखंड विकास पदाधिकारी यशमिता सिंह ने सभीं प्रतियोगी दलों के बीच प्रथम,द्वितीय तथा तृतीय स्थान पाने वाले दलों के नामों की घोषणा किया,प्रथम स्थान के रूप में झारखंड विकास परिषद उदाटांड़,द्वितीय स्थान आदिवासी कुर्मी छऊ नृत्य कलाकेंद्र चुनचुड़ियां तथा तृतीय स्थान के रूप में गिरधर कलाकेंद्र चुनचुड़िया ने कब्जा जमाया,निर्णायक के रूप में गुरु तपन कुमार पटनायक,गुरु बृजेंद्र पटनायक,गुरु सुधांशु शेखर पानी,गुरु तरुण कुमार भोल,गुरु मनोरंजन साहू उपस्थित थे। कार्यक्रम से पूर्व कार्यकारी अनुमंडल पदाधिकारी निवेदिता नियति समेत अन्य कुछ लोग दीप जलाकर इसका शुभारंभ किया था

उचाना जिला जींद के अंदर नहीं है नगराधीश का कार्यालय फिर भी एक आरोपी महिला अधिकारी ने भेजा पत्र- विनोद कुमार

उचाना/जींद, 8 अप्रैल

प्रेस को जारी एक बयान में आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने बताया कि उन द्वारा मांगी गई सूचना में एक एम. ए. मनोविज्ञान की पूर्णतया फर्जी मार्कशीट पर नौकरी हासिल करने वाली आरोपी महिला श्रीमती सुनील कुमारी सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन, मंडल रोजगार कार्यालय हिसार की अस्थाई ड्यूटी जब उपमंडल रोजगार कार्यालय उचाना जिला जींद में थी तो उन द्वारा पत्र क्रमांक वीजी/420/2021 दिनांक 14.10.2021 के तहत एक पत्र नगराधीश कार्यालय उचाना जिला जींद को भेजा गया है.

हरियाणा की राज्य सरकार बताएं कि उचाना जिला जींद के अंदर कहां पर स्थित है नगराधीश का कार्यालय.

आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने कहा कि राज्य सरकार को इस बारे में स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए कि उचाना जिला जींद के अंदर नगराधीश का कार्यालय कहां पर स्थित है इसकी निष्पक्ष जांच कराई जानी चाहिए.

आरोपी महिला अधिकारी ने कैसे किया कार्यालय में पत्राचार.

उचाना जिला जींद के अंदर नगराधीश कार्यालय में पत्र भेजने के संदर्भ में राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार को इस बारे में आरोपी महिला अधिकारी से स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए कि उचाना जिला जींद के अंदर उन द्वारा जो पत्र भेजा गया था वह पत्र क्या नगराधीश को किस जगह एवं किस पते पर भेजा गया था, क्या वह पत्र सही जगह एवं सही पते पर पहुंच गया था.

उन्होंने कहा कि इससे साफ तौर पर यह साबित होता है कि आरोपी महिला अधिकारी को प्रशासनिक ज्ञान नहीं है.

बड़े आश्चर्यजनक की बात है कि एक पूर्ण फर्जी मार्कशीट पर नौकरी हासिल करने वाली आरोपी महिला अधिकारी को यह भी पता नहीं है कि उचाना जिला जींद के अंदर नगराधीश बैठते हैं या नहीं बैठते हैं.

मैने जिला जींद के उपमंडल रोजगार कार्यालय उचाना से सूचना मांगी तो सूचना के अन्दर आरोपी महिला सुनील कुमारी सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन (अस्थाई ड्यूटी)उचाना जिला जींद द्वारा पत्र नगराधीश उचाना को भेजा गया प्राप्त हुआ, तो मैंने नगराधीश महोदय उचाना के कार्यालय के बारे में जानना चाहा तो उस कार्यालय का पता भी मुझे नहीं मिला, मैं सबूत साथ लेकर गया था। फर्जी मार्कशीट पर नौकरी हासिल करने वाले अधिकारी जहां पद ही स्वीकृत नहीं है वहां पत्राचार कर रहे हैं।

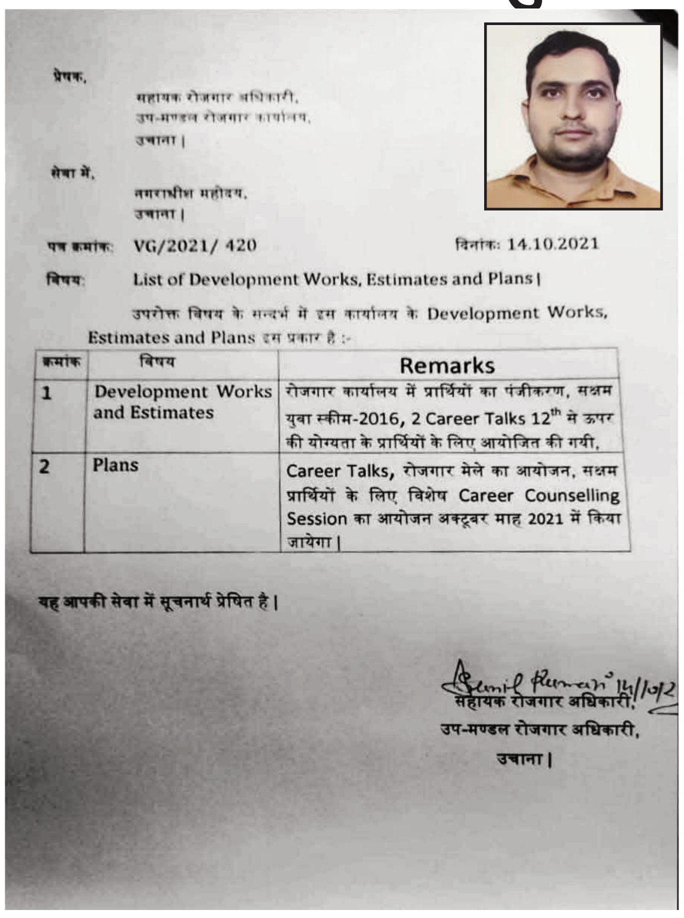

प्रेषक,
सहायक रोजगार अधिकारी,
उप-मण्डल रोजगार कार्यालय,
उचाना।

सेवा में,
नगराधीश महोदय,
उचाना।

पत्र क्रमांक: VG/2021/ 420 दिनांक: 14.10.2021

विषय: List of Development Works, Estimates and Plans।

उपरोक्त विषय के सन्दर्भ में इस कार्यालय के Development Works, Estimates and Plans इस प्रकार है :-

क्रमांक	विषय	Remarks
1	Development Works and Estimates	रोजगार कार्यालय में प्रार्थियों का पंजीकरण, सक्षम युवा स्कीम-2016, 2 Career Talks 12th से ऊपर की योग्यता के प्रार्थियों के लिए आयोजित की गयी,
2	Plans	Career Talks, रोजगार मेले का आयोजन, सक्षम प्रार्थियों के लिए विशेष Career Counselling Session का आयोजन अक्टूबर माह 2021 में किया जायेगा।

यह आपकी सेवा में सूचनार्थ प्रेषित है।

Sunil Kumari 14/10/21
सहायक रोजगार अधिकारी,
उप-मण्डल रोजगार अधिकारी,
उचाना।

स्मार्टफोन–हम नहीं हैं 'रमण' ...!

तुम्हीं से शुरू, तुम्हीं पर हैं खतम,
स्मार्टफोन की चमक होती हजम।
ये डिजिटल दुनिया का सम्मोहन,
हर कोई बना हुआ इसका मोहन।
सुख–सुविधाओं का ये हैं खज़ाना,
क्या? दिन–रात इसमें डूब जाना।

तुम्हीं से शुरू, तुम्हीं पर हैं खतम,
स्मार्टफोन की चमक होती हजम।
यह चकाचौंध भरी आभासी दुनिया,
गहन, खतरनाक अंधेरे में मुनिया।
ऑनलाइन सट्टेबाजी का वह जाल,
आगोश में लेकर करता बुरा हाल।

तुम्हीं से शुरू, तुम्हीं पर हैं खतम,
स्मार्टफोन की चमक होती हजम।
ये हैं विस्तार डिजिटल प्लेटफॉर्मं,
अब इसका खत्म ना होता है चार्म।
आर्थिक स्थिरता हो रही नेस्तनाबूद,
ये लाइलाज बीमारी में सब रहे कूद।

तुम्हीं से शुरू, तुम्हीं पर हैं खतम,
स्मार्टफोन की चमक होती हजम।
आओं मिलकर करें हम सब प्रयत्न,
बांध दो एक समय करिये ये यत्न।
करो स्वयं पर नियंत्रण ले लो प्रण,
डिजिटल युग के हम नहीं हैं 'रमण' ।

संजय एम तराणेकर

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के बतौर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश एम जैन का कार्यकाल प्रारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

सिकंदराबाद। शाखामंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार दिल्ली स्थित नव उद्घाटित राष्ट्रीय कार्यालय में दायित्व हस्तांतरण ग्रहण कर, युवामंच की बागडोर संभालने के पश्चात, दिल्ली की ईस्ट दिल्ली शाखा एवं ईस्ट दिल्ली मिडटाउन शाखा तथा कर्नाटक प्रान्त की बेलगांवी शाखा का दौरा कर, अपने कार्यकाल की शुरुआत के बाद पहली बार हैदराबाद की धरती पर पहूंचने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष का राजस्थानी साफा, शाल माला एवं प्रतिक चिन्ह देकर जोरदार स्वागत किया गया।

उनके स्वागत और सम्मान के लिए ग्रेटर हैदराबाद शाखा से पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ललित जैन , सिकंदराबाद शाखा से निवर्तमान अध्यक्ष जसवंतराज मुथा , पूर्व अध्यक्ष पप्पु कुमार घोड़ेला, शाखा अध्यक्ष पंकज राठौड़, वरिष्ठ नारायण लाल चावड़ा, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र पोकरणा, नेत्रदान संयोजक कैलाश वैष्णव, संजय गुप्ता, सिकंदराबाद पर्ल शाखा निवर्तमान अध्यक्ष रक्षा जैन, शाखा अध्यक्ष शीतल जैन, कोषाध्यक्ष दिव्या घोडेला, सहमंत्री सुनीता डूंगरवाल ,पुनम बोहरा, कविता मांडन ,मंजू घोडेला, आदि सम्मिलित रहे।

परियोजना के बावजूद ग्रामीणों को नहीं मिल रहा पानी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : धूप वाले दिन शुरू हुए बिना ही कई स्थानों पर जल संकट गंभीर हो गया है। बस्ती के कई वर्ष बीत जाने के बाद भी पानी की समस्या का समाधान नहीं हो सका है। रेत के कुएं की आस में गांव के लोग। ऐसी तस्वीर बरगढ़ जिले के झारबांध ब्लॉक अंतर्गत पुटका गांव में देखने को मिली है।

झारबंद ब्लॉक के जगदलपुर पंचायत के पुटका गांव में करीब 100 परिवार रहते हैं। लोग रोज़ रेतीले सुखी तट पर खुदाई करके पानी ले रहे हैं। मिट्टी के कुएं या रेत कुआं पर निर्भर हैं जो गांव से 2 किमी दूर है। आए दिन उनका दुख कोई नहीं समझता और उन्हें पानी के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

पंचायत द्वारा घटना की जानकारी जिला कलक्टर को दिए जाने के बाद भी स्थिति जैसे की तैसे है। सरकार की बसुधा योजना के तहत टंकी बनाने में सरकार ने लाखों रुपये खर्च किये हैं, लेकिन उक्त योजना से ग्रामीणों को पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है. यह परियोजना तीन साल से रुकी हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि टंकी खाली दिखाने के लिए बनाई गई थी। सरकार की कोई भी योजना उनके लिए काम नहीं कर रही है. यह स्थिति अनादि काल से देखी जा रही है । इसलिए विभाग के लिए इस पर गौर करना नितांत आवश्यक है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि जल्द से जल्द स्थाई समाधान किया नहीं गया तो जोरदार आंदोलन किया जाएगा। देखना यह है कि सरकार ग्रामीणों की पीड़ा को कब समझेगी

जनता और पशु धन की जान को खतरा, शिकायतों के बाद भी कार्यवाही नहीं

थाना बिनावर क्षेत्र के नरखेड़ा रोड पर खेतों में करंट वाले तार लगे हुए थे जिसकी सूचना पशु प्रेमी विकेन्द्र शर्मा ने एक्स हैंडल के माध्यम से बदायू पुलिस को दी थी, बदायूं पुलिस ने जवाब में लिखा कि तार हटवा दिए गए हैं जबकि पशु प्रेमी ने पुनः चेक किया तो तार टुवेल से लगे पाए गए, पशु प्रेमी ने एक्स हैंडल पर झूठी जानकारी देकर उच्च अधिकारियों और शिकायत कर्ता को गुमराह करने के लिए थाना पुलिस के विरुद्ध शिकायती पत्र वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को भेजकर कार्यवाही की मांग की। पशु प्रेमी ने बताया कि ये करंट वाले तारों से आये दिन हादसे हो रहे हैं, जनपद में कई जगह बच्चे, बूढ़े और जवान इंसानो के साथ साथ गौवंश भी चिपक के मर चुके हैं। उसके बावजूद भी इन तारों पर रोक नहीं लगाई जा रही।

वक्फ विधेयक केलिए बिजेड़ी दो फाड़ , देबाशीष का विरोध, पांडियन के समर्थन में 3 सांसद सामने आए

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : सस्मित पात्रा द्वारा वक्फ विधेयक के पक्ष में मतदान करने के बाद से राजनीति जोरों पर है। कुछ लोग जहां कह रहे हैं कि इसके पीछे पांडियन का हाथ हो सकता है, वहीं नवीन के आवास पर पांडियन विरोधी नारे भी लगे। बीजद के वरिष्ठ नेता देबाशीष सामंत्रे, बद्री पात्रा, गणेश्वर बेहरा, भूपिंदर सिंह, प्रफुल्ल घड़ेई आदि ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पांडियन पर उंगली उठाई है ।इसके साथ ही उन्होंने खुलासा किया कि पार्टी कौन चला रहा है और नवीन को आगे आने को कहा।

नवीन के आवास पर मुना के समर्थकों ने पांडियन वापस जाओ और पांडियन हटाओ, बीजद सुवाहन जैसे नारे लगाए। इस बीच, तीन सांसद पांडियन के समर्थन में सामने आये हैं। सांसद निरंजन त्रिकाया, मानस मंगराज और सुलता देव पांडियन की वकालत की। सांसद तारिका ने लिखा कि पांडियन को अनुचित रूप से बदनाम किया जा रहा है। मैं देबाशीष सामंतराय द्वारा की गई टिप्पणियों की निंदा करता हूं। दूसरी ओर, सुलता देव ने कहा कि देवाशीष सामंतराय का पाण्डियन से द्वेष था। नवीन ने उनसे आवास पर अप्रिय स्थिति पैदा करने से बचने को कहा है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले देबाशीष सामंत्रया ने भीके पांडियन का नाम लिए बिना उन पर इशारा किया था। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्य सलाहकार राजनीति में न होते हुए भी राजनीति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023